akfunworld present...
पॉकेट बुक्स
29
आखरी गोली
Scanned and Preserved by-
Bijay Kumar Agrawal
[From Nepal]
Edited and Uploaded by-
akfunworld
अकरम इलाहाबादी
www.akfunworld.wordpress.com

प्रकाशक :
वीनस प्रकाशन
एफ-५६ गफ्फार मार्कीट,
करोलबाग, नई दिल्ली-५

मूल्य :
दो रुपये

मुद्रक :
यादव प्रिंटिंग प्रेस,
बाजार सीताराम, दिल्ली-६

AKHIRI GOLI : NOVEL
Rs. 2/- : AKRAM ALLAHABADI

इन्टरव्यू

'आपका परिचय।'

'जी, मैं अवश्य शरीफ खानदान की हूँ।'

'ऐ लो···यानि सवाले गंदम जबाबे चना–'मैं आपका खान-दान पूछ रहा हूँ, या नाम।'

'जी, मैं समझी नहीं थी।'

'हो. के.–हो. के. (ओ. के.)–वहाट यूअर नेम।'

'कोकिला जसवंत देसाई।'

'ऐ लो···अब कोका कोला भी नाम होने लगे।' शौकत बड़बड़ाया।

वह इस समय अपने आफिस में स्टैनों की पोस्ट के लिए उम्मीदवार लड़कियों का इन्टरव्यू ले रहा था।

पिछली स्टैनों जो काफी कबूल सूरत थी इसकी फर्म के एक नौजवान इन्जीनियर के साथ भाग गई थी। इसलिए इसे नई स्टैनों के लिए विज्ञापन देना पड़ा था और यह विज्ञापन अगरचे इसने सार्जेण्ट बाले के मशविरे से दिया था, लेकिन इन्टरव्यू की तारीख इसने बाले को नहीं बताई थी। वरना वह उपस्थित होता तो लड़कियां इन्टरव्यू की बजाय उसमें दिलचस्पी लेने लगतीं या वह स्वयं कुछ रंग में भंग कर देता।

दोस्ती अपनी जगह है,लेकिन इन मामलात में तो शौकत उसे अपना शत्रु ही समझता था। इसकी फर्म निर्माण विभाग की ठेकेदारी की सबसे बड़ी फर्म थी और दफ्तर में और भी स्टैनों मौजूद थीं, लेकिन यह इन्टरव्यू इसकी अपनी खास स्टैनों के लिए था। जिसे इसकी सेक्रेटरी का भी काम करना पड़ता।

विज्ञापन में इसने कुछ शर्तें स्पष्ट करा दी थीं। उदाहरण–

(१) उम्मीदवार का लड़की होना जरूरी है–आयु बीस के अन्दर।

(२) लड़की का अविवाहित होना जरूरी है।

(३) कबूल सूरत और सेहत मंद होना जरूरी है। कद में छोटी न हो, और लम्बी भी न हो।

(४) शिक्षित होना जरूरी है, डिग्री की कैद नहीं;

(५) शार्टहैंड और टाईपिंग का तजुर्बा होना जरूरी है।

(६) इसे 'वक्तन फोक्तन' बास के सेक्रेटरी का भी काम करना पड़ेगा।

(७) इसे कभी बास के साथ सफर पर भी जाना पड़ेगा। (सफर का अलौंस अलग मिलेगा।)

(८) बास को गुस्सा आ जाये तो जब्त करना पड़ेगा। अलौंस अलग मिलेगा।)

(९) शादी करने का इरादा हो तो साल भर पहले नोटिस देना पड़ेगा।

(१०) जुमला हकूक कम्पनी के पास सुरक्षित रहेंगे। तनख्वाह ५०० रुपये तक (सूखे) ज्यादा खूबसूरती का अलौंस अलग।

और इस विचित्र विज्ञापन पर भी उम्मीदवार लड़कियों की संख्या दो दर्जन से कम नहीं थी। शायद इसलिए की तनख्वाह माकूल थी। अभी तक वह पांच लड़कियों का इन्टरव्यू ले चुका था। मगर कोई जची न थी। कोकिला भी धान पान लड़की थी। यद्यपि रंग साफ और नाक नक्शा पुरकशिश था।

'अच्छा तो मिस कोका कोला।' शौकत फिर उसकी तरफ सम्बोधित हुआ।

'कोकिला जसवन्त देसाई सर!' उसने अदब से याद दिलाया।

'भोत लम्बा नाम है, खैर कोई बात नई, तो यानी आप कां तक पड़ी हुई हैं?'

मैं समझी नहीं?' उसने पलकें झपका कर मासूमियत से पूछा।

'ए लो! अब बिल्कुल ही ना समझ हैं आप तो नौकरी कैसे करेंगी।' शौकत का मूड बिगड़ गया।

'आप क्या मेरी क्वाली फिकेशन (Qualification) पूछ रहे हैं?'

'और नई तो क्या पूछ रया हूँ।'

'मैं ग्रेज्यूएट हूँ सर!'

'काये की? यानी आर्ट में या सैंस में?'

'आर्ट की।'

'भोत अच्छी बात है! अच्छा उमर कितनी है आपकी?'

'बीस साल!'

'अल्ला का शुकर है ! शादी मादी तो नईं हुई ?'

'जी अभी तो नहीं ?' उसने शर्मा कर सिर झुका लिया ।

'कईं काम किया है आपने पैले ?'

'जी, सिर्फ ट्रेनिंग ली है ।'

'माँ बाप वगैरा हैं कुछ ।'

'जी, चाचा जी हैं ।'

'अल्ला और देगा, अच्छा आप भार तशरीफ रखिये ! मैं फिर बुलाऊंगा ।'

शौकत ने इसके नाम के सामने टिक मार्क करते हुए कहा—वह शशोपंज की अवस्था में उठकर बाहर चली गई ।

'मुन्शी जी, मैनेजर साहिब !'

शौकत ने डैक्टा फोन पर अपने खसूसी मैनेजर को जो कभी कई वर्ष पहले सिर्फ मुन्शी जी हुआ करते थे और जिनकी दयानत दारी और मेहनत के मेशेनजर शौकत ने अपने पर्सनल मैनेजर की पोस्ट दे रखी थी, सम्बोधित किया ।

'जी हजूर !' मुन्शी जी की बूढ़ी आवाज सुनाई दी ।

'नम्बर सात को अन्दर भेजिये ।'

'जी आ गया सरकार !' मुन्शी जी स्वभाव अनुसार नम्रता साथ उत्तर दिया ।

चुनांचे दरवाजा खोलकर नम्बर सात अन्दर आ पहुँची—कताला आलम ही नजर आ रही थी—पतले पतले होठों पर जमी हुई लाली ऐसी नजर आ रही थी जैसे अभी किसी का कलेजा चबा कर आ रही हो—बड़ी-बड़ी घनेरी पलकों वाली कंवल कटोरे जैसी आंखें सुतवां नाक—गोल चेहरा—नाक को छोड़कर बाकी चौखटे से शौकत को हेमा मालिनी याद आ गई ।

जिसामत भी बड़ी मौजूं और पुरकशिश थी—इसने सुर्ख साड़ी पहन रखी थी । जिसमें खुद भी शोले की तरह भड़क रही थी ।

'गुड आफ्टर नून सर !' इसने करीब आकर कहा—

'वैरी गुड—वैरी गुड—तशरीफ रखिये ।'

वह सामने वाली कुर्सी पर बैठ गई—शौकत एक क्षण इसकी खूबसूरती का जायजा लेता रहा । मगर फिर चौंक कर सम्भल गया ।

सूची में इसका नाम पुष्पा सहगल था ।

'तो आप सहगल साहिब की लड़की हैं ?'

'जी—जी हां—बिलकुल ।' उसने चौंक कर उत्तर दिया ।

'वई जो बुलबले हिन्द थे—यानी पले बैक सिंगर !' शौकत ने प्रश्न किया ।

'क्षमा कीजियेगा ? मेरे पिताजी का नाम रामनाथ सहगल है । वह तो सरकारी कर्मचारी हैं ।' लड़की ने बताया ।

'अच्छा, तो मैं वह सहगल समझा था । खैर भोत खुशी की बात है ।'

'कौन सी बात ?' लड़की ने प्रश्न किया । वह जरा निडर और बेझिझक किस्म की लड़की नजर आई थी ।

'नईं यानी—ये कि आपके पिता जी हैं वगैरा ।'

'जी, मैं एम० ए० पास हूँ । साल भर एक कम्पनी में स्टैनोग्राफर रह चुकी हूँ । मेरी स्पीड बहुत तेज है और मेरी उमर १९ वर्ष, ग्यारह महीने और १७ दिन है । मैं सेक्रेट्री का भी काम कर सकती हूँ और कम्पनी के काम से सफर पर भी जा सकती हूँ ।' वह एक ही सांस में कहती चली गई ।

'ऐ लो—आप सब तो बोल गईं, अब मैं इन्टरव्यू क्या लूंगा । पत्थर ।' शौकत का मूड बिगड़ गया ।

'जी मैंने सोचा ! मैं खुद ही सब कुछ बता दूं ।'

'मगर आपकी उमर २२, २५ साल से कम नहीं ।' शौकत ने इसे गौर से देखते हुए एतराज किया ।

'नान सैंस-आप क्यों जलते हैं मुझ पर-जो मेरी उमर ज्यादा बता रहे हैं । मुझे नहीं करनी आपकी नौकरी-वह तो स्कूल में गलत उमर लिख गई थी मेरी-वरना मैं अभी पूरे अठारह वर्ष की नहीं हूँ ।'

लड़की स्वयं ही उम्र के प्रश्न पर भड़क कर उठ खड़ी हुई और इससे पहले शौकत इसे रोकने की कोशिश करे । वह बाहर जा चुकी थी ।

'ये हुई कोछ !' शौकत मुंह ही मुंह में बड़बड़ाया-फिर डैक्टा फोन पर झुक कर बोला । 'मुन्शी जी मैनेजर साहिब !'

'हजूर !'

'आठ नम्बर भेजिये अन्दर ।'

'जहां पनाह को आदाब बजा लाती हूँ । दरवाजे की तरफ से आवाज आई और शौकत उछल पड़ा । वहां सार्जेण्ट बाले खड़ा हुआ था ।

'ऐ लो-तोम कां से आन मरे मियां खां !'

'क्यों ? मुझसे छुपा कर के इन्टरव्यू लिया जा रहा है लड़कियों का ।' बाले ने उसकी तरफ बढ़ते हुए कहा ।

'हां, जाओ-किया जा रया है । मेरी कम्पनी का मामला है । कोछ साझे दारी नई है तुम्हारी ।'

'अमां, हमारी बिल्ली-हम ही से म्माऊं ।'

'तुम खुद होंगे बिल्ली साले-अपन काये को ।'

'कोई चुनाव हुआ भी अभी कि नहीं ।'

'काये को बताऊं ।'

'न बताओ ? मैं बाहर निकल कर लड़कियों से कह देता हूँ कि यह सब फराड है । तुम लोग अपने घरों को वापिस जावो ।'

'ऐ लो-आ गए साले रंग में भंग करने किसने बुलाया था तुम्हें ।'

'मैं तो तुम्हारी मिजाज पुरसी को आ निकला था । कई दिन से मुलाकात नहीं हुई । सोचा मिलता चलूं । मुझे क्या मालूम था कि तुम यहां राजा इन्द्र बने बैठे हो ।'

'नईं तो क्या करते ।' शौकत ने पूछा ।

'तुम्हारी परियों को ले उड़ता ।'

'अबे जाओ-ये मुंह और मसूर की दाल-हो हुं । भोत गुलफाम बनते हैं साले ।'

'अच्छा-अच्छा, तुम अपना काम जारी रखो । मैं भी इन्टरव्यू बोर्ड का मैम्बर बन जाता हूँ ।' बाले भी वहीं जम गया ।

'अरे वाह-यानी मान न मान मैं तेरा मेहमान ।'

'यार अजीब चुगद हो-क्या मैं जेब में रख लूंगा तुम्हारी उमीदवारों को ।' बाले झुंझला गया ।

'अच्छी बात है । मगर कोई हरामीपन किया तो अच्छा नहीं होगा ।'

'मैं शरीफ आदमी हूँ ।' बाले ने मुंह बना कर कहा ।

'हां, भोत-दुनिया भर की शराफत तुम्हारे ही ऊपर तो उतरी है ।' इतने में डैक्टा फोन से आवाज आई ।

'मियां-नम्बर आठ को भेज दूं अन्दर ?' मैनेजर साहिब पूछ रहे थे ।

'अपने बाप को तो भेज दिया अन्दर, अब पूछ रये हो ।' शौकत उस पर बिगड़ गया ।

'हजूर मैं कैसे रोक सकता था उन्हें ।'

'अच्छा भेजो अपनी नम्बर आठ ।'

और नम्बर आठ अब अन्दर दाखिल हुई ।

वह सुडौल शरीर की गौरी रंगत वाली कोई जवान लड़की थी । जिस तरह शरीर गदराया हुआ था, उसी तरह चेहरा भी हसीन था । वह पहली ही नजर में शौकत को अच्छी लगी । उसने तंग मोरी की सफेद सलवार पर जर्द जम्पर पहन रखा था । दोपट्टा धानी था । उसने जुबान खोले बगैर अदब से इसे सलाम किया औए कुछ पूछे बगैर सामने वाली कुरसी पर बैठ गई । बाले इसकी शकल गौर से देख रहा था । इस पर मासूमियत प्रकट थी । शौकत उसे घूरते देख कर जल गया ।

'लो–अब तुम्हीं इन्टरव्यू ले लो साले !' उसने फाइल बाले के सामने खिसका दी ।

'नहीं बास ! इन्टरव्यू तो तुम ही लोगे । मैं तो सिर्फ सहायता करूंगा ।' बाले ने इसे चमकारा ।

'अच्छी बात है । क्या नाम है आपका ।'

'सुनहरी बेगम !' वह धीरे से बोली ।

'क्या ?' शौकत चौंका ।

'सुनहरी बेगम ।'

'ऐ लो । अब सुनहरी रोबहली बेगम भी नाम होने लगा ।'

'बीसवीं सदी में सब कुछ होता है, डियर, आगे चलो ।' बाले ने उसे ठोंका दिया ।

'उमर क्या है आपकी ?'

'१९ वर्ष ।'

'कां रैती हैं आप ?'

'बोरीवली ।'

'१९ वर्ष पूरे हुए हैं ।'

'जी होने वाले हैं ।'

'तालीम मालीम कां तक है ?

'एस० एस० सी० पास किया है ।'

'ए–लो–एफे-वैफे भी नई हैं बिचारी ।' शौकत ने बेबसी से बाले की तरफ देखा–

'काम का तजुर्बा तो होगा ?'

'जी, टाईपिंग जानती हूँ ।' लड़की ने बताया–

'मगर मुझ स्टैनो की जरूरत है ।'

'मैं सब सीख लूंगी, मुझे एक अवसर दीजिये ।'

'अच्छी बात है, आप पैले सीख लीजिये । फिर आईये, मैं अवसर जरूर दूंगा ।'

'देखिये, मैं बहुत परेशान हूँ ?'

'अल्ला आपकी परेशानी दूर करे ।'

और वह बेचारी भी उठ कर चली गई ।

'क्या इसी तरह इन्टरव्यू लिया जाता है ।' बाले ने प्रश्न किया ।

'हां, लिया जाता है, मेरा जिस तरह जी चाहेगा लूंगा ।' शौकत ने जिद की–

'मेरा क्या है, लो, स्वयं ही किसी दिन जूते खाओगे ।'

'अबे जाओ मर गये मारने वाले ?'

'अच्छा बुलाओ नवें को, मेरा ख्याल है ये तो तुम्हें पूरी उतरेगी ।'

'मैनेजर साहिब, नम्बर ९ को अन्दर भेज दो ।'

बेहतर है ।' मैनेजर का उत्तर सुनाई दिया ।

और फिर दरवाजा खुला और इस बार जो लड़की अन्दर

दाखिल हुई, वह पिछली लड़कियों से भी कहीं ज्यादा खूब सूरत और पीकर शवाब थी, बड़े तीखे नकूश, खिली हुई रंगत, और चुस्त पाजामे और कमीज में अंगड़ाइयां लेता हुआ भरपूर शरीर इसे तो देखते ही शौकत के मुंह में पानी आ गया। बाले भी इससे प्रभावित हुए बगैर न रहा।

'क्या-क्या चौखटे बनाये हैं बनाने वाले ने।' वह बड़बड़ाये बगैर न रहा।

'मियां खां, चुप बैठो तुम।' शौकत ने उसका पैर दबा दिया।

'आईये-आईये ?' शौकत ने स्वयं इसका स्वागत किया।

'आदाब-अर्ज करती हूं।'

'काये का आदाब-मादाब, तशरीफ रखिए।' शौकत ने उसे कुर्सी पर बैठने का इशारा किया, और स्वयं खोये हुए अन्दाज में उसे देखने लगा।

'मेरा नाम जोहरा है।' वह स्वयं ही सम्बोधित हो गई।

'जी ?' शौकत चौंका—'जी हां, काये को नई-मुशन्नी जोहरा, यानी, मौत अच्छा नाम है।'

'आपने किस लिये बुलाया है मुझे।' उसने स्वयं ही प्रश्न किया।

'ओ' हां'''यानी स्टैनो के लिए, मेरा मतलब है इन्ट्रव्यू के लिए।' शौकत ने जल्दी से उत्तर दिया, बाले उसे दिलचस्प नजरों से देख रहा था।

'आपकी फर्म का क्या नाम है ?

'सोइयपर कन्सट्रकशन, नई यानी, सोपर कन्सट्रकशन कम्पनी।' शौकत ने बौखला कर कहा, बाले के लिये हंसी रोकना मुश्किल हो गया। इसलिए उसने रुख दूसरी तरफ कर लिया। यह लड़की जरूर कोई सवा सेर है।'

'इसके मालिक आप हैं, या ये साहब ?' उसका इशारा बाले की तरफ था।

'ये काये को, मैं हूं ?' शौकत ने जल्दी से कहा—

'आपका परिचय।' उसने शौकत से पूछा।

'मेरा नाम शौकत मियां खां जागीरदार है।' शौकत ने उत्तर दिया।

'ओह, तो आप ठेकेदार के अतिरिक्त जागीरदार भी हैं ?'

'जी-आं जी आं।'

'आप की कम्पनी क्या-क्या काम करती है ?'

ऐ लो, ये भी कोई पूछने की बात है। बिल्डिंग कारखाने नहरें बांध बनाती है और क्या ?'

'हूं, तो आप बड़े ठेकेदार हैं।' वह जैसे सोच में पड़ गई।

'बहुत बड़े ठेकेदार हैं।' बाले बोल उठा।

'आप चुप रहिए, मेरे बास ये हैं।' लड़की ने मुंह बना कर उसे डांट दिया और सचमुच एक अजीब अदा पर बाले सटपटा गया। मगर शौकत इसकी इस डांट पर खुश हो गया, वास्तव में इसलिए भी कि उसने इसे बास कहा था।

'तो आप तनख्वाह मुझे क्या देंगे ?'

'पप'' पांच सौ रु०।'

'नकद ?'

'लो और सुनो, तो क्या ये उधार कम्पनी हैं। शौकत ने चौंक कर कहा।

'वह दूसरे अलाऊंस कितने हैं उदाहरण खूबसूरती का अलाऊंस, बास के गुस्से का अलाऊंस बाहर के सफर का अलाऊंस वगैरह, वगैरह।'

'वह तो-वह तो।' शौकत से जवाब न बन पड़ा।

'खैर, वह मैं बाद में तय कर लूंगी-हां तो मुझे काम क्या करना होगा।' लड़की ने पूछा।

'वई, यानी मेरी स्टेनों का काम।'

'और मेरी सेक्रेटरी का काम।'

'स्टैनों तो आपके यहां और भी हैं।'

'और।' उसने चुभता हुआ प्रश्न किया।

'और, और, यानी बस यही दफ्तर मफतर की देख भाल।'

शौकत से कुछ जवाब न बन पड़ा।

'ये तुम्हारा इन्टरव्यू ले रही हैं शौकत भाई।' बाले से न रहा गया।

'जनाब आप दखल मत दीजिये, ये मेरी नौकरी का मामला है।' लड़की ने फिर उसे डांट दिया।

लेकिन बाले के कहने पर शौकत को एहसास हुआ कि वह स्वयं उसका इन्टरव्यू ले रही है-फिर भी वह इससे इस कदर प्रभावित हो चुका था कि उसका मूड बिगड़ने पर तैयार न हुआ।

'आप मुझसे इश्क वगैरह तो नहीं करेंगे।' लड़की ने अजीब-सा प्रश्न इस पर खींच मारा-वाक्य कुछ उस अंदाज से कहा गया था कि बाले को मुंह पर हाथ रख कर अपनी हंसी रोकना पड़ी, शौकत की विचित्र अवस्था थी।

'जी-मैं कोई, यानि मेरा मतलब है ये दफ्तर, यानि।' कंपनी।' शौकत के कण्ठ में ही शब्द अटकने लगे।

'खैर कोई बात नहीं-आप मुझे शरीफ आदमी हो मालूम होते हैं।' जोहरा ने खुद ही राय धारण कर ली।

'तो फिर।' शौकत ने अटकते हुये पूछा।

'तो फिर मुझे आपकी नौकरी मंजूर।' यह कहकर वह उठ खड़ी हुई।

'मगर, मगर, जरा सुनिये तो।' शौकत ने कहना चाहा।

'पहले मैं इन लड़कियों को छुट्टी दे दूं।' ये कहती हुई वह बाहर निकल गई और शौकत किसी पागल की तरह दर-वाजे की तरफ देखता ही रह गया। इसका ध्यान उस समय टूटा जब बाले का न रुकने वाला कहकहा इसके कानों से टक-राया।

'ऐ लो-हंसने की क्या बात है।'

'शौकत भाई जवाब नहीं इस लड़की का, तुम्हें सचमुच बेह-तरीन सेक्रेटरी मिली है।' बाले ने हंसी पर काबू पाकर कहा।

उत्तर में शौकत ने डैक्टा फोन पर मैनेजर को हिदायत कर दी कि बाकी लड़कियों को यात्रा भत्ता देकर विदा कर दिया जाये, मगर जब मैनेजर ने बताया कि जोहरा उससे पहले ही हिदायत दे चुकी है तो वह सिर पकड़ कर बैठ गया।

'शौकत भाई, यह लड़की पूरी पड़ेगी तुमको।' उसने खड़े होते हुए कहा।

'है तो साली एकदम पटाखा।' शौकत भी प्रशंसा किये बिना न रहा।

'खैर-मैं आफिस चलता हूँ, चलो अच्छा हुआ, इसने स्वयं अपनी नियुक्ति करा ली-वरना तुम तो फैसला भी न कर पाते कि किस को खाऊं, किसको न खाऊं।' बाले ने चलते हुए कहा।

'मैं तो भोत खुश हूँ, इसने तुम्हारी भी दाल गलने नहीं दी।' शौकत ने इस पर व्यंग कसा।

'देखा जायेगा।'

'क्या पत्थर देखोगे-मैं इसे ले के भार जा रया हूँ, तुम टापा करो।'

'क्या मतलब ?'

'मैंने ३५ लाख का ठेका लिया है वह मेरे साथ जायेगी।'

'मैं भी चलूं।'

'मुंह धो रखो भियां खां-मैं इत्ता बेवकूफ नई हूँ।'

'अच्छी बात है, तुम खुद हाथ जोड़ोगे मेरे।'

'होश्त।'

'लिख कर रख लो।'

'अबे जाओ-मैं तो तुमारा साया भी नई पड़ने दूंगा।'

'चैलेंज।'

चैलेंज।'

ओ० के०, टाटा।' बाले हाथ हिलाता हुआ बाहर निकल गया और शौकत मुंह बनाकर रह गया।

हम सफ़र

शौकत इस समय काशी एक्सप्रैस के एक फर्स्ट क्लास कंपार्टमैंट में सफर कर रहा था। उसके साथ उसकी स्टैनो जोहरा भी थी। कम्पार्टमैंट में यूं तो दो दूसरे यात्री भी थे। लेकिन शौकत अपने लिए उनकी उपस्थिति अनुपस्थिति बराबर समझते हुए कम्पार्टमैंट को अपना दफ्तर बनाये हुये था। इसने स्टैनो को सामने बिठा रखा था और उसके साथ ३५ लाख के इस ठेके के सम्बन्ध में बहस कर रहा था। जो सूबे की नई राजधानी

चम्बल गढ़ में सरकारी इमारतों के बनाने के लिये पिछले सप्ताह ही इसे मिला था। और वह इसके लिये अग्रिम राशि भरने चम्बल गढ़ जा रहा था। ऐसे अवसर पर शान के लिये इसने अपनी स्टैनो जोहरा को भी साथ ले लिया था। दूसरे सहयात्रियों में एक कोई गुजराती था और दूसरा कोई मद्रासी जो अनंया स्वामी आईंगर से मिलने के लिए देहली जा रहा था शौकत स्टैनो से ३५ लाख के ठेके के बारे में वार्ता करते हुए कभी कभी इन लोगों की तरफ भी देख लेता। लेकिन न तो उन्हें इसके ३५ लाख की परवाह थी न स्वयं इसकी, वह अलबत्ता कभी कनखी नजरों से जोहरा को देखने लगते और शौकत की खोपड़ी बहकने लगती। आखिर जब एक बार इससे न रहा गया तो वह उस मद्रासी पर बिगड़ ही पड़ा। जो पास वाली बर्थ पर बैठा था। कभी गुजराती से बातें करने लगता और कभी जोहरा के चेहरे को तकने लगता।

'क्या माँ मैन नई है कोई तुम्हारी-' इसने मद्रासी को टोक दिया।

क्या बोले जी आप ?' मद्रासी ने एक कान पर हाथ रख कर ऊंची आवाज से पूछा, शायद वह बहरा था।

'मैंने कहा, कोई मां मैन भी है तुम्हारी, या इकन्डे हो साले।'

'मसाले ?' मद्रासी ने दोहराया। 'नई जी अपना तो घी का धन्धा होता सूं।'

'आह हो।' शौकत मुठ्ठियां भींचने लगा। 'आप बैरे भी हैं इत्तफाक से।' वह बड़बड़ाया।

'आप कोर जाते जी।' मद्रासी ने वार्ता छेड़ते हुए इससे सम्बन्ध बढ़ाने की कोशिश की।

'जहन्नुम में ।' शौकत लगभग चीख पड़ा ।

'जहन्नुम बोले सो ।' मद्रासी ने और उसकी तरफ झुककर स्पष्टता चाही ।

'तुम्हारा सर ।'

'हां जी–अमृतसर, अमृतसर बोले तो पंजाब क्यों न जी ।'

'हाँ जी ।' शौकत ठंडी सांस भर कर बोला–

'ये आपकी लड़की होती सूं ?' मद्रासी के इस प्रश्न पर जो उसने जोहरा की तरफ देखकर किया था शौकत की खोपड़ी घूम गई–

'साले वह हाथ दूंगा कि चरखैल बन जाओगे ।' वह उस पर बिगड़ पड़ा ।

'अरे तो नाराज काये को होते जी–लड़की नई होती तो वाईफ होगी ।' मद्रासी ने इसके क्रोध का असर लिये बगैर कहा और न जाने क्यों इस मीठे से वाक्य पर शौकत का पारा नार्मल पर आ गया ।

'साले बैरे हैं तो बैरे ।'

'आं ऊघूं सुन्तो छे–सेठजी ।' गुजराती ने अपनी समझ में बात करने की कोशिश की ।

'अपन भी कुछ नीचे नई सुनते हैं ।' शौकत ने विपक्ष में उत्तर दिया ।

'मैं तो दिल्ली जाता जी–अनन्था स्वामी आईंगर को मिलने को, आप अमृतसर काम करते जी ।' मद्रासी ने इससे पूछा ।

'नई हजामत की दुकान करता हूं ।' शौकत ने झुंझलाकर उत्तर दिया ।

'दोकान करते काये की ।'

[illegible] को–साले पीछे ही पड़ गये ।' शौकत बड़बड़ाया और जोहरा मुंह दबाकर हंसने लगी, मद्रासी ने देखा कि उसकी बातों का उचित उत्तर नहीं मिल रहा है, तो वह शौकत को छोड़कर फिर गुजराती से बातें करने लगा और शौकत की बातें भूलकर इनकी बहस सुनने लगा । वह अब किसी राज-नीतिक मसले पर उभल पड़े थे, शौकत ने जब देखा कि इनकी बहस समाप्त ही नहीं होगी तो इसने मद्रासी को फिर अपनी तरफ आकर्षित कर लिया ।

'आप का नाम क्या है मिस्टर ।' शौकत ने मद्रासी से पूछा ।

'अपना नाम कुलाया स्वामी आयर होता जी, और आपका ?'

'अपना शौकत मियां खां जागीरदार ।'

'जागीरदार बोले तो ।' मद्रासी ने स्पष्टीकरण चाहा ।

'जो मद्रास में सब कारे इ होते हैं अरे जागीरदार यानि के लैंड लार्ड ।'

'ऐसा बोलो न जी बिल्डिग बिल्डिग होंगी आप की ।'

'अल्ला का फजल है ।' शौकत ने सीना फुला कर कहा ।

'और आप का नाम ?' वह गुजराती से भी पूछ बैठा ।

'अपनो नाम सहरीदास किसन दास कापुड़िया है ।'

'पापड़िया ।' शौकत ने दोहराया और फिर बेअख्त्यार उसके कहकहे छूट गए ।

गुजराती हैरत से इसे देखने लगा । मद्रासी इन दोनों को 'आप हैं भी पापड़िया जैसे ।'

गुजराती शायद इस बात का बुरा मान गया इसलिए उत्तर देने की बजाये उसने अपना रुख खिड़की की तरफ कर लिया ।

'आपका धन्धा मन्दा क्या है ?' शौकत ने गुजराती को भूल कर मद्रासी से प्रश्न किया।

'अपना मद्रासन गवरनमेंटां स्कालर शिप दे के इन्जीनियर बनने को भेजता जी।'

'ऐसा !' शौकत ने गिरगिट की तरह सिर हिलाया और फिर जोहरा की तरफ देख कर हंसते हुए बोला–'लो और सुनो आपको गवर्नमेंट ने शिप दे के दिल्ली भेजा है। साले खुशकी में जहाज चलायेंगे।'

जोहरा इस वाक्य पर मुंह दबा कर हंस पड़ी लेकिन शौकत उसे अपने व्यंग का प्रभाव समझा और स्वयं कहकहा मारने लगा।

मद्रासी हैरत से इसकी शक्ल देख रहा था। और शौकत का वाक्य उसके पल्ले भी नहीं पड़ा था वरना शब्द साले पर जरूर विरोध करता।

'आप काये को हंसते जी ?' उसने मासूमियत से पूछा।

'हमारी मर्जी-हम हंसे कि रोयें। तुम क्या हर हिटलर हो।'

'ए यू यू तुम बटलर किस को बोले जी जरा जुबान सम्भालो नईं तो।' मद्रासी ने विरोध किया।

'नईं तो क्या ?' शौकत अकड़ गया।

'नईं तो, नईं तो तुम से बात नईं करूंगा जी।' मद्रासी घबरा कर बोला।

'आ हा हा हा।' शौकत ने बूढ़ी औरतों की तरह एक हाथ मटका कर कहा–बड़े माशूक हैं। बेचारे बात नईं करेंगे तो अपना जैसे दम निकल जायेगा। अबे जाओ नईं बात करो तो खुद के लिये। क्यों मिस जोहरा।'

'जी हां। देखिये न जाने क्या समझता है अपने आपको।' जोहरा ने हां में हां मिलाई।

'हुंह। साले चिड़ी के तीन।' यह कह कर शौकत ने मद्रासी की तरफ पीठ कर ली।

नागपुर से अगले स्टेशन पर ही इनके डिब्बे में कस्टम वाले घुस आए। इनमें एक कोई सब इन्सपेक्टर था और दो सिपाही। वे खाकी वर्दियां पहने हुए थे। इन्सपेक्टर ने यात्रियों की तरफ सम्बोधित होकर कहा।

'हमें खबर मिली है कि इस ट्रेन के किसी फर्स्ट क्लास कम्पार्टमेंट में गांजे की काफी संख्या अवैध तरीके पर ले जाई जा रही है। आप लोगों के सामान की तलाशी ली जायेगी।'

'यह मद्रासी ही नाजायज मालोम होता है। इसकी तलाशी लो।' शौकत से न रहा गया।

'आप खोद नाजायद !' मद्रासी को भी क्रोध आ गया। 'मैं डिफेमेशन केस करूंगा जीं आप पर।'

'कौन तुम किस पै ?' शौकत को फिर इस पर क्रोध आने लगा।

'आप लोग आपस में न लड़िए। हम सबके सामान की तलाशी लेंगे।' कस्टम इन्सपेक्टर ने इन्हें समझाया। और फिर वहां बारी बारी इनके सूट केस और बिस्तरों वगैरह की तलाशी लेने लगा। किसी ने कोई एतराज न किया क्योंकि कानून का पालन करना हर नागरिक का कर्त्तव्य था। मगर जब इन्सपेक्टर ने शौकत के छोटे सूटकेस की चाबी शौकत से मांगी तो वह बिगड़ गया।

'नई मिलेगी। इसमें मेरा खास सामान है।' शौकत ने इन्कार कर दिया।

'तब तो हम जरूर देखेंगे इसे, आप हमें शुबा दिला रहे हैं।'

'जाओ, जाओ। मियां खां भौत देखे हैं तुम जैसे।' शौकत को ताव आ गया।

'कानून से टकराना अच्छी चीज नहीं है बास। देख लेने दीजिए न, ये तो सरकारी आदमी हैं।'

'तो अलग ले जाकर दिखा दीजिए।'

'ओ''' अच्छा, चलो दरोगाजी।' शौकत ने सूटकेस हाथ में ले लिया और बाथरूम में दाखिल हो गया। कस्टम इन्स्पेक्टर भी इसके साथ बाथरूम में चला गया। शौकत ने छोटा सूटकेस जैसे ही खोलकर दिखाया वह चौंक पड़ा। इसमें नोटों की गड्डियां भरी हुई थीं। फिर शौकत ने उसे अपने ठेके के कागजात दिखाकर यह बताया कि ये तीन लाख वह अग्रिम राशि के तौर पर भरने के लिए चम्बल गढ़ जा रहा है। कागजात देख कर कस्टम इन्स्पेक्टर ने उसे सूटकेस की चाबी वापिस कर दी और कागजात भी।

'क्षमा कीजिए, हम कानून से विवश थे, वरना आपको परेशान न करते।' इन्स्पेक्टर नर्म और मधुर स्वर में बोला और फिर बाहर निकल आया। वे लोग अगले स्टेशन पर कम्पार्टमेंट से निकल गए और शौकत फिर जोहरा से बातें करने लगा।

शौकत का तार

एक्सप्रेस तार का विषय ही कुछ ऐसा था कि बाले को इसके ध्यान देने योग्य लेख के बावजूद हंसी आ गई। लिखा था।

'मैं लुट गया, आओ, आओ'' बेड़ा गर्क'''हाय'''हाय जल्दी पहुँचो, हाय हाय, देर न करना, हाय हाय, संगम होटल हाय हाय'''फकत शौकत मियाँ खां उल्लू के पट्ठे।'

'क्या बात है?' खान ने अखबार से नजरें हटा कर इसे हंसते हुए देख कर पूछा।

'खुद मुलाहजा फरमाइये।' बाले ने तार उसकी तरफ बढ़ा दिया और खान भी इसे पढ़कर मुस्कराने लगा।

'सचमुच अजीब तार है।' वह बोला।

'उसने अपनी स्टैनों को इसी तरह डिक्टेट कर दिया होगा।'

'मामला क्या है यह?'

'चम्बलगढ़ में उसे सरकारी इमारतों के निर्माण का पैंतीस लाख का ठेका मिला है। वह शायद उसी के लिए अग्रिम राशि भरने गया था यहां से।'

'तो बैंक से क्यों नहीं भेज दी रकम।' खान ने बहस की।

'गधे के सिर पर सींग नहीं हुआ करते।' बाले ने उत्तर दिया।

'और तुम्हारे सिर पर भी तो नहीं है।' खान मुस्कराया।

'ऐं'''हां'''। कहां है?' बाले अपनी खोपड़ी टटोलने लगा।

'मगर आपके तो होंगे।' वह खान पर भी फिकरा चुस्त कर गया।

'हमारी बिल्ली हमीं से म्याऊं।' खान ने उसकी गर्दन दबोच ली।

'देखिये, आप अनुचित परीक्षण फरमा रहे हैं। मैं विरोध''' गला दबने से आवाज भी दब गई।

लेकिन किसी के कदमों की ग्राहट सुनकर खान ने उसकी गर्दन छोड़ दी। वह इन्स्पेक्टर डिसूजा का ग्रर्दली था। दोनों को सैल्यूट करके वह बाले से सम्बोधित हुग्रा।

'ग्रापका ट्रंक काल है साहब।' उसने बाले से कहा।

'मेरा।' बाले चौंका।

'हाँ, शौकत का ही होगा, जाग्रो देखो।' खान ने उसे ग्राज्ञा दे दी।

काल सचमुच शौकत का ही था। बाले ने नीचे ग्राकर फोन का रिसीवर उठाया था तो उसे शौकत की भर्रायी हुई ग्रावाज सुनाई दी।

'बाले भाई, मेरा तार बार मिला तुमको।' शौकत ने पूछा।

'सिर्फ तार मिला है वार नहीं मिला।' बाले ने उत्तर दिया।

'लो तुम्हें यानि की ग्रठकेलियां सूजी हैं ग्रौर यां ग्रपना बेड़ा गरक हो गया।'

'ग्राखिर हुग्रा क्या ?'

'भौत कुछ हुग्रा है। तुम बास तुरन्त चले ग्राग्रो।'

'नहीं पहले बताग्रो।'

'मेरा वह सूटकेस गायब हो गया है, जिसमें तीन लाख रु० थे।'

'ग्रौर तुमने वहां की पुलिस से सहायता भी नही ली।'

'खुद ग्राके देख लो, कित्ते काम की पुलिस है यां की।'

'ग्रच्छा मैं कोशिश करता हूँ छुट्टी लेने की।'

'कोशिश मोशिश नईं फौरन ग्राग्रो। मैं यां के संगम होटल के रूम २७ में ठहरा हुग्रा हूँ।'

'ग्रो हो, ग्रच्छा ग्राता हूँ बाबा!' यह कह कर बाले ने रिसीवर रख दिया।

इसके वापिस ग्राते ही खान बोल उठा।

'तुम्हें ग्रपने दोस्त की सहायता के लिए जाना चाहिए।'

'यही तो मैं ग्रापसे कहने ग्राया था।' बाले ने खुश होकर कहा।

'तुम इन्डियन एयर लाईंस के ढाई बजे वाले जहाज से चले जाग्रो ग्रौर ग्रगर मेरी किसी सहायता की ग्रावश्यकता पड़े तो ट्रंक काल कर देना।' खान ने ग्राशा के विपरीत बड़ी फराख दिली से इसे जाने की ग्राज्ञा दे दी।

'लेकिन मेरी हैसियत गैर सरकारी होगी।'

'सर्वत्र यूंही समझो, जब तक तुम्हें स्वयं इस घटना का बिवरण न मालूम हो जाये, वैसे तुम्हारी खानगी यहां से छुट्टी पर होगी।' खान ने कहा।

'ग्रगर इजाजत हो तो एक ग्रसिस्टैंट भी साथ ले लूं।' बाले ने विनती की।

'सिर्फ छुट्टी पर, बशर्ते की वह खुशी के साथ जाने को राजी हो।' खान बोला।

'ग्रो. के. बास। थैंक्यू वैरी मच।' बाले ने यह कहते हुए ग्रपनी पी कैंप उठाई ग्रौर हाथ हिलाता हुग्रा बाहर निकल गया।

इस समय दिन के ग्यारह बजे थे ग्रौर उसे इण्डियन एयर लाईंस के जहाज में ग्रपनी सीट भी सुरक्षित करानी थी ढाई बजने में पूरे साढ़े तीन घंटे बाकी थे। ग्रौर ये समय इस यात्रा के लिए काफी थी।

चम्बल गढ़

चम्बल गढ़ का शहर वर्तमान काल की बड़ी-बड़ी इमारतों और खूबसूरत चौडी सड़कों, पार्कों, बारोनक बाजारों और आधुनिक यातायात के साथ बसाया गया था। इसके निवासी अगर उत्तर के न होते तो इस शहर पर किसी अन्नत पसन्द पश्चिमी शहर होने का धोखा हो सकता था। नई नई और आधुनिक बनी हुई राजधानी होने से इन दिनों वहां गजब की चहल-पहल थी। बाजार सब भरे नजर आते सड़कों पर रौनक और आबादी काफी घंनी थी और शहर के बीच वाले इलाके में ही संगम होटल की शानदार छह मंजिला इमारत जिसे चारों तरफ एक पार्क से घेर दिया गया था। जो होटल में ठहरने वालों या होटल के ग्राहकों के अतिरिक्त उन पार्टियों के लिए सुरक्षित था जिनका प्रबन्ध इसी होटल के सुपुर्द किया जाता था।

टैक्सी अहाते में दाखिल होकर रोश पर से होती हुई पोर्टिको में रुक गई। सिर्फ एक सूटकेस हाथ में लिए उसमें से उतरने वाला यात्री सार्जेन्ट बाले ही था। टैक्सी को विदा करने के बाद वह होटल में दाखिल हो गया।

होटल के मैनेजर का आफिस नीचे ही इस काउन्टर के पीछे था जहां इन्क्वाइरी क्लर्क की पिछाड़ी पर एक खूबसूरत सी ऐंगलो इंडियन लड़की बैठी हुई थी। उसने अपने मोटे होठों पर इतनी लिपस्टिक लेप ली थी कि दूर से खून अलूदा नजर

आते थे। वह स्वयं ही एक स्वागती मुस्कराहट के साथ बाले की तरफ आकर्षित हो गई।

'यस प्लीज।'

'मुझे एक रूम चाहिये।' बाले ने सूटकेस वहीं जमीन पर रखते हुए कहा।

'रूम!' वह यह कह कर अपने होटल का चार्ट देखने लगी 'रूम तो कोई खाली नहीं है।'

'तो खाली करा दीजिये न एक।' बाले ने इस तरह मासूमियत से कहा जैसे ऐसा कर देना कोई जायज और मामूली काम हो।

'यह कैसे सम्भव है।' वह लड़की पलकें झपका कर उससे नम्रता पूर्वक स्वर में बोली।

'आप चाहें तो क्या सम्भव नहीं।' बाले उसे खोई-खोई नजरों से देखते हुए कहने लगा–'काश आप मेरे शहर में आती तो मैं आपके लिए आकाश के तारे तोड़कर एक होटल बनवा देता।'

लड़की इस अन्दाज वार्ता पर हंस पड़ी।

'बस···बस शुक्रिया, वह कौन सा शहर है आपका।'

'दासतान गवा से शहर सताने जहां आबाद और ठेठ किस्म के आदमी भेल पटोरी कहते हैं।'

'यू मैन भेल पुरी!' लड़की अपने दिमाग पर जोर देते हुए बोली।

'यस-यस···।'

'शायद कहीं नाम सुना हो इसका···बहरहाल देखिये मैं कोशिश करती हूँ।' यह कह कर वह रिजर्वेशन का रजिस्टर पलटने लगी। एक पृष्ठ पर रुक कर आप से आप चौंक कर बोली।

'एक रिजर्वेशन···तसदीक तलब और सर्वस्त खाली है लेकिन···।'

'लेकिन क्या ?'

'वह प्रिन्स नरसिंह गढ़ के लिए रिजर्व करायी गई थी। वह यहां सैर सपाटे के लिए तशरीफ ला रहे थे लेकिन प्रोग्राम स्थगित हो गया है।'

'मुझे कुछ दिनों के लिए ही दे दीजिये।'

'इसके लिए मुझे मैनेजर से पूछना पड़ेगा।'

'तो इतनी तकलीफ कर लीजिये न, देखिये इन्सान ही इन्सान के काम आता है।'

'ओ० के०···मगर आप मुझे किसी बीमा कम्पनी के एजेन्ट मालूम होते हैं।' लड़की हंसते हुए उठ खड़ी हुई।

'अरे··आप तो दूरदर्शी निकलीं, मेरा मतलब है खूब पहचाना आपने।'

'हर किस्म के लोगों को यहाँ आते-जाते देखकर मुझे इस कदर अन्दाजा हो गया है कि कौन क्या हो सकता है। यह जान लूं।'

'वन्डर फुल !' बाले प्रशंसा करता रह गया और लड़की उठ कर मैनेजर के आफिस में चली गई। इस अर्से में वह चारों तरफ निगाहें दौड़ा कर वातावरण का जायजा लेता रहा। होटल काफी शानदार था, इसका फर्श शीशे की तरह साफ और झलकता हुआ था। छत ऊंची और उसमें बर्की रोशनियाँ इस तरह लगाई गई थीं कि उन्हें रोशन न किया जाये तो इनकी पहचान मुश्किल हो, यहीं से ऊपरी मंजिल का जीना जुड़ा था, दाहिने हाथ पर होटल के एक्टर मेशन हाल के दो चौड़े दरवाजे थे, जिनमें कदआदम शीशे लगे हुए थे और बायीं

किया शांति पसन्द ग्राहकों के लिए डाईनिंग हाल और इन और गैरज के कमरे थे। इन कमरों के दरवाजों पर तख्तियां लगी हुई थीं।

वह लड़की थोड़ी देर बाद ही लौट आयी लेकिन उसके चेहरे पर कुछ निराशा सी प्रकट हुई।

'मुझे सख्त अफसोस है मिस्टर···।'

'पंचायत सिंह।'

'मिस्टर पंचायत सिंह, मैनेजर ने रिजर्वेशन पर रिस्क लेने से इन्कार कर दिया है। इसके पैसे पहले ही भरे जा चुके हैं।' लड़की ने कहा।

'कोई बात नहीं, लेकिन क्या यह प्रिन्स नरसिंह गढ़ होटल के स्थायी ग्राहकों में से हैं ?'

'जी नहीं, वह पहली बार ही यहां आ रहे हैं और यहाँ तो शायद लोग यह भी न जानते होंगे कि यह नरसिंह गढ़ के द्वीप कहां स्थित हैं।'

'खैर, देखिये आप कम से कम इतना ख्याल जरूर रखियेगा कि अगर कोई रूम शीघ्र खाली हो तो मेरे लिए रोक लें।'

'यह मैं कर सकती हूँ, बशर्ते कि आप अपना एड्रेस जायें ताकि सूचित कर सकूं।'

'मैं स्वयं ही मिलता रहूँगा, वास्तव में मैं यह निश्चय करके आया था कि संगम में ही ठहरूंगा। यह यहां का अत्यन्त शानदार होटल है।' बाले ने कहा।

'आपको रूम मिलने में ज्यादा देर नहीं लगेगी।' लड़की ने विश्वास दिलाया।

'कम से कम अपना नाम ही बता दीजिए ताकि फोन [illegible] सकूं।'

'एमली, वैसे इन्क्वाइरी पर दिन के समय में मैं ही रहती हूँ।'

'शुक्रिया, आप बड़ी अच्छी हैं!' यह कहते हुए बाले ने उसे कुछ ऐसी रुमान भरी नजरों से देखा कि वह किसी कदर शरमा कर मुस्करा दी और बाले सूटकेस सम्भाले बाहर आ गया।

न जाने क्यों वह शौक़त से सीधा न मिलना चाहता था।

प्रिन्स नरसिंह गढ़

यह एक संयोग ही था कि उसी दिन शाम को संगम होटल के मैनेजर के नाम तार आया कि प्रिन्स नरसिंह गढ़ आज ही पहुँच रहे हैं और इसके एक घण्टे बाद ही इसे फोन पर सूचना मिली कि जहाज के द्वारा प्रिन्स वहां पहुँच चुके हैं और अब संगम तशरीफ ला रहे हैं। इस नए होटल के जीवन में यह पहला ही अवसर था कि एक प्रिन्स उसमें ठहरने के लिए आ रहा था और मैनेजर बेचारा स्वयं यह भी न जानता था कि शाही सदस्य का स्वागत किस तरीके से किया जाता है। उसने चार अटैंडेंट पोर्च में ही और दो अटैंडेंट अहाते के दरवाजे पर खड़े कर दिये कि प्रिन्स की कार जैसे ही अहाते में प्रविष्ट हो वह आगे बढ़कर स्वागत करें और एक आदमी फौरन हो मैनेजर को सूचित कर दे। मैनेजर ने प्रिन्स को स्वागत कहने के लिए अंग्रेजी के बहुत से शानदार शब्द भी रट लिये थे और एक गोटे का कीमती हार भी मंगवा लिया था जो प्रिन्स को होटल में प्रवेश पाते ही पहनाया जाये।

इन प्रबन्धों के बाद वह बेचैनी से कमरे में टहल रहा था, उसे विश्वास था कि एक प्रिन्स के ठहरने के बाद इस होटल को दूसरे शाही सदस्य भी ठहरने के लिए पसन्द करेंगे। इसलिए वह नए अतिथियों की खातिरदारी में कोई कसर न उठा रखना चाहता था। इस गहमा-गहमी के कारण से होटल में ठहरे लोगों में भी प्रिन्स के आने की खबर फैल गई थी और उनमें से बहुत से अपने कमरों में से निकल कर सिर्फ इसलिए नीचे हाल में एकत्रित हो गए थे कि देखें प्रिन्स नरसिंह गढ़ कौन और कैसा हस्ती है उनमें शौकत भी था लेकिन वह प्रिन्स नरसिंह गढ़ को देखने के लिए नहीं आया था, बल्कि उसे व्याकुलता के साथ बाले की प्रतीक्षा थी और बाले के आने में जैसे-जैसे देर हो रही थी शौकत का मूड खराब होता जा रहा था, वह कभी हाल में किसी कुर्सी पर बैठ जाता और कभी उठकर दरवाजे तक टहलने लगता।

ठीक सात बजकर पैन्तीस मिनट पर एक पुराने माडल की रोल्स कार अहाते में दाखिल हुई जिसके बोनट पर एक अजीब किस्म की छोटी सी रेशमी झंडी लहरा रही थी। यह आसमानी रंग की थी और उस पर एक छोटे से कछुए की तस्वीर बनी हुई थी।

क्योंकि होटल के अटैंडेन्ट को प्रिन्स नरसिंह गढ़ की पहचान के लिए कोई खास निशानियाँ मालूम नहीं थीं इसलिए वह उस कार को देखकर पहले तो चौंके लेकिन फिर पशोपंज में पड़कर अपनी जगह खड़े रह गए। वह कार कुछ कदम अहाते में दाखिल होकर स्वयं ही रुक गई और अटैंडेन्ट को कार के अन्दर से किसी की कड़कती आवाज सुनायी दी।

'यह होटल है या धर्मशाला, कोई भी हमारे स्वागत को [illegible] नहीं है।'

'शायद हजूर को पहचाने न हों।' अन्दर से ही किसी ने उत्तर दिया।

इन आवाजों को सुनते ही तुरन्त दोनों अटैंडेन्टस कार की तरफ दौड पड़े।

'हजूर हम तो आपकी ही प्रतीक्षा कर रहे थे।' उनमें से एक ने सत्कार से किसी कदर झुकते हुए कहा।

'बस, दो मुर्गे।' अन्दर बैठे हुए नौजवान आदमी ने जो शायद स्वयं प्रिन्स था कार चलाने वाले से कहा। कार चलाने वाला भी अच्छी हैसीयत का मालूम होता था। सम्भव है… प्रिन्स का सेक्रेटरी ही रहा हो।

'हजूर अन्दर आपके स्वागत की सब तैयारियां हो चुकी हैं हम तो सिर्फ आपकी आमद की सूचना के लिए खड़े हुए थे।'

'अच्छा…अन्दर हो चुकी हैं…खैर सेक्रेटरी अन्दर चलो।'

कार जब पोर्टिको में रुकी तो दूसरे चार अटैंडेन्टस जो शफाफ साफ लिबास पहने हुए थे दौड़ कर करीब आ गए, उनमें से एक ने कार का दरवाजा खोल दिया और बाकी तीन अटैन्शन खड़े हो गए। उसी समय अन्दर से मैनेजर भी निकल आया, उसने कश्मीरे का कीमती सूट पहन रखा था और कुछ घबराया हुआ सा नजर आ रहा था।

'वैल कम यूअर हाईनेस्!' उसने प्रिन्स को अंग्रेजी में स्वागतम कहा।

'आपका परिचय!' प्रिन्स ने जो कार से उतर रहा था अपने सुनहरी फ्रेम वाली ऐनक के मोटे शीशों की ओट से उसे गौर से देख कर पूछा। वह सिर से पैर तक अमरीकियों जैसा सफेद सूट पहने हुए था जिसका कपड़ा बहुत मुलायम और चमकदार था। सिर पर सफेद ही फैल्ट हैट थी और पैरों में जूते भी

सफेद थे। इसके विपरीत उसका रंग इतना काला था कि अगर अन्धेरे में खड़ा कर दिया जाये तो सिर्फ सूट और बूट ही नजर आ सकें, लेकिन नाक नक्शा ठीक था। अलबत्ता चेहरे पर कुछ बालों वाली दाढ़ी और बारीक मूंछों से वह कुछ अजीब सा लगता था। उसका सैक्रेटरी अलबत्ता खुले रंग का तन्दुरुस्त सा आदमी था। उसके भरे हुए चेहरे पर बड़ी-बड़ी मूंछें थीं और दाढ़ी की जगह निचले होंठ के नीचे दरम्यान से ठोड़ी तक तराशीया बालों की एक स्याह लकीर सी बनी हुई थी।

'इस होटल का मैनेजर यूअर हाईनेस।' मैनेजर ने इंगलिस्तान के शाह प्रस्तों की तरह ज्यादा मोदब होकर जवाब दिया।

'इस होटल का मैनेजर यूअर हाईनेस हो सकता है तो हम फिर क्या घसियारे हैं।' प्रिंस नरसिंह गढ़ को क्रोध आ गया।

'वह, नहीं यूअर हाईनैस…मैं तो आपका सेवक हूँ।' मैनेजर ने जल्दी से उत्तर दिया। इस समय में सेक्रेटरी भी कार से उतर कर करीब आ गया था।

'यह भी झूठ, अपने सेवक हम नरसिंह गढ़ में छोड़कर आये हैं। सिर्फ एक साथ में हैं।'

'यूअर हाईनैस!' पीछे से सेक्रेटरी ने लुकमा दिया।

'हां तो मैनेजर के होटल साहब।'

'हजूर उल्टा बोल रहे हैं!' सेक्रेटरी ने पीछे से फिर दखल दिया।

'हमारी मर्जी, हम प्रिंस हैं—उल्टा बोलें कि सीधा तुम्हें क्या?' प्रिंस ने अपने ही सेक्रेटरी को डांट दिया।

'आइ एम सोरी यूअर हाईनेस!' सेक्रेटरी ने क्षमा याचना की।

'हां तो मिस्टर मैनेजर, हमारे ठहरने का सब प्रबन्ध कर दिया आपने…।'

'जी हां, हजूर…स्वयं चलकर निरीक्षण करें।'

'और हमारी यह कार, यह कौन से अस्तबल में बंधेगी ? याद रहे की कैसर जर्मनी ने यह कार उपहार में हमारे फादर आदरणीय यानी हिज मैजिस्टी को पेश की थी। यह एक तारीखी कार है जो हवा की तरह तेज दौड़ती है। पानी की तरह सड़क पर बहती है और…और…यानी की दुनियां में इससे बेहतर कार पैदा ही नहीं हुई।' प्रिन्स ने अपनी कार की प्रशंसा की।

'इसे बड़ी सावधानी से गैरज में रखा जायेगा यूअर हाई-नैस, आप अन्दर तशरीफ ले चलिये।'

मैनेजर ने विश्वास दिला दिया और तब प्रिंस नरसिंह गढ़ अपने सेक्रेटरी के साथ मैनेजर की राहदारी में अन्दर दाखिल हुए। अन्दर हाल में उपस्थित अतिथि इन्हें देखने के लिए दरवाजों में आ खड़े हुए, लेकिन प्रिंस ने किसी तरफ ध्यान न दिया। वह मैनेजर के साथ उनके सामने से गुजर कर सीढ़ियां चढ़ने लगा, सैक्रेटरी पीछे था।

● ●

लोगों ने नरसिंह गढ़ के प्रिंस के लिये पहले जिस कदर अजनियत महसूस की थी, शाम को डाईनिंग हाल की बैठक के बाद वह उसमें उतनी दिलचस्पी लेने लगे, इसके बावजूद कि प्रिंस के लिये इस के निवास स्थान में ही बेहतरीन खानों का प्रबन्ध किया गया था। प्रिंस ने दूसरे आम मेहमानों के

साथ डाईनिंग हाल में ही बैठ कर खाने पर इसरार किया। और फिर वह खुशगवार वार्ता से शीघ्र ही दूसरों के लिये दोस्त बन गया।

खाने के बाद ही बड़े हाल में नाच का प्रोग्राम था, जो प्रिंस के आगमन के कारण से और बेहतर बना दिया गया था। डांसर कोई स्थानीय लड़की ही थी, लेकिन जैसा कि सुना जाता था कि वह अपने हुस्न के मामले में कयामत से तुलना की जाती थी। और वैसा ही उसका नाच भी। हाल में शौकत भी अपनी स्टैनो के साथ मौजूद था। जब प्रिंस नरसिंहगढ़ अपने सेक्रेटरी के साथ हाल में आया।

'वा वा क्या प्रिंस है।' शौकत ने उसे देखकर बुरा सा मुंह बनाते हुए अपनी स्टैनो जोहरा से कहा–'जैसे किसी ने तारकोल मल दिया है बेटा के मुंह पर–रोसिया।'

'सुना है इन जजीरों के लोग स्याह फाम ही होते हैं।' जोहरा ने उसे समझाया।

'स्याह फाम काये को गुलफाम कह दो न, प्रिंस है न साला।' शौकत ने जोहरा की इस तरफ दारी से जल कर कहा।

मगर वह ये देखकर चौंक पड़ा कि प्रिंस स्वयं विभिन्न मेजों के पास से गुजरता हुआ लोगों से परिचय हासिल कर रहा है। मैनेजर उसके साथ था। वह अपने दूसरे अतिथियों का परिचय उससे कराता जाता, इस तरह वह वास्तव में दूसरों पर ये जताने की भी कोशिश कर रहा था कि मेरा होटल शहजादों के लिए भी आकर्षण का केन्द्र है।

और जब प्रिंस और उसका सेक्रेटरी मैनेजर के साथ में शौकत की टेबल की तरफ आने लगे, तो शौकत अपनी सीट पर पहलू बदलने लगा। करीब आने पर शौकत ने देखा कि

अपनी स्याह रंगत के बावजूद प्रिंस का व्यक्तित्व पुरकशिश था। न जाने क्यों शौकत की अकड़ इस समय हवा हो गई और वह दूसरों की तरह उसके स्वागत के लिए कुर्सी से उठ खड़ा हुआ।

'आप भी हमारे नए मेहमान हैं, कल प्रातः तशरीफ लाये हैं बम्बई से।' मैनेजर ने शौकत का परिचय कराया।

'मुझे प्रिंस अब्दुल अजीज मैकाडो आफ नरसिंह गढ़ कहते हैं, आपका शुभनाम ?' प्रिंस ने शौकत से प्रेम भाव से हाथ मिलाते हुए पूछा।

'मेरा शुब नाम ?' शौकन बौखला कर बोला—'शौकत मियां खां जागीरदार।' उसने अपना परिचय कराया।

'खूब, तो आप भी किसी पुराने शाही खानदान से हैं।' प्रिंस की इस प्रशंसा ने शौकत को बाँस पर चढ़ा दिया। वास्तव में कभी याद न आया था कि वह भी अपनी किसी पिछली आठवीं नवीं पुश्त में भोपाल के शाही खानदान से सम्बन्धित रहा था। जागीरदारी ही, क्यों कि इसे बाप दादा से विरासत में मिली थी, इसलिए वह जागीरदार की हद तक ही शान जताया करता था।

'जी आं जी आं मेरे दादा नवाब दोस्त मुहम्मद खान के खानदान से थे।' शौकत जल्दी से बोल उठा, फिर उसने गर्व से सिर को ऊंचा करके पहले जोहरा की तरफ और फिर आस-पास उपस्थित लोगों की तरफ देखा।

'हमें बड़ी खुशी हुई आपसे मिल कर।' प्रिंस ने शौकत से दो बार हाथ मिलाया, लेकिन शौकत से ज्यादा, यह जान कर कि किसी शाही खानदान का एक सदस्य इस होटल में पहले से ठहरा है मैनेजर को इस बात की खुशी हुई।

'और आप की तारीफ।' प्रिंस जोहरा से सम्बोधित हुआ।

'यह मिस जोअरा है, मेरी स्टैनो !' शौकत बजाय जोहरा के बोल उठा।

'बहुत खूब हैं ?' प्रिंस ने जोहरा को किसी कद्र ललचाई हुई नजरों से देख कर कहा और शौकत के सीने पर अजगर लोटने लगे।

'उम्मीद है, फिर भी मुलाकात होगी, आप लोगों से।' प्रिंस यह कहता हुआ सेक्रेटरी सहित आगे बढ़ गया।

'खुदा न करे जो हो ?' शौकत होठों में बड़बड़ाया और जोहरा मुस्कराती रह गई।

मुलाकात

हाल से वापसी पर शौकत अभी अपने कमरे में दाखिल हुआ ही था कि स्थानीय पुलिस स्टेशन का एक आदमी आ पहुँचा। शौकत को उसी समय पुलिस स्टेशन बुलाया गया था। मगर न जाने क्यों इस समय उसका दिल न चाहा कि वह जोहरा को निवास स्थान पर अकेला छोड़ दे। उसने जोहरा को साथ ले लिया सेन्ट्रल पुलिस स्टेशन पहुँचने पर उसे मालूम हुआ कि उसे अपनी रिपोर्ट के सिलसिले में तलब किया गया है। अन्दर एस० पी० के कमरे में कुछ सादा लिबास आदमी एफ कतार लगाये खड़े थे, जब शौकत उसके कमरे में दाखिल हुआ।

'मिस्टर शौकत जरा देखिये तो क्या इनमें से कोई आदमी आपके कम्पार्टमैंट में दाखिल हुआ था या पुलिस स्टेशन पर

आपको मिला था।' एस० पी० ने शौकत को देखते ही उन आदमियों की तरफ इशारा करके कहा। और शौकत उनमें से एक एक की शक्ल गौर से देखने लगा फिर नहीं में गर्दन हिलाना पड़ा।

'मैं तो कहता हूँ वह मद्रासी या गुजराती है।'

'मैं ट्रंक काल पर बम्बई रेलवे बुकिंग सैन्टर से इन्क्वाइरी कर चुका चुका हूँ।' एस० पी० ने बात काट दी–'वह दोनों आदमी पहले से रिजर्वेशन करा चुके थे और रेलवे पुलिस वहां की सी० आई० डी० की सहायता से उन लोगों के बारे में अधिक सूचनायें प्राप्त करने की कोशिश कर रही है!'

'आप देख लेना मालूमात में वह साला मद्रासी जरूर कोई चार सौ बीस निकलेगा।'

'देखिए आपकी बात अभी छोड़िए आप की रिपोर्ट मिलते ही यहां की जी० आर० पी० (रेलवे पुलिस) ने स्टेशन पर उपस्थित और बाहर गुजरने वालों की तलाशियां ले डाली थी और स्पष्ट है कि उस ट्रेन के बाद दो घंटे तक यहां से कोई ट्रेन नहीं गुजरी इसलिए किसी के फौरन ही फरार की सम्भावना नहीं थी। क्योंकि तबसे स्टेशन पर गेट से लेकर प्लैट-फार्म तक पुलिस लग गई थी और किसी सन्देहस्पद आदमी को अन्दर दाखिल होते या बाहर निकलते नहीं देखा गया।' एस० पी० बताया।

'तो फिर जमीन या आसमान खा गए होंगे मेरे तीन लाख।' शौकत झुंझला कर बोला।

'फिलहाल ये यहां के ऐसे लोग हैं जो पुलिस की नजर में अरसा से खटक रहे हैं और अगर आप का चोर इनमें नहीं तो फिर किसी स्थानीय जुरायम पेशा या गिरोह का काम नहीं मालूम होता।

'अल्ला जाने किसका काम है अपना तो बेड़ा गर्क ही हो गया।'

'देखिये हम पूरी कोशिश कर रहे हैं। अगर अपराधी यहीं कहीं उपस्थित हैं तो हम उन्हें जरूर ढूढ़ निकालेंगे।' सुपरिन्टेन्डेन्ट ने इसे विश्वास दिलाया। 'हमने कल ही से हवाई अड्डे पर खुफिया पुलिस लगा दी है।'

'तो साले ट्रक मरक से निकल गए होंगे।'

'जी नहीं! आपकी रिपोर्ट मिलते ही तमाम सरहदी नाकों को खबरदार कर दिया गया था। ऐसी कोई सूचना नहीं मिली।'

'ऐ लो तो वह आपको बाकायदा चिट्ठी पत्र लिख कर जायेंगे?'

'मिस्टर शौकत हम पूरी कोशिश कर रहे हैं अब आप जा सकते हैं, कोई सूचना मिली तो आपको तुरन्त सूचित कर दिया जायेगा।'

सुपरिन्टेन्डेन्ट का मूड भी बेतुकी बातों से कुछ बिगड़ गया।

और शौकत जोहरा के साथ बाहर आया।

'आपने बाले साहब को तार दिया था ना?' जोहरा ने बाहर आकर उससे पूछा।

'ताना (ताने) मत मारो, हां जाओ दिलाया था। क्या भरोसा इन पुलिस वालों का।' शौकत ने सुपरिन्टेन्डेन्ट पर आये हुए क्रोध का कुछ भाग जोहरा पर उतार दिया और वह खामोश हो गई वरना शौकत और भड़क जाता।

वह रात शौकत ने बड़ी बेचैनी से गुजारी। एक तरफ तो उसे जोहरा को ललचाई हुई नजरों से देखने वाले प्रिंस नरसिंह गढ़ की रकीबाना कल्पना सता रही थी और दूसरी तरफ बाले की सर्द मोहरी मुंह से कुछ भी कहे, उसे इसकी दोस्ती पर भरोसा था कि वह जरूर आ पहुँचेगा। लेकिन आना तो दूर यहां तो उत्तर तक न आया था। सवेरे वह नाश्ता कर के नीचे ही आ गया। जोहरा इस समय बाथ रूम में गई थी। नीचे प्रिंस नरसिंह गढ़ नजर आया जो अपने सेक्रेटरी के साथ कहीं बाहर जा रहा था। और शौकत ने दिल ही दिल में भगवान का धन्यवाद किया कि चलो बला टली पर जाते जाते भी प्रिन्स ने इसे एक चक्कर दे ही दिया।

'हैलो मिस्टर जागीरदार।' वह स्वयं ही शौकत से सम्बोधित हो गया।

'आप और आपकी स्टैनो रात का खाना हमारे साथ ही खायेंगे।'

और शौकत गम्भीरता से इन्कार की इच्छा रखते हुए भी उसके सामने इन्कार न कर सका वह कोई उचित उत्तर सोचने लगा।

'तकलीफ की जरूरत नहीं यूअर हाईनेस खुद आपको निमन्त्रण दे रहे हैं।' प्रिंस के सेक्रेटरी ने उसे उत्तर भी तलाश न करने दिया और शौकत 'बहुत खूब, बहुत खूब' कहकर रह गया। मगर इनके चले जाने के बाद उसे अपने आप पर क्रोध आने लगा कि उसने साफ इन्कार क्यों न कर दिया। प्रिन्स

होगा तो अपने घर का। उसकी तबियत फिर उलझने लगी और वह वापिस अपने रूम में चला आया।

ठीक नौ बजे उसे एयर कनैक्शन से फोन पर सूचना मिली कि कोई साहब आपसे मिलना चाहते है। बम्बई से आये हैं। शौकत के चेहरे पर खुशी की लहर दौड़ गई।

'अरे जल्दी भिजवाना ऊपर।' शौकत ने इन्क्वाइरी गर्ल को जवाब में कहा।

दो मिनट के बाद ही दरवाजे की घंटी बजी और दरवाजा खोलने पर सार्जेन्ट बाले उसके सामने खड़ा था।

'अरे बाले भाई आओ, आओ, अन्दर आओ, लो कब से तुम्हारा इन्तजार कर रया हूँ।' शौकत ने इसे बाजू थाम कर अन्दर खींचा।

फिर वह सोफे पर बैठ कर उसे लुट जाने की दास्तान सुना रहा था।

'वह अस्टम कस्टम वालों के चले जाने के बाद फिर कोई नई आया और हम चम्बलगढ़ साथ खैरियत के पहुँच गये।'

'चलो खुदा का शुक्र अदा करो।' बाले ने जूते के बन्द खोलते हुए कहा।

'काये का शुक्र अदा करूं?' आगे तो सुनो।

'अच्छा कहो।'

'गाड़ी से उतर कर वह सूटकेस मेरे हाथ में था और बड़ा सूटकेस एक कुली के सिर पे। फिर जब हम प्लेटफार्म के दरवाजे से निकलने लगे तो भीड़ भोत थी। मिस जोरा आगे हो गई और मैं पीछे। बस जो रश आया तो न जाने कहां से मेरे हाथ में किसी का हाथ लगा। और सूटकेस छूट कर गिर पड़ा। अब जो ढूंढता हूँ तो साला दस कदम दूर पड़ा हुआ मिला। मैंने

दौड़ कर उठा लिया मगर जो खोल कर देखा तो इसमें नोटों की बजाब चिट्ठियां भरी हुई थीं।'

'तुमने उसी समय रिपोर्ट दी पुलिस को ?'

'मैंने वईं स्टेशन मास्टर को, पुलिस को सबका रिपोर्ट दी ग्रोर बेचारों ने फौरन गाड़ी लेट करा के स्टेशन पर तलाशी ली। रेलवे की पुलिस ने स्टेशन के बाहर घेरा मेरा डाल दिया। मगर कईं ऐसे पकड़े जाते चोर साले। वह तो मिस जोरा ने गौर से देख कर मुझे बताया कि सूटकेट भी मेरा वाला नईं है। उस पर मेरा नाम बाजू में नईं लिखा था मगर था बिलकुल वैसा ही। मुझे खुद धोखा हो गया था न।'

'तुमने घर से रवाना होने के बाद कहीं इस बात का जिक्र किया था कि तुम इस कदर रकम साथ ले जा रहे हो।'

'ऐ लो मैं क्या बेवकूफ हूँ। जो किसी से जिक्र करता। घर के किसी नौकर को मालूम नईं। सिर्फ जोहरा ग्रोर मैं जानते हैं।'

'रास्ते में कहीं सूटकैस खोला था या इस रकम के बारे में कोई जिक्र···।'

'तोबा करो। रास्ते में बोल के क्या गला कटवाता। हां ग्रलबत्ता हम लोग ग्रपने ठेके की बात जरूर कर रये थे ग्रौर वे दोनों साले कुलवाये स्वामी हैंगर ग्रौर गुजराती खरगोश के जैसे कान खड़े करके हमारी बातें सुन रये थे।'

'तो फिर उनको भी शक हो गया होगा कि तुम मोटी मुर्गी हो।'

'मुर्गी तुम खुद मुर्गा बोलो बोलना ही है तो।'

'मगर तुम कहते हो कि यह घटना चम्बलगढ़ के स्टेशन पर गाड़ी से उतरने के बाद हुग्रा है।'

'हां।'

'ग्रौर पुलिस ने तुम्हारी इस शिकायत पर उन दोनों की तलाशी भी ली होगी।'

'ली तो थी मगर दो चार सौ रुपये ही निकले थे।' ग्रौर वे तुम्हारे साथ गाड़ी से उतरे भी नहीं थे।'

'नईं वे साले खिड़की में सें मिस जोहरा की चाल देख रये थे।' शौकत ने जले हुए ग्रन्दाज में बैठे बैठे मटक कर कहा।

'इन ही ग्रदाग्रों पर मर मिटे होंगे वे बेचारे।'

'क्या मतलब—यानि कि।'

'यानि कि वे मिस जोहरा की चाल-माल।' बाले ने उसी लहजे में जवाब दिया।

'लो ग्रापको मिजाख सूजा है।' शौकत बुरा मान गया।

'ग्रच्छा तो ट्रेन में मिलने वाले उन कस्टम वालों के सिवाय ग्रौर किसी ने तुम्हारा सूटकेस नहीं देखा।'

'नईं।'

'तो बस वही हो सकते हैं।'

'नईं नईं कस्टम वाले तो सबका सामान देखते हैं ग्रौर वह इन्सपेक्टर तो बेचारा भोत शरीफ ग्रादमी था उसने खुद कहा था कि ग्राप को इस तरह बड़ी बड़ी रकमें लेकर सफर करना नईं चाहिये। वह तो बाले भाई—मैं उल्लू का पठ्ठा था जो सफर का लुफ्त (लुत्फ) उठाने के लिए रेल से सफर किया !'

'तुमने उन कस्टम वालों के बारे में ग्रपनी पुलिस रिपोर्ट में बयान दिया है।'

'दिया तो है मगर सरकारी ग्रादमी ऐसा कैसे कर सकते हैं ?'

'मैं तुमसे राय नहीं तलब कर रहा हूँ।'

'अच्छा हां जाओ दिया है।'

'तो फिर समझ लो कि तुम्हारे तीन लाख पानी में गये।'

'काये को हराम की कमाई थोड़ी थी। तीन साल में तीन लाख नईं जमा होते।'

'तो तीन साल मेहनत कर लेना।'

'इसीलिए बुलाया था तुम्हें—याँ आ के कटे पर नमक छिड़को। पुलिस वाले साले होते ई ऐसे हैं।'

'खैर बकवास फिर करना।'

'काए को क्या चौखट दिखाने को थे खाली खोली।'

'मैं तुम से किसी और समय मिलूंगा। वैसे तुम्हारी रकम मिलने की उम्मीद तो कम ही नजर आ रही है।'

तीन लाख का डाका है कोई मिजाक नईं है। पुलिस की सात पीढ़ी खंगाल डालूंगा। शौकत ने दावा किया लेकिन बाले इस समय जम कर नहीं बैठा। वह किसी और समय मिलने का वायदा करके चला गया।

शौकत के लिए उसका चला जाना ही गनीमत रहा क्योंकि वह जोहरा को देख लेता तो मुफ्त में शौकत का तोला दो तोला खून खुश्क हो जाता।

धोखा

होटल संगम से निकल कर बाले ने टैक्सी पकड़ ली। वह इतफाक से सामने ही से गुजर रही थी।

'रेलवे स्टेशन।' उसने ड्राइवर को आदेश दिया।

गाड़ी उसने रेलवे स्टेशन के बाहर बनी हुई रेलवे पुलिस के हैडक्वार्टरस् की इमारत के दरवाजे पर ही रुकवाई, और उसे

ठहरने की हिदायत करके स्वयं अन्दर दाखिल हो गया। इसे सुपरिटेंडेंट का आफिस मालूम करने में कोई दिक्कत पेश नहीं आई। दरवाजे पर मौजूद चपरासी को इसने हाथ से लिखकर एक स्लिप दे दी जिस पर लिखा था।

'लांग फैलो, जरनलिस्ट, नुमायंदा डेली आबजर्वर।' सुपरिटेंडेंट ने इसे तुरन्त ही अन्दर बुलवा लिया।

'यस प्लीज!' वह इसे कुर्सी पर बैठने का इशारा करते हुए बोला।

'कल सुबह जो तीन लाख की डकैती का केस हुआ है। मैं उस सिलसिले में हाजिर हुआ हूँ।'

'ओहो'''हां, अच्छा फरमाईये। वैसे वह मामला अब सिविल पुलिस के सुपुर्द कर दिया गया है।' सुपरिटेंडेंट ने बताया।

'हमें जो रिपोर्ट मिली है। उसमें कस्टम इन्सपेक्टर और कांस्टेबलों पर संगठित एक ऐसी पार्टी का जिकर है, जिसने मिस्टर शौकत के कम्पार्टमेंट के यात्रियों की नागपुर के करीब तलाशी ली थी।'

'जी हां? ऐसी तलाशियां आमतौर पर होती हैं। नशीली वस्तुओं के बारे में।'

'लेकिन क्या आपने इस सिलसिले में कोई इन्कवाइरी की।'

'यह तलाशी मेरे ही विभाग के लोग लेते हैं। यहां से नागपुर तक मेरा ही एरिया है।'

'तब तो आपने उस इन्सपेक्टर से मालूम किया होगा।'

'यकीनन, लेकिन उसका कहना है कि उसने किसी फर्स्ट क्लास कम्पार्टमैंट में कल सुबह कोई तलाशी नहीं ली।'

बाले अपनी हैंड बुक पर उसका जवाब नोट करने लगा।

'सच पूछिये तो ।' सुपरिंटेंडेंट ने कहना चाहा—'हमें ये रिपोर्ट भी कोई फराड ही मालूम हो रही है। सम्भव है किसी जिम्मे-दारी से बचने के लिए एक गलत रिपोर्ट दर्ज कराई गई हो।'

'देखिये, जहाँ तक मियां शौकत साहब का सम्बन्ध है। मैं उन्हें बम्बई से ही जानता हूँ। वह काफी प्रभावशाली और साहब हैसियत लोगों में हैं और मैं नहीं समझता कि कोई ऐसी हरकत करेंगे। दो चार लाख उनके लिए कुछ बहुत नहीं हैं।' बाले ने एक जर्नलिस्ट की हैसीयत से शौकत की वकालत की।

'तो क्या आपका मतलब है। कस्टम स्टाफ के भेस में कोई दूसरे लोग होंगे।' सुपरिंटेंडेंट ने इससे पूछा।

'ठीक सम्भव है।'

'लेकिन घटना तो इस स्टेशन पर हुई है। वह लोग यहीं कोई ऐसी हरकत कर सकते थे।'

'शौकत साहब के साथ दो मुसाफिर और भी थे। बहुत से अपराध काफी सावधानी के साथ घटित होते हैं।'

'आप तो इस तरह कह रहे हैं जैसे स्वयं भी पुलिस में रह चुके हैं।' सुपरिंटेंडेंट मुस्कराया। वह गम्भीर और ठंडे किस्म का आदमी मालूम होता था। या सम्भव है, जर्नलिस्टों के साथ उसका रवैया इतना नर्म और पुरइखलाक रहता हो।

'पुलिस और प्रेस का बहुत करीबी सम्बन्ध रहा करता है।' बाले ने हंसते हुए उत्तर दिया और सुपरिंटेंडेंट भी हंसने लगा।

'हम भी बहरहाल असूली तौर पर हर सम्भव जांच कर रहे हैं। आगे मिस्टर शौकत की तकदीर, और हम ही नहीं बल्कि इस शक के पैसेन्जर भी सम्भव है। शहर के किसी नामालूम गिरोह या सदस्य ने ये हरकत की हो। इस केस को

सिविल पुलिस के सपुर्द भी कर दिया है। इस तरह दोहरी तफशीश हो रही है।' सुपरिंटेंडेंट ने बताया।

'क्या इससे पहले भी यहां कोई ऐसी घटना हो चुकी है?'

'नहीं, अपनी नौइयत की यह पहली ही घटना है। वैसे मामूली चोरियां और डाके इत्यादि तो हर शहर का मामूल है जब तक अपराधी तत्व का वजूद बाकी है। इनसे तो फुरसत मिलने से रही।'

'बेहतर है, लेकिन ये ख्याल किस बुनियाद पर कायम कर लिया गया कि अपराधी इस शहर में भी मौजूद हो सकते हैं।'

इस घटना की सूचना मिलते ही पुलिस द्वारा स्टेशन और चारों दिशाओं को घेर लिया गया था ट्रेन भी लेट कर दी गई। लेकिन कोई लाभदायक परिणाम न निकल सका। बहरहाल तब से शहर के नाकों पर भी पुलिस को एलर्ट कर दिया गया है, और यही एक सम्भावना है कि वह लोग शहर में प्रविष्ट होकर कहीं रोपोश हो गये हों।'

'शहर में पुलिस की निगरानी अन्दाजन कितनी देर बाद कायम हुई थी।'

'बस फौरन ही। मैंने स्वयं वायरलैस पर सिटी सुपरिंटेंडेंट को सूचना दे दी थी, और उन्होंने उसी समय फोन और वायर-लैस पर तमाम चौकियों को हिदायत भेज दीं।'

'क्या आपने अपने इन्सपेक्टर और उसके साथ के सिपाहियों की शिनाख्त शौकत साहब से भी कराई थी?'

'अभी नहीं? क्योंकि इन्सपेक्टर को एक महत्वपूर्ण इन्क्वा-इरी के सिलसिले में कल शाम को नागपुर में ठहर जाना पड़ा था। लेकिन आज मैं यह भी करा डालूंगा। कानूनी कार्यवाही तो बहरहाल पूरी होनी ही चाहिए।'

'मेरा ख्याल है कि शौकत साहिब के बयान के अनुसार अगर वह आपके स्टाफ के लोग नहीं थे, तो उन लोगों की तलाश होनी चाहिये, जिन्होंने शौकत साहिब की ट्रेन में तलाशी ली थी।'

'हम गाफल नहीं बैठे हैं। ऐसे सन्देहास्पद व्यक्तियों की तलाश नागपुर से यहां तक के हर स्टेशन और उसकी चारों दिशाओं में जारी है।'

'हो सकता है वह इस जोन के बाहर निकल गये हों।'

'नहीं, एक घंटे के अन्दर-अन्दर तमाम स्टेशनों की रेलवे पुलिस को सूचित कर दिया था और उस ट्रेन के बाद चार घंटों तक कोई ट्रेन विपरीत दिशा में भी नहीं जाती।'

'तब फिर यकीनन वह लोग यहीं शहर में होंगे।' बाले ने राय दी।

'देखिये क्या परिणाम निकलता है।' सुपरिन्टेडैंन्ट ने ठंडा सांस खींच कर कहा।

इसके बाद वह सुपरिंटेन्डेन्ट से रुखसत होकर बाहर निकल आया। उसने सोचा इस केस की सूचनाओं से खान को भी सूचित कर दें और इसके लिए उसे ट्रंक काल करना पड़ा। इस इरादे से उसने टैक्सी का रुख जनरल पोस्ट आफिस की तरफ करा दिया। हालांकि उसे स्वयं न मालूम था कि जनरल पोस्ट आफिस यहां कहां स्थित है। उसने सिर्फ ड्राईवर को वहां चलने की हिदायत की थी।

टैक्सी जब विभिन्न सड़कों से गुजरने के बाद एक तंग सी गली में दाखिल होने लगी तो बाले चौंक पड़ा। ये आबादी शहर के उस भाग की प्रतीत होती थी जहां चमड़े के कारखाने और मजदूरों के झोंपड़े थे। इनके बाद चन्द ठीकरें थे जिन पर

एक-एक और दो-दो मकानात बने हुए थे और यहीं कुछ देसी शराब खाने भी स्थित थे। इस सूबे में क्योंकि अभी तक कानून शराब बन्दी का लागू नहीं हुआ था। इसलिए शराब का व्यापार स्वतन्त्रता से होता था।

'तुम कहां चल रहे हो ?' बाले ने ड्राइवर से पूछा।

'साहिब...यह शार्टकट है और आप मुझे जी० पी० ओ० पर छुट्टी दे दीजियेगा। मुझे हवाई अड्डे पर सवारी लेने जाना है।' ड्राईवर ने उत्तर में कहा।

अच्छा...अच्छा...मगर जल्दी चलो।' बाले ने लापरवाही से कहा। लेकिन न जाने क्यों उसकी छटी हस किसी खतरे की खबर दे रही थी। उसने एक बार अचानक ड्राईवर के सामने लगे हुए मिरर फ्रेम (आईने) में देखा। मगर इसी तरफ जैसे यूंही नजर पड़ गई हो। उसे ड्राईवर के तेवर अच्छे नजर नहीं आये। इस तबदीली ने उसके शरीर में खुशी की एक लहर दौड़ा दी। यकीनन कुछ होने वाला था। कोई ऐसी बात जो इसी सिलसिले से सम्बन्ध रखती हो और उसके दिमाग में सुरागसानी के कीड़े रेंगने लगे। वह अकेला इस शहर में सुराग-सानी के झंडे गाड़ने जा रहा था। मगर फिर उसे याद आया कि वह यहां अपनी सरकारी हैसियत में नहीं है और यह शहर इसके इलाके, इसकी गलियां, इसकी सड़के और इसके लोग भी उसके जाने बूझे नहीं है। फिर कब क्या हो ?

ड्राईवर ने कार सड़क से उतार कर एक टीन के स्टैंड की तरफ तेजी से घुमा दी। अब इनके सामने एक मंजिला पक्की मगर गंदी सी इमारत थी। जिसके अन्दर से देसी शराब की बदबू के भभके निकल कर हवा में फैल रहे थे।

'साहब, इजाजत हो तो बस एक पैग चढ़ा लूं। सुबह से

नहीं पी है ।' ड्राईवर ने विनतीपूर्वक अन्दाज में बाले से कहा ।

'हां हां, एक क्या दो चढ़ाओ, मगर जल्दी ।' बाले ने प्रसन्ता पूर्वक आज्ञा दे दी और वह कार की चाबी को उंगली पर बल देता हुआ शराब खाने में प्रविष्ट हो गया ।

ड्राईवर के अन्दर जाते ही शराब खाने के बाहर कुछ दूरी पर खड़े हुए तीन खतरनाक शक्ल के आदमी जो सिर्फ जर्सियाँ और गंदी पतलूनें पहनें हुए थे । झूम कर टैक्सी की तरफ बढ़ने लगे । बाले ने देख लिया मगर वह अनजान बना रहा ।

वह टैक्सी के पास आकर रुक गये और उनमें से एक ने झांककर अन्दर देखा । फिर दांत निकालकर हंस दिया । उसकी नकल बाकी दूसरे दो आदमियों ने भी की ।

'ऐ कौन छोकरी है यह ।' इनमें से एक ने दूसरे से पूछा ।

'छोकरी नहीं छोकरा है बे ! जरा गौर से देख ।' दूसरा उसे एक तरफ धकेलते हुआ बोला ।

'ऐ-आओ हो जाए दो-दो पैग ।' तीसरे ने बाले को दावत दी ।

'मैं नहीं पीता ।' बाले ने भयभीत स्वर में कहा ।

'अरे नई मेरी जान, आओ न···।' उनमें से एक ताकतवर किस्म का आदमी अन्दर हाथ डाल के बाले को कोट के कालर से घसीटने लगा और दूसरे ने टैक्सी का दरवाजा खोल दिया बाले ने हाथ पैर ढीले कर दिये और एक ही झटके से बाहर आ गया ।

'चलो न अन्दर पियेंगे थोड़ी-थोड़ी ।' कदआवर आदमी उसकी आंखों के सामने उंगली नचा कर बोला ।

'यहीं पी लो, थोड़ी सी ।' यह कहते हुए बाले ने अचानक और इतनी जोर से बाएं हाथ का थप्पड़ उसके मुंह पर मारा कि वह लड़खड़ा कर पीछे हट गया ।

'अरे वाह, भाई तो फुलझड़ी निकले ।' दूसरा यह कहकर बाले की तरफ बढ़ा ही था कि बाले का घूंसा उसकी नाक पर पड़ा और वह 'ओ' की आवाज गले से निकालता हुआ पीछे जा गिरा । लेकिन इतनी देर में तीसरा छलांग मार कर बाले पर आ गया और दोनों गुत्थमगुत्था हो गये । इनकी सहायता को अन्दर से भी दो आदमी निकल आए और वह पांचों मिलकर बाले को काबू कर लेने में सफल हो गए । या सम्भव है उसने जान बूझ कर इन्हें ऐसा करने का अवसर दिया हो ।

● ●

अन्दर से यह एक बड़ा सा हाल था । यहां लकड़ी की नई, पुरानी मेजें बिखरी हुई थीं और लोग बोतलें, गिलास और प्याले सामने रखे पी रहे थे । एक आदमी उस चबूतरे पर बैठा था, जिस पर शराब के बैरल रखे थे और सारा हाल शराब की बू से बसा हुआ था । वह उन मेजों के बीच से गुजरते रहे । बाले को इस तरह उन्होंने कंधे पर उठाया हुआ था, जैसे किसी की अर्थी ले जा रहे हों और बाले ने भी हाथ पैर ढीले कर दिये थे ।

दूसरी तरफ की दीवार में एक दरवाजा था जो बन्द था । बाहर काल बैल का बटन लगा हुआ था । जिसे दबाके कुछ सैकन्ड बाद दरवाजा खुल गया और एक मोटे सांवले रंग के अधेड़ आदमी ने बाहर झांका ।

'ले आये हैं ।' इन आदमियों में से एक ने कहा—'यही है ।'

'अन्दर आओ ?' और सिर्फ चार आदमी बाले को थामे

उस दरवाजे में दाखिल हो गये। बाले ने इस समय देखा। वही ड्राईवर उसे देखकर मुस्कराता हुआ बाहर जा रहा था।

यह एक तंग राहदारी थी जो एक दूसरे दरवाजे पर समाप्त हुई थी। यह दरवाजा इस समय खुला हुआ था। यहाँ बाले को नीचे उतार दिया गया और उनमें से एक ने जेब में से चाकू निकाल कर उसे खोलते हुए उसकी नोक पीछे से बाले की गर्दन पर लगा दी।

'चलो अन्दर।' वह चाकू की नोक पर थोड़ा सा जोर देकर बोला।

'अरे, चाकू तो हटाओ। चल तो रहा हूँ।' बाले ने भयभीत सी आवाज में कहा।

'नहीं, यह तुम्हारी गर्दन साफ करने के लिए है।' वह आदमी फिर बोला।

बाकी लोग वहीं रह गये। सिर्फ उस सांवले से मोटे आदमी के पीछे वह इस चाकू वाले के साथ इस दरवाजे में दाखिल हुआ।

अन्दर बाले ने देखा। एक भयानक से चेहरे वाला ग्रांडिल आदमी जिसकी आंखें छोटी-छोटी, लेकिन चमकदार और माथा चौड़ा था। एक सोफे पर नीम दराज इसे घूर रहा था। उसके सामने तिपाई पर एक ह्विस्की की बोतल और एक गिलास के अतिरिक्त एक चीनी की प्लेट में तली हुई मछलियां रखी हुई थीं।

'हुम।' वह मुंह चबाते हुए बोला—'तुम कौन हाय!' उसने बाले को ऐसी नजरों से देखा जैसे कोई पहाड़ गुलेहरी से तुलना कर रहा हो।

'मैं बहुत गरीब आदमी हूँ उस्ताद।' बाले ने उसके सामने दोनों हाथ जोड़ दिए।

'उस्ताद! ओ···हा···हा···हा···हा।' वह कहकहा मार कर हंस पड़ा।

'मक्खन बाजी नईं मांगता, कौन है तोम। सीदा-सीदा बोलो—नई तो तुम्हारा खरामा हो जायेगा।'

'मैं एक अखबार का रिपोर्टर हूँ। मुझे पचास रुपया तनख्वाह मिलती है। एक अदद बीवी और दस बच्चे हैं। मैं बहुत गरीब आदमी हूँ।'

'गरीब? हूँ और गर्म सूट पैन्ता है।'

'ये तो चोर बाजार से पाँच रुपया में लिया था उस्ताद।'

'फिर वी, हम हुस्ताद-वुस्ताद नईं है। हम विक्टर है विक्टर। चोम्बल गढ़ बादसा का हम, क्यों भोला।' वह शराब के नशे में अपने आदमी की तरफ देखते हुए बोला।

'बिल्कुल बास! आपका कौन सामना कर सकता है।' उस आदमी ने जल्दी से पुष्टि की।

'अभी तुम बताओ, और काये को आया।'

'मैं कहां आया। यह तो ये लोग जबरदस्ती पकड़ कर लाये हैं मुझे।' बाले ने मासूमियत से कहा।

'छोकरी का माफक मासूम मत बनो।' एकाएक विक्टर तेवर बदल कर गुर्राया—'तुम संगम काये को गया था।

'अरे वह···वह तो वहां एक मोटा आदमी है न। उसके लिए हमारे अखबार में खबर आई थी कि उसका कई लाख का बेड़ागर्क हो गया। उसका बयान लेने गया था।'

'जी॰ आर॰ पी॰ में काये को गया था?'

'रिपोर्ट लेने।'

'भोला, पितम्बर को बुलाओ।' वह अपने आदमी से सम्बोधित हुआ जो आदेश मिलते ही चला गया और एक मिनट बाद

ही जब लौटा तो उसके साथ एक आदमी और था। ये एक इकहरे शरीर का लम्बा सा आदमी था जिसकी शकल लम्बूतरे चेहरे के कारण भयानक सी लगती थी।

'यस बास !' वह सामने आकर बोला।

'उसको देखो। कौन से खाते का आदमी है।' विक्टर ने उसे हुक्म दिया और वह बाले को करीब से घूरने लगा। कुछ सैकण्ड तक इसे ध्यानपूर्वक देखने के बाद उसने नफी में सिर हिला दिया—'किसी खाते का नहीं ?'

'अच्छी तरह देखो।'

'मेरी नजरें धोखा नहीं खातीं।'

'जाओ ?' विक्टर ने उन सबको चले जाने का इशारा किया और वह बाहर निकल गया। सिर्फ बाले ही अकेला रह गया।

'ठीक-ठीक बोलो ? तुम काए को इदर आया है।' वह राजदराना लहजे में बोला।

'धन्धा करने।' बाले ने लापरवाही से कहा।

'कैसा धन्धा ?' उसका लहजा भी राजदराना था।

'संगम में बड़े-बड़े लोग ठहरते हैं। बस समझ लो।'

'पर तुमको मालोम नईं कि शेर के घर में लोमड़ी सिकार नईं कर सकता।' बिक्टर ने शेर के शब्द पर सीना ठोंकते हुए कहा।

'मगर शेर के शिकार में लोमड़ी का हिस्सा होता है।'

'हिस्सा नईं। झूठा···शेर का झूठा।'

'यूंही समझ लो।'

'कौन काम करता तुम ?'

'जेब की सफाई और अवसर मिले तो घर भी साफ।'

'तुम्हारा नाम।'

'बाला बाख्तर।'

'तुम को दो सौ रुपया पंगार मिलेगा, मंजूर है।'

'बहुत कम है।'

'पहल काम दिखाओ, फिर डबल।'

'अच्छा ?'

तो कल से इदर आ जाओ। मगर याद रखो आँ। विक्टर से धोका किया और मामला साफ।' विक्टर ने उसे गला काट देने की धमकी देते हुए कहा।

'एडवांस मिलेगा कुछ।'

'लो, बाकी काम शुरू होने पर।' विक्टर ने जेब से दस दस के पांच नोट निकाल कर उसे दे दिये।

बाले ने नोट जेब में डालकर एक बार सरसरी नजर से कमरे का जायजा लिया और बाहर निकल आया।

बाहर विक्टर के आदमी मौजूद थे। वह अब इसे देखकर मुस्करा दिये।

'अपना झगड़ा खत्म। अब हम साथी हैं।' उनमें से एक ने इससे हाथ मिलाते हुए कहा।

'ठीक है। लेकिन अगर तुम बहादुरों की तरह मुझसे लड़ते तो मैं तुम में से दो की तो चटनी बना देता।

'अरे छोड़ो न यार ! रात गई बात गई।' दूसरे ने बात काट कर कहा।

'तुम्हारा नाम क्या है ? बाले ने उसी से पूछा।

'राजा राम।'

'और तुम्हारा।' बाले ने दूसरे से पूछा।

'जसवन्त···।'

'अच्छा, अब कल मिलूंगा।' यह कहता हुआ वह उनके दरम्यान से गुजर कर बाहर निकल गया।

उसके चले जाने के बाद विक्टर ने अपने कमरे का दरवाजा बन्द कर दिया और इस कमरे का एक दूसरा अन्दरूनी दरवाजा खोलकर एक अन्धेरे कमरे में प्रविष्ट हो गया। यहां की लाईट आन करते ही कमरा रोशन हो गया और विक्टर ने एक कोने में रखे हुए रेडियो ग्राम के निचले भाग में लगे हुए एक बटन को दबा दिया, जिसके साथ ही निचले भाग में एक दराज पैदा हो गई और विक्टर ने उसमें हाथ डाल कर टेलीफोन सैट बाहर निकाल लिया। अब वह किसी को काल कर रहा था। कुछ देर बाद ही से रिसीवर पर किसी की आवाज सुनाई दी।

'हैलो बास, मैं विक्टर बोल रहा हूँ।' साफ और सुलझे हुए हिन्दोस्तानी माऊथपीस पर वह बोला।

'विक्टर उस आदमी का क्या हुआ ?'

'बास, मैंने उसकी शनाख्त कर ली थी, लेकिन वह किसी खाते का आदमी नहीं है।'

'तुम गधे हो, वह किसी अखबार का रिपोर्टर है और अखबारों के रिपोर्टर सी० आई० डी० से ज्यादा खतरनाक होते हैं।'

'मगर वह तो अपने धन्धे का आदमी निकला बास, संगम में जेबें साफ करने आया है और मैंने उसे काम दे दिया है।'

'बकवास मत करो, वह बिल्कुल इस लाईन का आदमी मालूम नहीं होता, बहर हाल उसे उस मुगालते में रखो कि तुम उसे अपनी लाईन का आदमी समझ रहे हो और इस अरसे में उससे कोई अपराध कराके उसे यहां की पुलिस के हवाले कर दो।'

'ओ० के० बास।'

'और वह तीन लाख तुम आपस में बांट लो, मुझे जरूरत नहीं है, मगर खबरदार किसी को शिकायत न होने पाये।'

'थैंक्यू वैरी मच, मैं सब समझ गया।' विक्टर खुश होकर बोला लेकिन दूसरी तरफ से इसका शुक्रिया वसूल किये बगैर ही लाईन बन्द हो गई।

हुस्न दो तरफा

रात के खाने पर प्रिंस नरसिंह गढ़ ने होटल के कई नये मित्रों को निमन्त्रित किया था। उनमें शौकत भी शामिल था। हिज हाईनेस ने उसे जोहरा के साथ आने का निमन्त्रण दिया था, लेकिन शौकत उसे नहीं लाया। बल्कि वह आ गई थी। उसे शौकत की इस हरकत पर गुस्सा आ गया था, वरना शायद न भी आती। शौकत को सीट प्रिंस के पास ही दी गई थी और जोहरा को प्रिंस के दायीं तरफ। लेकिन चूंकि वह बाद में आई थी इस लिए उस पर एक दूसरी लड़की बैठी थी। इस लड़की से प्रिंस की दोस्ती अभी शाम को ही हुई थी। वह होटल के रूम नम्बर उन्तालीस में अकेली ही ठहरी हुई थी। इसने बताया कि इसका भाई इसे यहां छोड़कर किसी जरूरी काम से कलकत्ता गया है और उसकी वापसी तक इसे यहीं ठहरना होगा। इस लड़की ने अपना नाम नैना वाल्टर रुफ बताया था जो शौकत के हिसाब से नैना वाटर प्रूफ/ही हो सकती थी वह सफेद चमड़ी और बड़े खूबसूरत नक्शों निगार वाली देसी ईसाई लड़की थी। जिसकी पिछली पुश्तों में यकीनन किसी का

सिलसिला सफेद फाम नस्ल से मिलता होगा। उसने घुटनों से नीचे प्याजी रंग का साया पहन रखा था और उसके सिर के बाल सुनहरी मायल थे। आंखें खुली हुई और पुरकशिश थीं। दांत बारीक और नाक पतली थी। उसके पतले-पतले होंठ जिन पर हल्की सी सुर्खी झलक रही थी। बहुत खूबसूरत मालूम होते थे। प्रिंस ने इसे शाम को पहली ही बार देखा था, हालांकि वह उस होटल में कल से ठहरी थी। शाम के समय क्योंकि रीडिंग रूम में जगह नहीं थी इसलिए स्वयं ही प्रिंस नरसिंह गढ़ वाले सोफे पर उसकी आज्ञा से बैठ गई थी और वहीं से उनमें परिचय हुआ था। प्रिंस के सेक्रेटरी को शायद इन रंगीन प्रोग्रामों से कोई दिलचस्पी नहीं मालूम हो रही थी। वह इस लड़की को हकारत की नजरों से घूर रहा था, लेकिन प्रिंस का अन्दाज ऐसा था कि जैसे वह इसमें दिलचस्पी ले रहा हो।

'यह खाइये न, यह झींगे हैं। मैंने खासतौर पर पकवाये हैं।' प्रिंस ने एक प्लेट उसकी तरफ बढ़ाते हुए पेश कर दी।

'झींगर ? यह क्या चीज होती है ?' उस लड़की ने मासूमियत से पूछा।

'अरे हाय, यही न पूछिये। हिन्दुस्तान में इन्हें झींगे कहते हैं, लेकिन हमारे यहाँ तो यह विश्वास है कि ऊपर वाले ने अगर दुनिया में कोई बेश बहा नेमत उतारी है तो बस यही।'

'क्या यह इतने स्वादिष्ट होते हैं ?'

'बिल्कुल।'

लड़की ने प्रिंस के इसरार पर प्लेट में से एक चमचा भर तले हुए झींगे उठा लिये और प्रिंस ने प्लेट अब शौकत की तरफ बढ़ा दी। झींगों पर नजर पड़ते ही वह तरह-तरह से मुंह बनाने लगा।

'शौक फरमाइये न।' हिज हाईनैस ने उससे इसरार किया।

'अल्ला आपी को मुबारिक करे। मुझे इसकी शक्ल से कै आती है।' शौकत ने जवाब दिया।

'यह केसर की कदर क्या जानें हजूर। प्रिंस का सेक्रेटरी बीच में बोल उठा।'

'अरे हां।' शौकत हाथ उठाकर बोला। 'केसर जैसे देकाईं नई है।'

'नहीं, नहीं जरूर देखे होंगे, बल्कि खेत के खेत देखे होंगे।' प्रिंस ने स्वयं ही शौकत की पुष्टि कर दी।

'और नई तो क्या, हूँ...।' शौकत ने यह कह कर मुंह फेर लिया।

'आपकी साथी बड़ी चुप चाप बैठी हैं मिस्टर शौकत।' प्रिंस का इशारा जोहरा की तरफ था।

'नई तो क्या उछलने कूदने लगे। शरीफ खातूनें (स्त्रियां) ऐसी ही बैठती हैं।' शौकत ने जोहरा की तरफ से उत्तर दिया, लेकिन जोहरा उसे खा जाने वाली नजरों से घूर रही थी। शौकत ने इसे दावत में साथ न लाकर इसकी बेइज्जती ही तो की थी।

'और मिस्टर शौकत मैंने सुना है किसी ने आपके तीन-चार लाख रुपये चोरी कर लिये।' प्रिंस ने खाते-खाते शौकत से दूसरे विषय पर वार्ता छेड़ दी।

'मेरी किस्मत नई ले गया साला, अल्ला के फजल से ऐसे कई लाख मेरी जेब में रहते हैं।' शौकत ने फखरिया अन्दाज में प्रिंस पर अपनी अमीरियत का रोब जमाने के लिए डींग हांकी।'

'हाँ।' प्रिंस का सेक्रेटरी फिर बोल उठा। जब खुदा मेहरबान तो गधे पहलवान।'

'कौन ? यानी के...क्या कहा अभी किसको...।' शौकत ने

चौंककर उससे प्रश्न किया और प्रिंस अपने सेक्रेटरी को घूरने लगा।

'नईं, मैं समझा कि गधे का कुच।' शौकत ने किसी कद्र झेंपते हुए अन्दाज में कहा।

इसकी इस हरकत पर आस पास बैठे हुए कुछ मेहमान मुंह फेर कर हंसने लगे लेकिन शौकत ने नहीं देखा, दूर की सीटों वाले प्रिंस और शौकत की इस वार्ता से बेनयाज खाने में व्यस्त थे।

'शौकत साहब काफी धनवान मालूम होते हैं।' प्रिंस के करीब दूसरी तरफ बैठी हुई लड़की नैना वाल्टर रूफ ने शौकत को अर्थ भरी नजरों से घूरते हुए कहा।

'इसमें क्या शक है, जिस व्यक्ति को तीन-चार लाख का गम न हो।' प्रिंस ने कहना चाहा।

'काये का गम तम···।' शौकत ने बात काट दी। समझ लिया एक ठेके में नुकसान हो गया।'

'बड़े जिन्दा दिल हैं सचमुच आप···मैं इस जगह होती तो मेरा हार्ट फेल हो जाता।' नैना ने शौकत से बेतकल्लुफ होते हुए पलकें झपका कर कहा।

'हुश्त, इसमें हार्ट मार्ट काये को फेल होता···चला गया तो फिर कमा लेंगे।' शौकत ने सीधे इस लड़की से सम्बोधित होकर उत्तर दिया, लहजा अब भी फखरिया था।

'मगर मुझे अफसोस यां की पुलिस पे है कि चोर का पता नईं लगा सकी।' इसने आगे कहा।

'बड़ी नाकारा हो गई, आज कल की पुलिस।' नैना अब प्रिंस को भूल कर शौकत से ही बातें कर रही थी।

'हरामखोरी की जो चाट लग गई है।' शौकत ने जले हुए लहजे में कहा।

'मिस्टर शौकत आप, एक देश के कानून के रक्षकों की बेइज्जती कर रहे हैं, ऐसा न हो कोई पुलिस वाला सुन ले।' हिज हाई नैस ने शौकत को डराया।

'खुद के से सुन ले तो डर पड़ा है क्या किसी का। मेरे तो रुपये गये हैं। मैं जरूर क्यूंगा।'

'हाँ हाँ जरूर कहिए। मैंने तो यूं ही एहसास दिलाया था।'

'मुझे सचमुच आपके नुकसान पर बड़ा अफसोस है।' नैना शौकत की तरफ देख कर अक्ल व होश को नीलाम पर चढ़ा देने वाली मुस्कराहट के साथ बोली।

'शुक्रिया शुक्रिया···। शौकत ने गर्दन हिलाई और फिर नैना को इस प्रकार देखने लगा जैसे पहली बार इसकी खूबसूरती का एहसास हुआ हो।

'आप सचमुच हातिमताई का कलेजा रखते हैं।' प्रिंस ने भी प्रशंसा कर दी।

'अजी मैं किस लायक हूँ यू आर हाईनेस।' शौकत ने नम्रता का इजहार किया।

'आपकी नालायकी ही आपकी खाकसारी की दलील है।' प्रिंस का सेक्रेटरी बोल पड़ा।

'कौन··· मैं नईं मियाँ खां, मैं खाकसार माकसार नईं हूँ।'

'भई जोहरा, आप क्यों खामोश हैं?' प्रिंस अब शौकत की स्टेनों से सीधा सम्बोधित हो गया।

'लो बोलो, अब काय को नईं बोलोगी।' शौकत ने जोहरा की तरफ देखकर तीर से जले हुए लहजे में कहा।

'जी वह जरा मेरे सिर में दर्द है।' जोहरा ने प्रिंस से बहाना बनाया।

'जरूर होगा, और नहीं हुआ तो अल्लाह चाहे अब हो जायेगा।' शौकत होंठों के बीच बड़बड़ाया।

'सिर दर्द की गोलियां मंगवा दूं ?' प्रिंस ने पेशकश की।

'जी नहीं शुक्रिया। अब इतनी तकलीफ नहीं है।'

शौकत को प्रिंस का जोहरा से सीधे सम्बोधित होना अच्छा नहीं लगा और जोहरा भी उससे सम्बोधित हो गई थी। इसलिए वह कुर्सी पर बेबसी से पहलू बदलने लगा। फिर एक मिनट बाद ही उठ खड़ा हुआ।

'आप कहाँ चले ?' प्रिंस ने उसे टोका।

'जी वह, यानि कि जरा लघुशंका को जाता हूँ।' शौकत ने बौखलाये हुए अन्दाज में उत्तर दिया।

'देखिए आप जबरदस्ती महफिल छोड़ रहे हैं।' प्रिंस ने साफ गोही से काम लिया। जिस पर शौकत भड़क उठा।

'मेरी खुशी, छोड़ूं या पकड़ूं। मैं आप की रैयत नई हूँ।'

'ओह हो, आप तो शायद नाराज हो गये हैं।'

'काये की नाराजगी माराजगी।' शौकत ने जोहरा को शरमगी नजरों से घूरते हुए कहा।

'बस मेरा मूड़ नई है।' यह कह कर शौकत उठा और बगैर इजाजत लिये हाल से बाहर निकल गया।

'मेरा ख्याल है मैं इन्हें दुरुस्त कर लूंगी।' नैना यह कहती हुई शौकत के पीछे ही अपनी सीट से उठ बैठी।

शौकत बाहर आकर बरामदे में खड़ा हो गया था बाहर बाग में नये लगाये जाने वाले पौधों पर माली काम कर रहा था। शौकत किसी गहरी सोच में डूबा हुआ था कि पीछे से कन्धे पर रखे जाने वाले एक नर्म व नाजुक हाथ ने उसे चौंका दिया उसने मुड़ कर देखा। नैना वाल्टर उसके पीछे खड़ी थी।

'आप बहुत गर्म मिजाज मालूम होते हैं।' नैना ने मुस्कराते हुए कहा।

'प्रिंस होगा अपने घर का। मैं भी किसी से कम नई हूँ।'

'क·· क···क्या बच्चों जैसी जिद है। जाने भी दीजिए न उसे।'

'तो मैंने कां पकड़ रखा है साले को।'

'आइये·· मैं आपके रूम तक छोड़ आऊं। आप गुस्से में हैं।' वह शौकत के बाजू को थाम कर चलने लगी और शौकत का सारा गुस्सा हवा हो गया। उसकी मेंहदी लगी उंगुलियों के स्पर्श से ही उसका टेम्परेचर नार्मल हो गया और जब चलते-चलते झोंक में एक बार उसके गुदगुदे शरीर से शौकत टकराया तो इसे कश्मीर से सम्बन्धित शहनशाह जहांगीर का शेर याद आने लगा। हालांकि वह स्वयं कभी इस शेर को सही अदा कर नहीं पाया था।

'मिस नैना आप भोत अच्छी हैं। आपका शौक्रिया।'

'मुझे भोले भाले सादा मिजाज लोग पसन्द हैं। यह शानदार शहजादे तो सिर्फ ढोल के पोल ही हुआ करते हैं।' नैना ने उसके साथ चलते हुए कहा।

'एकदम सच···पोल के ढोल तो होते ही हैं साले।'

'आप क्या यहां स्थायी रूप से ठहरेंगे ?' नैना ने उससे पूछा।

'कौन·· मैं···नई तो···मैंने तो यहाँ पैंतीस लाख का ठेका लिया है। अलग कहीं बंगला लूंगा।' शौकत ने बताया।

'पैंतीस लाख।' नैना ने हैरत से दोहराया—'तब तो आप भी बड़े आदमी हैं।' यह कहकर उसने भोले पन से मुंह लटका लिया।

'क्यों... काये को ?' शौकत ने चौंक कर पूछा ।

'मुझे बड़े आदमियों से हमेशा डर लगता है !'

'ऐलो...इसमें डरने की क्या बात है, अच्छा लो मैं छोटा सा आदमी हूँ बस... ऐ...इत्ता सा ।' शौकत ने दोनों हाथों की हथेलियों के बीच बालिश्त भर का फासला देते हुए बताया ।

'मुझे आपकी बातें बहुत पसन्द हैं ।' नैना ने उसे होश भुला देने वाली नजरों से देखते हुए कहा ।

'सच...सच... यानि कि वाक्या ?'

'हूँ.. ओह ।' नैना ने इस बात में सिर हिलाया ।

'आप भी भोत वो हैं मुझे, यानि कि पसन्द ।' शौकत ने किसी कुंवारी लड़की की तरह शरमाते हुए कहा ।

'वन्डर फुल...तब तो हम एक दूसरे के गहरे दोस्त बन सकते हैं ।'

'क क...काये को नई...जरूर...जरूर ।'

शौकत अपने रूम के सामने पहुँच कर रुक गया ।

'लेकिन सुना है आप ठेके के लिए जो रकम लाये थे वह तो किसी ने गायब कर दी है ।' लड़की ने हमदर्दी से कहा ।

'पूरे तीन लाख रुपया ।' शौकत ने तीन उंगुलियों से अंक समझाये ।

'अगर लाख दो लाख में काम चल सके तो आप मुझसे लीजिए बाद में लौटा दीजिएगा ।' लड़की ने बड़े सहानुभूति भरे अन्दाज में यह शब्द कहे ।

'अरे नहीं...लो–कि भोत भोत शौक्रिया इस मेजबानी का, मगर लाख दो लाख तो मैं वैसे भी साथ रखता हूँ । मैंने ड्राफ्ट से यहां पाँच लाख की रकम बैंक मे ट्रांसफर करा ली है । कोई फिक्र की बात नहीं ।'

'मेरे भाई अपनी रकम मेरे ही पास रखते हैं मैंने सोचा क्या हर्ज है जो आपके काम आ जाये ।'

'अल्लाह कसम...आपका भोत आभारी और मम्नून हूँ ।'

'नई यानि कि वह मामून...लाहौल विला कूवत ।'

'मम्नून ।' वह हंस पड़ी–'उर्दू भी जानती हूँ थोड़ी सा ।'

'कभी कभी भूल जाती हूँ मैं ।'

'कोई बात नहीं, अच्छा अब आज्ञा दीजिये ।' नैना बाल्टर ने विदा होते हुए कहा और शौकत उसे रोक भी न सका । पहली मुलाकात थी न जाने वह ज्यादा बेतकलुफी पसन्द करती या न करती ।

फराड

'बाला बख्ता...तुमको पहला काम दिया जाता है । ठीक २ हुआ तो मौज करोगे...नइ तो ।' विक्टर ने बाले को सामने बुला कर हिदायत देनी शुरू की ।

'समझ गया...समझ गया, मगर मेरा नाम बाला बाख्तर है ।'

'तुम्हारा नाम बहुत टेढ़ा है, कुछ सीधा-सीधा काय को नइ रखता ।'

'मां बाप की गलती समझ लो ।'

'तुम्हें एक आदमी के बैग पर हाथ मारने का है । आज वह मर्कन टाईल बैंक से रकम (धन) निकालेगा ।' विक्टर ने इसे बताया ।

'कौन है वे आदमी ?'

'वह मोटा सेठ, तुम जिसका बयान लेने संगम होटल गया था।'

'अरे वह ? बहुत अच्छे मैं भी तो इसी चक्कर में था।'

'अकेले नइ चलेगा यह चक्कर और पुलिस भी उसके पीछे होगी। तुमको जैसा बोला जायेगा वैसा करना होगा।'

'ओ० के०·· लेकिन रकम कितनी होगी ?'

'लाख···दो लाख···चार लाख···जितनी भी हो यह देखना तुम्हारा काम नई।'

'हिस्सा तो तगड़ा मिलेगा न।'

'जैसा काम वैसा दाम।'

'अच्छा प्रोग्राम क्या है ?'

'हमारा एक आदमी नशे में झूमता हुआ उससे टकरायेगा दूसरे आदमी बाहर बैंक के आस पास मौजूद होंगे और सामने करीब ही एक कार ड्राईवर सहित मौजूद रहेगी। तुम उसमें उस मोटे आदमी के हाथ से बैग छीन कर तुरन्त उस कार में बैठ जाना और अगर कोई पीछा करना चाहेगा तो हमारे दूसरे आदमी बीच में आ जाएंगे।'

'बस···।'

'अभी इतना ही काम करना होगा।'

'कुछ एडवांस।'

'ओह···फिर वही···खैर लो।' विक्टर ने यह कह कर जेब से सौ रुपये का एक नोट निकाल कर बाले को दे दिया। बाले ने उसे दो उंगलियों से सलाम किया और बाहर निकल आया। उसके बाहर निकलते ही कमरे का दरवाजा बन्द हो गया और अन्दर विक्टर का कहकहा गूंजने लगा।

●●

एक सशस्त्र पुलिस कांस्टेबिल की हिफाजत में शौकत अमी मर्कन टाईल बैंक के दरवाजे से निकल कर अपनी किराया पर ली हुई कार की तरफ बढ़ ही रहा था कि सरकारी लालटेन के खम्भे से टिका हुआ एक शराबी उससे टकराया।

'देखकर चलो न मेरी जान-आंखें नइ दी है खुदा ने।' शौकत उस पर बिगड़ गया।

'हे, हे, उनको गाता है ग्यार पर गोसा, हिच, हिच।' शराबी जो कोई गुण्डा किस्म का मालूम होता था झूमता हुआ मिची मिची आंखों से इसे देखकर बोला।

'ऐ दूर हटो।' कांस्टेबिल ने बन्दूक की नाली से शराबी को एक तरफ धकेलते हुए तेज स्वर में कहा।

'काये तो--फराना यार है यह हिच, अलतू भाई फलतू भाई।'

शराबी कांस्टेबिल की तरफ आकर्षित होते हुये बोला मगर उसी समय शौकत बाले को करीब आता देख कर कुछ कहने ही वाला था कि बाले ने इससे आंख मार दी और वह शशोपंज में पड़कर चुप रह गया।

बाले ने करीब आते ही झटके से शौकत के हाथ से बैग छीन लिया और दोबारा उसे इशारा किया जिसका अभिप्राय शायद शौकत समझ गया। वह चीखने लगा।

'अरे मेरा बैग, एक लाख रुपये।' कांस्टेबिल शराबी को छोड़कर बाले के पीछे दौड़ पड़ा और उसी समय सामने कुछ दूर खड़ी हुई एक काली कार स्टार्ट होकर आगे बढ़ने लगी।

'अरे रुक जाओ नहीं तो गोली मार दूंगा।' कांस्टेबिल ने पीछे से बाले को ललकारा।

राह चलते लोग इस गड़बड़ को देखकर ठहर गये। और कुछ भाग गये। दूर बैंक का संतरी भी दौड़ कर शौकत के करीब आ गया लेकिन इसी समय एक फायर हुआ और कांस्टेबल एक झटके के साथ बन्दूक सहित सड़क पर लुढ़क गया। वह कार बाले के नजदीक पहुँच गई। अन्दर बैठे हुए आदमी ने जल्दी से बाले के हाथ से बैग छीन लिया। मगर जब बाले उचक कर कार में सवार होने लगा तो उसकी नाक पर एक घूंसा पड़ा। और वह नीचे लुढ़क गया। कार झपाके के साथ आगे निकल गई। बैंक का संतरी और कुछ आदमी इस कार के पीछे दौड़ना ही चाहते थे कि फुटपाथ की तरफ से कुछ आदमी दौड़ते हुये इनके बीच आ गये। वे कांस्टेबल की लाश की तरफ दौड़े थे। कुछ आदमियों ने फौरन बाले को बाजुओं से थाम लिया।

'अरे कम्बख्तों मुझे क्यों पकड़ते हो ?'

'गोली तुमने चलायी पुलिस वाले पर।' उनमें से एक गुर्रा कर बोला।

'ठहरो तो जरा।' बाले ने भीड़ को चीर कर शौकत की कार की तरफ दौड़ने की कोशिश की मगर उसे फिर पकड़ लिया गया।

ठीक इसी समय एक पुलिस जीप आ पहुँची। शौकत पागल की तरह खड़ा यह सब कार्यवाही देख रहा था। वह कुछ कहना ही चाहता था कि बाले ने फिर उसे इशारा कर दिया और वह चुप रह गया। पुलिस ने आते ही लोगों के बताने पर बाले को पकड़ लिया। लेकिन बाले उस समय चौंका जब जीप में आये हुये इन्सपेक्टर ने उसकी तलाशी लेते हुये एक इशारिया छः का रिवाल्वर निकाला। उसके फरिश्तों को भी यह गुमान न था कि हालत ये रंग धारण कर लेंगे। इन्स्पेक्टर ने पिस्तौल खोलकर

देखा। सचमुच इसमें एक गोली कम थी। इसका बैरल अब तक गर्म था।

'तो तुमने यह अन्धेर मचा रखा है इतने दिनों से।' इंस्पेक्टर उस पर दांत पीसते हुये बोला।

'इंस्पेक्टर साहब आप पहले इन आदमियों को पकड़ लीजिए वे मेरे साथी हैं।' बाले ने फुटपाथ की तरफ से दौड़कर आये हुये आदमियों की तरफ इशारा करके कहा। इन्स्पेक्टर इस इन्साफ पर चकरा गया कि इन आदमियों को पकड़े या नहीं। मगर खुद इनमें से एक बोल पड़ा।

'साहब-यह हमें फंसाना चाहता है। क्योंकि पुलिस के आने से पहले हमने इसे भागने से रोका था।

इतने में शौकत भी आगे बढ़ आया। वह कुछ इन्सपेक्टर से कुछ कहना ही चाहता था लेकिन बाले ने फिर इशारा कर दिया। बाले ने जो कुछ सोचा था कि यहां से फरार होकर पुलिस को अपने पीछे लगाकर विक्टर के निवास स्थान पर पहुँचा दे। और इस तरह विक्टर और उसके आदमियों को गिरफ्तार करा दे। लेकिन इसे खबर न थी कि विक्टर स्वयं इसके लिये इलाज ढूंढ चुका है।

'इन्सपेक्टर साहब, सिर्फ एक मिनट के लिये मेरी बात सुन लीजिये।' उसने इन्सपेक्टर को एक तरफ चलने का इशारा किया और इन्सपेक्टर उसका बाजू थामे थामे भीड़ से निकलकर एक तरफ आ गया। यहां बाले ने जेब से अपना कार्ड निकाल कर उसे कोट के कालर के साथ अन्दर की तरफ लगा कर इन्सपेक्टर को दिखाया। वह चौंक पड़ा।

'यह मामला क्या है आखिर ?' उसने बाले को घूरते हुए पूछा।

'मामला कुछ लम्बा है मैंने जिन आदमियों की तरफ इशारा किया है आप उन्हें गिरफ्तार करके मेरे साथ साथ पुलिस स्टेशन भेज दीजिये और जिस भांति शीघ्र हो सके इस पते पर छापा मारिये । विक्टर और उसके कुछ आदमी वहां मौजूद होंगे । वह इस केस के लिये बड़ा महत्व रखते है ।' बाले ने सरगोशी के लहजे में कहा ।

'इन आदमियों ने कोई कनूनी जुर्म नहीं किया है जो इन्हें पकड़ा जाये । लेकिन मैं आपको जरूर गिरफ्तार कर रहा हूं । पिस्तौल आपकी जेब से बरामद हुआ । लाश सामने पड़ी है । पुलिस के लिए इतना काफी है और–' चल कहते हुये वह बाले को सन्देह की नजरों से घूरने लगा ।

'और हो सकता है कि यह शिनाख्ती कार्ड भी एक फ्राड हो ।' इन्सपेक्टर ने बुरा सा मुंह बनाकर कहा और बाले अजीब सी मुसीबत में फंस गया ।

उसने इसे जिस कद्र विश्वास दिलाने की कोशिश की इन्स-पेक्टर का सन्देह उतना ही बढ़ता गया ।

'मुझे धमकी देना चाहते हो मरदूद । फाँसी पर चढ़वाये बिना न मानूंगा ।' वह बाले पर ही गरजने लगा ।

'अरे हां–भोत देखे, फाँसी क्या तुम सजा ही करा देखो । मेरा भी नाम बाले बाख्तर है ।' बाले ने अपना लहजा फिर बदल लिया ।

'ओह तो आये न असलियत पर, ले जाओ इसे ।' इन्सपेक्टर ने बाले की तरफ इशारा करके अपने अधीन कांस्टेबल से कहा ।

बाले को भेजकर इन्सपेक्टर लाश की तरफ उन्मुख हुआ ही था कि शौकत ने उसे जा लिया ।

'मेरी भी तो सुनिये इन्सपेक्टर साहब ।'

'ओह । मुझे सचमुच आपके दोबारा लूटे जाने का सख्त अफसोस है ।'

'मैं इन हरामजादों को गिरफ्तार किये बगैर चैन नहीं लूंगा इन्सपेक्टर ने शौकत की सूरत देखकर कहा ।

'मगर मैं इस आदमी के लिए कह रहा हूँ जिसे आपने पकड़ है वह सार्जन्ट है ।'

'मुझे मालूम है मगर कानून सबके लिये कानून है और हो सकता है वह कोई फर्जी सार्जन्ट हो ।'

और शौकत इस वाक्य के अर्थ से चक्कर में आ गया ।

● ●

इन्सपेक्टर लाश देखने के बाद शौकत से प्रश्न करने लगा लेकिन वह कोई ऐसी बात सुनने के लिए तैयार न था जो बाले के बारे में थी और शौकत ने जब यह कहा कि 'मेरे बैग में नोटों की बजाय सादे कागज थे और हमने चोरों को फंसवाने के लिये पहले ही से प्रोग्राम बनाया था ।' तो इन्सपेक्टर शौकत को भी चुभती हुई नजरों से देखने लगा ।

'तो फिर कहीं वह आपके तीन लाख वाला मामला भी गवर्नमेंट को धोखा देने के लिये नहीं था ।' वह मुंह टेढ़ा करके बोला ।

'क्या मतलब ?' शौकत ने चौंक कर पूछा ।

'मतलब साफ है । मुझे तो आप दोनों ही फ्राड किस्म के आदमी मालूम होते हैं । आपने वह तीन लाख रुपयों के गायब हो जाने का चक्कर किसी खास उद्देश्य से चलाया होगा ।' इन्सपेक्टर का लहजा तलख हो गया । 'अब तो मुझे यह भी

मालूम करना पड़ेगा कि इससे पहले आप क्या क्या गुल खिला चुके हैं ?' वह बोला ।

शौकत के लिये यह शब्द बिल्कुल आशा विपरीत थे। वह बौखला गया ।

'अरे नई–अल्लाह कसम मैं शौकत मियाँ खान जागीरदार हूँ। मेरे बाप दादा, मेरे परदादा, लकड़दादा साब जागीरदार थे। मैं खानदानी आदमी हूँ।'

'ऐसे धन्धे खानदानी लोग ही आजकल करते हैं। शानदार होटलों में ठहरने वाले किराये की मोटर कारों में घूमने वाले।' इन्सपेक्टर का इशारा इस समय शौकत की कार की तरफ था।

'अरे हां जाओ।' शौकत की खोपड़ी यकायक बहक गई।

'किसी के बाप दादा का अजारा है क्या। किराये की में घूमें या खरीदी की में। हमारा दिल, हमारी खुशी।' शौकत ने बिगड़कर उत्तर दिया।

'शटअप।' इन्सपेक्टर गरजा।

'तुम खुद–वह यानि कि शटअप।'

'मैं तुम्हें भी गिरफ्तार करता हूँ–चलो बैठो कार में।' इन्सपेक्टर ने शौकत को भी ले डाला।

और इस आशा विपरीत उत्तर ने शौकत के दिमाग का पारा और चढ़ा दिया। बाले की गिरफ्तारी से ही वह भड़क उठा था। मगर यह जानते हुए कि इन्सपेक्टर कोई बद दिमाग किस्म का सख्त आदमी है। इसने किसी तरह जबान काबू में ही रखी।

बैंक के लोग जो बाहर निकल आये थे वह इस किस्म की कार्यवाही की नौइयत ही न समझ सके और इसलिए कोई कुछ न बोला। वैसे भी यहां की पुलिस काफी रूबानियत पसन्द मालूम होती थी क्योंकि लोग एक मामूली कान्स्टेबल से कतराते नजर आते थे।

हवालात

'हजूर, यह कान्सटेबल नम्बर बारह सौ सात का हत्यारा है और यह आदमी जो पहले तीन लाख की चोरी की रिपोर्ट से पुलिस को परेशान कर चुका है कोई फराड मालूम होता है, क्योंकि इसने अपने बैग में नोटों की जगह सादे कागज रखे थे।' इन्सपेक्टर ने अपने इन्चार्ज सुपरिन्टैंडैंट के सामने बाले और शौकत को पेश करते हुए बताया।

'हुम।' सुपरिन्टैण्डैन्ट इन दोनों को बारी-बारी घूरने लगा।

'क्या यह ठीक है कि तुम्हारे बैग में सादे कागज थे।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने शौकत को चुभती हुई नजरों से देखकर पूछा।

'ए लो, तो इसमें काये का झूठ सच। वह तो इसीलिए रखे थे कि चोर साले असल रकम को चुरा कर न ले जायें।' शौकत ने बिना झिझक जवाब दिया।

'और तुम मशहूर कर सको कि तुम्हारे लाखों रुपये चुरा लिये गए।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने शब्दों को चबाते हुए कहा।

'नईं अल्ला कसम यह बात नईं।'

'फिर क्या बात है ?' सुपरिन्टैंडैन्ट गरज उठा।

'आप डांटते काये को हैं, मैं शरीफ आदमी हूँ। शौकत ने बुरा सा मुंह बना कर शिकायती लहजे में कहा।

'वह तो तुम्हारी शक्ल से प्रकट हो रहा है।' इन्सपेक्टर फिर बीच में बोला।

'इन्सपेक्टर मित्रा-इन्हें बन्द करके तहकीकात कीजिए।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने इन्सपेक्टर को हुक्म दिया।

'लेकिन जनाब।' बाले ने सुपरिन्टैन्डैन्ट को सम्बोधित किया–'कम से कम बम्बई पुलिस से एक बार पूछ तो लीजिये।'

'हमारे पास फजूल बातों के लिए वक्त नहीं हैं। एक पुलिस सर्जेण्ट को इस तरह चोरों की तरह आकर हमारे शरह में ऐसी हरकतें करने की आवश्यकता क्या थी? तुम यकीनन कोई खतरनाक आदमी हो।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने भी बाले को कोरा जवाब दिया।

'अच्छा सिर्फ एक बात की इजाजत दीजिये।' बाले का लहजा विनती पूर्ण था।

'क्या?' सुपरिन्टैन्डैन्ट गुर्राया।

'कि मैं यहां से बम्बई पुलिस के सुपरिन्टैन्डैंट खान को एक तार दे सकूं।'

'ओह?' सुपरिन्टैन्डैन्ट सोच में पड़ गया–'खैर तुम तार का मजमून लिखा दो। तार भेज दिया जाएगा और हां अगर यह भी कोई फरेब निकला तो मैं बुरी तरह पेश आऊंगा तुमसे।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने शर्त पेश की।

'जरूर।'

'दीजियेगा इसका टेलिग्राम।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने इन्सपेक्टर को हिदायत की वह कागज लेकर बैठ गया और बाले मजमून लिखाने लगा। बस संक्षिप्त कुछ शब्द।

'मुझे स्थानीय पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है, बाले।'

'यकीनन यह सुपरिन्टैन्डैन्ट खान की रद्दी की टोकरी में पहुँच जएगा, इन्सपेक्टर ने सुपरिन्टेंडैंट की तरफ मुस्कराते हुए तबसरा किया।

'तो, भाई पेशगोई भी करने लगे।' शौकत बाले की तरह देखकर आईस्ता से बोला।

'यहां की पुलिस चुगद मालूम होती है।' बाले ने भी सरगोशी के लहजे में जवाब दिया।

'और नईं तो, मुझे तो गालिब अल्ला असद खान का शेर याद आया है।' शौकत ने कहना चाहा मगर बाले ने उसे रोक दिया।

'बस-बस शायरी यहां रहने दो, ये पुलिस स्टेशन है।' और शौकत जवाब देने की बजाय मुंह बना कर चुप हो रहा, क्योंकि सुपरिन्टैन्डेन्ट उसे घूरने लगा था।

●●

'भोत असली बनते थे ना तुम?' शौकत ने पुलिस स्टेशन की हवालात में बैठे-बैठे गुसैले लहजे में बाले से कहा।

'क्या मतलब?' बाले ने सिर उठा कर पूछा।

'लो···और लो, अब मतलब भी समझाओ, यानी के जहन्नुम में कभी हवालात का मुंह नईं देखा था।' शौकत ने रूठे हुए अन्दाज में कहा।

'तो, अब तो देख लिया, आदमी को जिन्दगी में सब कुछ देखना चाहिए, इसी को तो एडवान्चर कहते हैं।'

'तेल लेने गया तुम्हारा मैन्चर-वैन्चर, हूँ, स्कीम बनाने चले थे मियां खाँ?'

'तो रो क्यों रहे हो औरतों की तरह।'

'तुम खुद, वह यानी की औरत-मौरत।' शौकत बिगड़ गया।

ज्यादा गड़बड़ करोगे तो पुलिस से कह दूंगा कि ये मोटा आदमी पूरा फराड है।

'अरे हां, बाप का राज है न, वह तो मैं ही गधा था जो तुम्हारी बात मान ली, नईं तो काये ये दिन देखता।'

'दिन कहां, अभी तो रात है।'

'उड़ा लो मिजाख, मुझे पागल कुत्ते ने काटा था, जो तुम्हें बुला लिया।'

'ऐ वाह, नेकी बर्बाद गुनाह लाजम ?'

'काये को नई, वह जो कहा है किसी शायर ने ?'

'यहाँ जी खोल कर बक सकते हो, मैं इस समय तुम्हारी शायरी सुनने के मूंड में हूँ ?'

'मैं मुल्ला दो प्याजा नईं हूँ तुम्हारा ?'

'खैर अपना शेर तो सुनाओ ?'

'अब हम यां कब तक हवालात की हवा खायेंगे।'

'जब तक खान साहब को खबर न हो जाये।'

'और जो कल ठेके की जमानत भरनी है। कोई और मार गया तो ३५ लाख का ठेका है मियां खां, मिजाख नईं है।'

'तुम्हारा टैन्डर तो मंजूर हो चुका है।

'मगर इसकी जमानत भी जरूरी है नईं तो सब बेकार।'

'अल्ला मालिक है।'

'और बेचारी मिस जोहरा का क्या होगा।'

'एश कर रही होगी होटल में, सुना है आज कल तो किसी प्रिंस पर मर मिटी है।'

'जुबान सम्भालो मियां खां, काये को मर मिटेगी, वह साला प्रिंस तो खुद रेशा खत हुआ जा रया है ?'

'क्या हुआ जा रहा है ?' बाले ने पलकें झपका कर पूछा–

'मेरा सर, तुम खुद ही तो बका करते थे।'

'ओह, रेशा खतमी ?'

'क्या मायने हुए इसके ?' शौकत खुद ही सवाल कर बैठा।

'मायने, इसके मायने हुए शरम से डूब मरना।'

'लो, इसमें काये की शर्म मर्म ?' वह साला प्रिंस आफ नरसिंह गढ़ तो मोत बेगैरत मालोम होता है।

'क्यों, क्या किया उसने ?'

'मेरे ही सामने जोहरा को घूरता है हंस-हंस के बातें करता है अ र उसे दावतें देता है।'

जोहरा तुम्हारी जागीर तो नहीं है।'

ऐ लो, स्टैनो है कि नईं मेरी।'

'और तुम उस पर एक शोहर जैसे हुकुम जताते हो ?'

'अल्ला कसम नईं, मगर वह यानी कि मैं भी तो मोहब्बत करता हूँ उससे।' शौकत ने वाक्य का आखरी टुकड़ा किसी कद्र शर्मा कर आहिस्ता से कहा।

घूंघट काढ़ लेते तो और अच्छे लगते।' बाले हंस पड़ा।

'लाहोल वला कुवत, ऐसा मिजाख अच्छा नईं लगता मुझे।'

'तो उससे शादी कर लो।'

'कर लूं ?'

'क्या हर्ज है।'

'हर्ज मर्ज तो कोछ नईं, मम···मगर।'

'मगर क्या ?'

'जरा खानदानी मामला है।'

'तो झक मारो।' बाले झुंझला गया।

'मैं सोचूंगा।'

'तो ऐसा करो–तुम उस कोने में लेट कर सोचो और मैं जरा एक नींद ले लूं। है···है, क्या मालूम था कि हवालात इतनी शांत जगह होती है। यहाँ बड़ी बेफिकरी से नींद आती होगी। यह कहते हुए बाले दोनों हाथों की हथेलियों का तकिया बनाकर लेट गया।

'वह जो कहा है किसी ने कि, बगैरत की बला दूर।'
'बस बस शायरी रहने दो, तुम जोहरा के लिए सोचो।'
'श्रां हां ?'

श्रौर वाकई शौकत श्रपना नफा नुकसान, हवालात में मौजूदगी श्रौर जबरदस्ती की मुसीबतों को भूल कर इसी एक ख्याल में खो गया। उसकी दिमागी रूह इसी तरह भटकती थी।

खान श्रा पहुँचा

संगम होटल में शौकत की गिरफ्तारी की खबर पहुँच चुकी थी। जोहरा ने रात को ही स्वयं सुपरिण्टेण्डेण्ट खान को शौकत की स्टैनो की हैसीयत से एक तार दे दिया था। क्योंकि बाले का इसे पता न था श्रौर इधर होटल में लोग उसके बारे में तरह-तरह की चय मुगोइयां कर रहे थे।

इसके साथ ही साथ होटल से दूसरा बरौनक व्यक्तित्व भी गायब था, लोग प्रिन्स नरसिंह गढ़ की कमी को बुरी तरह महसूस कर रहे थे। होटल में मौजूद कई लड़कियां श्राकर्षित व्यक्तित्व से दिलचस्पी लेने लगी थी श्रौर यह इसके बावजूद कि उसका रंग सांवला था। वह उसे उसकी हैसीयत के श्रतिरिक्त उसकी खुशमिजाजी श्रौर जिन्दादिली के लिए भी पसन्द करती थीं। उसके बिना हाल सूना-सूना लग रहा था श्रौर जब प्रिन्स के सेक्रेटरी ने लोगों को यह बताया कि प्रिन्स श्रपने एक मित्र के साथ शिकार खेलने गए हैं, पता नहीं कब तक वापस लौटे तो उसकी प्रतीक्षा करने वाले निराश से हो गए। विशेष तौर

पर नैना वाल्टर रूफ थो प्रिन्स के व्यक्तित्व से गहरी दिलचस्पी ले रही थी।

जोहरा ने शौकत की गिरफ्तारी की खबर पाने के बाद यही उचित समझा कि खान को खबर कर दे।

न जाने क्यों उसे इस स्थान की श्रजनियत के साथ यह श्रहसास हो गया था कि कुछ न मालूम लोग विश्वासनीय शौकत के दर पे श्राजाद हैं।

क्यों ? यह जानना श्रलवत्ता श्रासान न था। या सम्भव है उसका धन ही उसके लिए जान का दुश्मन बना जा रहा हो। इसने होटल के मैनेजर के द्वारा जब सैन्ट्रल पुलिस स्टेशन से शौकत की गिरफ्तारी के सम्बन्ध में मालूम कराया तो सिर्फ इतना ही बताया गया कि 'फराड का कोई केस हैं।' जोहरा उसी समय समझ गई कि शौकत के साथ कोई साजिश की गई है। वह उसकी स्टैनो ही सही लेकिन इसे शौकत की बेजरूर व्यक्तित्व से इतनी ही सहानुभूति थी जितनी किसी नजदीकी सम्बन्धी को हो सकती है। वह उसके व्यक्तित्व का श्रच्छी तरह श्रध्ययन करके इस नतीजे पर पहुँची थी कि वह श्रड़तीस चालीस वर्ष का एक बच्चा है जिसका मूड वक्ती तौर पर बदलता जरूर रहता है लेकिन है मासूम श्रौर साफ दिल। उसे खबर न थी कि शौकत के साथ बाले भी इसी चक्कर में फंस गया है श्रौर इसी कारण से वह शौकत के लिए परेशान थी। इसे सार्जेण्ट बाले की भी प्रतीक्षा थी लेकिन बाले नहीं श्राया जिससे यह सोचकर इसकी परेशानी श्रौर बढ़ गई कि न जाने इसे शौकत की गिरफ्तारी की खबर हो कि न हो। उसे रात देर तक नींद नहीं श्रायी। वह स्वयं भी श्राज श्रकेली इस श्रनजाने वातावरण में घबरा रही थी।

इन्हें ग्यारह बजे सुपरिण्टैण्डैण्ट के आफिस में बुलाया गया लेकिन आशा विपरीत हवालात के रक्षक संतरी इनसे किसी किस्म के कठोर व्यवहार से पेश नहीं आये। सुपरिण्टैण्डैण्ट के आफिस के बाहर ही वह इन्सपेक्टर भी उपस्थित था जिसने इन्हें गिरफ्तार किया था। वह अब भी इन्हें खूंखार नजरों से घूर रहा था। वह जब अन्दर दाखिल हुए तो बाले और शौकत दोनों सुपरिण्टैण्डैण्ट खान को स्थानीय सुपरिण्टैण्डैण्ट के सामने बैठा देखकर चौंक पड़े। बाले खान के सामने सीधा ही अटैंशन हो गया।

'सलामालेकुम खान साहब।' शौकत ने भी सलाम अर्ज कर डाला।

'यह क्या हमाकत की तुमने।' खान बाले की तरफ सम्बोधित हुआ।

'मैं उन लोगों को फंसाना चाहता था लेकिन वह मुझे ही फंसा गए।'

'मुझे जो रिपोर्ट मिली है उससे मैं सब कुछ समझ चुका हूं। लेकिन तुमने ऐसी हमाकत भरी योजना बनाने की बजाय स्वयं यहां की पुलिस की सहायता लेनी थी।' खान ने ऐसे लहजे में कहा जैसे कोई बाप अपने बेटे को समझा रहा हो।

'शायद यह शिकार अकेले हजम करना चाहते होंगे।' दूसरा सुपरिण्टैण्डैण्ट मुस्कराया।

'सुरागसानी के चक्कर में अक्सर ऐसी बेवकूफियां कर बैठते हैं। हालांकि ऐसे केसिस बगैर टीम वर्क के काबू में लाये जाते हैं।' खान ने सुपरिण्टैण्डैण्ट की तरफ देखकर कहा।

'सुपरिण्टैण्डैण्ट ने काल बैल का बटन दबाया। दरवाजे पर मौजूद अर्दली फौरन अन्दर आ पहुंचा।'

'इन्सपेक्टर मित्रा को बुलाओ।'

चपरासी फौरन बाहर चला गया, लेकिन इन्सपेक्टर तो स्वयं बाहर मौजूद था। वह चपरासी का इशारा पाते ही अन्दर पहुंचा और ऐड़ियां बजाकर उसने अपने सुपरिण्टैण्डैण्ट को सैल्यूट किया।

'मित्रा साहब! आपने बड़े खतरनाक लोगों को गिरफ्तार किया है।'

'जी, जी हां हजूर! मेरा तो ख्याल है कि सारी गड़बड़ इन्हीं लोगों की फैलायी हुई है।' इन्सपेक्टर ने बाले को खूंखार नजरों से देखते हुए सुपरिण्टैण्डैण्ट को उत्तर दिया।

'मुझे नहीं मालूम था कि आप घास खाकर इस पद पर पहुंचे हैं।' सुपरिन्टैन्डैन्ट का स्वर कठोर हो गया।

'जी हजूर!' इन्सपेक्टर मित्रा चौंक पड़ा।

'आपने पिस्तौल पर उंगलियों के निशानात के प्रिन्ट निकलवाये?'

'अभी नहीं हजूर।'

'क्यों? क्या अगले साल निकलवाने का इरादा था या किसी को गिरफ्तार करके बंद करवा देना आपकी कार गर्दगी का कमाल है।'

'मैं समझा नहीं हजूर।'

'मुझे रात को ही शुबह हो गया था और जब पिस्तौल से उंगलियों के निशानात के प्रिन्ट उठवाये गए तो जानते हैं आप वह किसके फिंगर प्रिन्ट निकले।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने शब्दों को चाबते हुए कहा।

'मम ! मुझे नहीं मालूम सर।'

'वह विक्टर के हैं।' सुपरिन्टैन्डैन्ट ने कहा।

'विक्टर के।' इन्सपेक्टर मित्रा चौंका।

'यह विक्टर कौन है ?' खान ने सुपरिटेंडेंट से पूछा।

'वहां का एक खतरनाक गुण्डा, सुना है उसका बहुत बड़ा गैंग है लेकिन कमबख्त कानून की पकड़ में आज तक नहीं आया वह ज्यादातर काम अपने आदमियों से लेता है।'

'आपके रिकार्ड में उसकी हिस्टरी और फोटो इत्यादि तो होंगे।'

'फोटो नहीं है, अलबत्ता फिंगर प्रिन्टस् हैं जो एक फौजदारी केस में लिये गये थे। वह एक बार का सजाआफता अपराधी है।'

'हिस्टरी क्या है ?'

'गोवा का रहने वाला है। शराब का बिजनस करता हैं, उसके यहां कई शराबखाने चलते हैं। लेकिन आज तक पुलिस को यह नहीं मालूम हुआ कि कौन-कौन से उसके हैं और न यह पता चलता है कि वह कब कहां रहता है।'

'खैर उसने मेरे आदमियों को छेड़ा है मैं उसे देख लूंगा।'

'यहां की पुलिस हर तरह आपकी सहायता करने को तैयार है और वैसे भी वह इस केस में सम्बन्धित है इसलिए हम उसे किसी कीमत पर न छोड़ेंगे।' सुपरिटेंडेंट ने इसे विश्वास दिलाया।

'उचित यही होगा कि सीधा आप इस केस में उसके सन्देहस्पद होने का ऐलान न करें। आपको अगर कुछ करना है तो उसे अज्ञात रखकर कीजिये।' खान ने मश्वरा दिया।

'मेरा खुद यही इरादा है।' सुपरिटेंडेंट मुस्कराया।

'इन्सपेक्टर मित्रा ! आपने मिस्टर बाले के साथ अच्छा सलूक नहीं किया है। आपको इनसे क्षमा मांगनी चाहिये और स्वयं मुझे भी मालूम होता कि सचमुच यह खान साहब के खास असिस्टेंट हैं तो यह नौबत न आती।' सुपरिटेंडेंट ने इन्सपेक्टर से कहा।

'मैं शरमिन्दा हूँ साहब, शक के कारण अक्सर ऐसी गलतियां हो जाती हैं।' इन्सपेक्टर ने सिर झुकाकर कहा।

'कोई बात नहीं, मुझे तो एक रात बड़े आराम की नींद मिली।' बाले ने इन्सपेक्टर से हाथ मिलाकर कहा।

'और मिस्टर शौकत मैं आपसे भी शरमिन्दा हूँ लेकिन आप लोगों को चाहिये था कि हमारी पुलिस को अपने इरादों से बाखबर रखते, ताकि गलतफहमी न होती।' सुपरिटेंडेंट अब शौकत से सम्बोधित हुआ।

'यह सब बाले भाई की स्कीम बाजी थी।'

'खैर-खैर जो हुआ सो हुआ। अच्छा अब इजाजत दीजिए।' खान ने उठते हुए सुपरिटेंडेंट से विदा चाही।

वह फिर बारी-बारी इनसे हाथ मिलाकर बाहर निकल आये।

नीम बिस्मिल

चम्बल गढ़ पुलिस इस घटना के बाद से हरकत में आ गई। लेकिन जिस समय अचानक शराब खाने पर छापा मारा गया जिसका पता बाले ने बताया था तो वहां किसी ऐसे आदमी का भी सुराग न मिला जो विक्टर से सम्बन्धित किया जा सके। इसके बाद भी शहर भर के शराब खानों में विक्टर की तलाश शुरू हो गई लेकिन उसका कहीं पता न चला।

शौकत वापस संगम होटल में पहुँच चुका था और इसे किसी और बात से ज्यादा खुशी इस बात की हुई थी कि प्रिन्स नरसिंह गढ़ शिकार पर गया हुआ था और जोहरा अपनी जगह सुरक्षित थी । लेकिन यह मुसीबत ज्यादा दूर न रह सकी । प्रिंस दूसरे दिन ही वापस आ गया और शौकत के सीने पर फिर सांप लौटने लगे ।

शाम के समय जब वह ड्राईनिंग हाल में खाना खा रहे थे नैना वाल्टर भी टहलती हुई आ पहुँची । वह शौकत की बराबर वाली सीट पर ही बैठ गई । शौकत एक ही समय जोहरा और उसकी उपस्थिती से बौखला गया ।

'मैंने सुना है आपने चोरों को खूब बेवकूफ बनाया है ।' उसने वार्ता छेड़ते हुए शौकत से कहा ।

'और नई तो क्या अल्ला ने अपने को भी दी है थोड़ी सी अक्ल ।' शौकत का लहजा फकरिया था ।

'शायद पुलिस भी चक्कर में आ गई आपकी अक्लमन्दी से ।'

'पुलिस वाले तो बस यूं ही होते हैं साले ।' शौकत ने नवाला चबाते हुए उसकी तरफ झुककर राजदराना लहजे में कहा ।

'वन्डरफुल !' नैना ने मुंह सिकोड़ते हुए कहा और शौकत उसकी इस अदा पर थाली के बैंगन की तरह उसके ऊपर लुढ़क गया वह चकित नजरों से उसके खूबसूरत चेहरे को तकने लगा ।

'आप यहां लंच खाने आये हैं ।' जोहरा ने उसे याद दिलाने की कोशिश की ।

'और नई तो क्या तुमे खा रया हूं ।' शौकत झुंझला कर बोला ।

'आई एम सोरी बास ।' जोहरा यह कहती हुई उठ खड़ी हुई ।

'ऐ लो, आये नखरे ।' शौकत ने भी यह कहते हुए उठना चाहा मगर नैना वाल्टर ने उसके कन्धे पर हाथ रख दिया ।

जाने दीजिये, वह क्या आपकी वाईफ है जो इतने नखरे दिखाती है ।'

'हां देखो न साली जाने क्या समझती है । अपने आपको, हूं ।'

'कहिये, आपका ठेका वेका शुरू हो गया ।' नैना ने और बेतकल्फ होते हुए उसकी तरफ झुककर कहा, और उसकी महकती जुलफों की बू शौकत की नाक से होती हुई न जाने कहां से कहां तक पहुँच गई ।

'लो, आज ही तो छूटा हूं ! मम, मेरा मतलब है इस झंझट से । बस कल ही जमानत भरी और काम चालू ।'

'अब कोई खतरा न मोल लीजियेगा ।' नैना ने उसके कन्धे को अपनी मरमरी उंगलियों से दबाते हुए अपने लहजे में कहा ।

'नई नई, वह तो प्रबन्ध कर लिया है मैंने ! बैंक स्वयं भर देगा ।'

'कब ? कल ?'

'कल तो बैंक में बम्बई से मेरा अकाउंट ट्रांसफर हो जायेगा, कल नई भरा तो परसों सुबह भर जायेगा ।'

'बहुत अच्छे ? अब कम-से-कम आप यहाँ साल-छः महीने तो रहेंगे ही ।' नैना खुश होकर बोली ।

'काये को ?' शौकत ने पागलपन से पूछा ।

'अब यह भी बताने की बात है ।' वह बड़े महबूबाना अंदाज से शर्मा गई ।

'क्या वाकई मैं इतना खुशखसीब, ओह हूं । यानी के खुशनसीब हूं ।' वह उसके बालों की उस गुस्ताख लट को उंगली से

छेड़ता हुआ बोला। जो उसके खिले हुए रुखसार पर से किसी बल खाई नागिन की दुम की तरह लटक रही थी।

'हुम !' नैना ने धीरे से हुँकारी भरी और मुस्कराती हुई उठ खड़ी हुई।

'अरे मगर सुनो तो।'

'सुबह आप चाय मेरे साथ पियेंगे।'

'मगर वह, यानी के।'

'सिर्फ अकेले।' यह कहती हुई वह उसे नीम बिस्मिल छोड़ कर चली गई और शौकत सोचता ही रह गया कि इन दिनों इसकी खूबसूरती कितनी बढ़ गई है। जो नैना जैसी खूबसूरत लड़कियां भी उस पर मिटने लगी हैं। इस एहसास के साथ ही उसे बाले का ख्याल आ गया और उसने कुछ इस अन्दाज से सिर को झटका दिया जैसे कह रहा हो—'वह किस खेत की मूली है। अब मैं खुद किसी वालंटियर (वालनटैनो) से कम नहीं हूँ।' लेकिन फातहाना ख्यालात की इस रोह में उसे जोहरा भी याद आ गई। वह रूठ कर ही गई थी, और न जाने कमरे में जाकर और किस कद्र रूठने का प्रोग्राम बना रही हो। यह सोचकर वह भी तौलिये से हाथ पोंछता हुआ उठ खड़ा हुआ।

● ●

शौकत ने इन तमाम आदमियों को देखकर नफी में गर्दन हिला दी।

वह सब एक्साईज के आदमी थे। उनमें सब इन्सपेक्टर से लेकर सिपाही तक मौजूद थे।

जी. आर. पी. सुपरिटैन्डेंट ने उन लोगों के अतिरिक्त अपने

स्टाफ के आदमी भी इस शिनाख्ती ग्रेड में शामिल कर दिये थे। खान खुद भी इस अवसर पर उपस्थित था, और बाले और शौकत उसके दायें बायें बैठे हुए थे, और सिटी सुपरिन्टेन्डेन्ट अब्दुल वहाब भी यहाँ उपस्थित थे।

'नईं, इनमें तो कोई नईं हैं।' शौकत ने बताया।

'तो फिर ये कोई बाकायदा गैंग ऊंचे पैमाने की डकैती का काम कर रहा है।' एक्साईज सुपरिन्टेन्डेन्ट ने बताया। शिनाख्त के लिए आये हुए तमाम आदमियों को बाहर भेज दिया गया।

'हो सकता है आपका ख्याल ठीक हो। लेकिन मैं कुछ और सोच रहा हूँ।' खान ने तबसरा किया।

'क्या ?' सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब पूछा।

'मेरा ख्याल है। यह हरकत शौकत के साथ ही की गई है।' खान के इन शब्दों ने उन्हें सोच में डाल दिया।

'लेकिन अब सोचने का कारण ?' जी० आर० पी० सुपरिन्टेन्डेन्ट ने पूछा।

'इसलिए कि वह लोग अभी तक इसी शहर में मौजूद हैं। वरना अक्सर व बेशतर ऐसी हरकतें करने वाला कोई गैंग स्थाई तौर पर इसी जगह अड्डा न बनाता।'

'आपका इशारा गालबन विक्टर की तरफ है।' सुपरिटेन्डेन्ट वहाब ने प्रश्न किया।

'या वह—या उसका पीठ पर कोई और।' खान ने संक्षेप में बताया।

'मेरे ख्याल में उसने इस किसम की हरकतें कभी भी नहीं की। वह सिर्फ नाजायज कारोबार और गुण्डा गर्दी ही करता है।' सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब ने कहा।

'आपका ख्याल है, लेकिन ऐसे आदमी प्रयोग भी किये जा सकते हैं।'

'उसे कौन प्रयोग करेगा भला।'

'यही तो सोचने की बात हैं, ऐसा सम्भव है मेरा ख्याल भी गलत निकले, लेकिन बहरहाल हमें हर पहलू से सोचना चाहिये।'

'हां हां क्यों नहीं?' दोनों सुपरिन्टेन्डेन्ट सिर हिलाने लगे।

'शौकत तुमने जमानत की राशि भर दी है?' खान ने शौकत से प्रश्न किया।

'आज बैंक के द्वारा भरूंगा।'

'तुमने टेंडर दिया था न। इस ठेके का?'

'जी आं।'

'दूसरे लोगों ने भी टेंडर दिये होंगे।'

'काये को नई।'

'तुम उनमें से किसी को जानते हो?'

'वह साले बताते ही कब हैं। इस मामला को तो गुप्त रखा जाता है।'

'खैर छोड़ो? मैं देख लूंगा। वैसे तुम्हारी अग्रिम राशि जमा कराने की आखरी तारीख क्या है?'

'दो दिन रह गये हैं।'

'हुम!' खान ये कहकर उठ खड़ा हुआ, और उसके साथ ही सब उठ खड़े हुए।

खमीराय मर वारीद

शौकत इस समय संगम होटल के निचले हाल में नैना वाल्टर के साथ टेबिल पर नाश्ता कर रहा था। नैना इस समय हल्की बनकशी चुस्त पोशाक में पहले से ज्यादा कयामत खेज नजर आ रही थी और शौकत दिल ही दिल में अपनी किस्मत

को दुआयें दे रहा था कि खुदा जब देता है तो छप्पर फाड़ के देता है। और इन दिनों कम से कम 'सामान दिल रुबाई' के सिलसिले में कुछ ऐसी ही रहमतें उस पर नौछावर हो रही थी। वह नाश्ता के दौरान वार्ता के लिये तरह तरह की शायराना उदहारन याद करने की कोशिश कर रहा था, ताकि नैना वाल्टर की नजरों में 'वालनटीयर' सिद्ध हो सके।

'आपके हाथ खमीरिय मर वारीद से भी ज्यादा खूबसूरत हैं।' उसने नैना का एक हाथ मेज पर ही अपने हाथ में दबा कर कहा। खमीराय मर वारीद उसने अपनी याद-दाशत से 'मरमरी' की जगह प्रयोग किया था, नैना हंस पड़ी।

'और दांत तो यानी की, यानी की।' उदाहरन फिर अटक गया और उसका दिमाग बेतरह किसी मंजन बेचने वाले का वह शेयर दोहराने लगा!

दांतों पे आब लाता है ये दांत का मंजन।

दांतों का हर बला है, वगैरा वगैरा।

और फिर उसे अपने आप पर गुस्सा भी आ गया, भला मंजन का यहां क्या जिकर, 'लाहोल बिल्ला कुबत।'

'आप क्या सोचने लगे?' नैना ने स्वयं उसे छेड़ा।

'आपके दांतों की तसबीह, ऊंह हूं, तशबी सोच रहा था, अरे हां यानी कि जैसे तसबीह के दाने।'

'आप तो शायरी करने लगे।' नैना इठलाकर बोली।

'आप को देखकर तो साला गधा भी शायरी करने लगेगा!' शौकत ने अपनी समझ में इसके हुस्न की प्रशंसा की इन्तहा कर दी।

'तो फिर शौक से कीजिये।'

'क्या?'

'शायरी।'

'है, है, वह जो कहा है किसी शायर ने–अच्छी सूरत भी क्या मोत अच्छो शै है।'

लेकिन मिसरा एक ही रह गया, क्योंकि इसी समय शौकत की नजर काऊन्टर की तरफ उठ गई उसने देखा। जोहरा प्रिंस नरसिंह गढ़ के साथ हाथ में हाथ डाले सामने से गुजर रही थी।

शौकत का हाथ मेज पर गया और प्याली वही छोड़ते हुए वह झपट कर काऊन्टर के समीप आ गया।

'मिस जोहरा।' उसने जोहरा को आवाज दी।

'यैस मिस्टर जागीरदार।' प्रिंस स्वयं उसकी तरफ सम्बोधित हो गया।

'आप से नईं–मैं मिस जोहरा से कै रया हूँ।'

'वह मेरे साथ घूमने जा रही हैं, फरमाईये।'

'ये मेरी स्टैनो हैं।'

'नौकरानी तो नहीं हैं।'

'मिस जोहरा।' शौकत फिर जोहरा से सम्बोधित हो गया।

'मैं आपकी लौंडी नहीं हूँ।' यह कह कर वह आगे बढ़ गई।

'मैं तुम्हें फायर कर दूंगा, एकदम डिसमिस।' शौकत मुठ्ठियां भींच कर बोला।

'शौक से शौक से।' प्रिंस हँसकर बोला। 'मैं इन्हें अपनी पर्सनल सेक्रेटरी बना सकता हूँ।'

'अच्छा नईं होगा मिस्टर नरसिंह गढ़ मैं देख लूंगा।' शौकत घूंसा तानकर बोला, लेकिन प्रिंस का सेक्रेटरी शौकत के पास आ खड़ा हुआ।

'रुस्तमी दिखानी है तो मैं हाजिर हूँ। प्रिंस को क्यों तकलीफ देते हैं आप।' वह बड़े अदब से शौकत के सामने झुककर बोला।

'समझ लूंगा, सबसे समझ लूंगा।' शौकत गुस्से में पैर पटकता हुआ जीने की तरफ जाने लगा, लेकिन नैना दौड़कर करीब आ गई।

'शौकत साहिब, शौकत साहिब।' उसने पीछे से पुकारा।

'तेल लेने गये शौकत साहिब।'

'सुनिये तो।' उसने शौकत का हाथ थामना चाहा।

'अभी नईं, अभी मुझे मोत गुस्सा चढ़ा है। मैं गोली मार दूंगा दोनों को।' यह कहता हुआ और उसका हाथ झटक कर ऊपर चला गया और नैना वहीं खड़ी उसे देखती रह गई।

शामते आमाल

दूसरे दिन प्रात: जब शौकत की आंख खुली तो वह स्वभाव के अनुसार बैड टी मंगवाने के लिए तिपाई में लगा हुआ काल बैल का बटन दबाने लगा लेकिन एक क्षण बाद ही उसकी आंखें हैरत से फैल गईं और उसका हाथ कांपने लगा, उसके अपने कपड़ों पर जो बदन पर पहने था खून के धब्बे पड़े हुये थे, पहले उसने डरते डरते इन धब्बों को टटोला, खून लगभग खुश्क हो गया था, फिर वह घबराकर अपने ही अंगों को टटोलने लगा मगर वह तो सही सलामत थे कहीं कोई घाव या तकलीफ न थी। और जब बिस्तर से उठकर सलीपर पहनने के लिये उसने पैर नीचे लटकाये तो उसकी हैरत और बढ़ गई। उसके स्लीपरों के पास ही एक चमकदार बड़े फल का चाकू पड़ा हुआ था जो खून आलूदा था। उसके फल पर खून की एक तह जम गई थी। शौकत ने बौखलाहट से उसे उठा लिया और करीब से देखने लगा लेकिन न जाने इसे क्या ख्याल आया जो उसने

उस चाकू को इस तरह झटके से दूर फेंक दिया जैसे इतफाक से कोई काला नाग हाथ में आ गया हो।

'मिस जोहरा।' उसके हलक से फंसी फंसी आवाज निकली। जोहरा पिछले छोटे कमरे में सोती थी और उसका दरवाजा खिलाफ मामूल खुला हुआ था। शौकत उसे आवाज देता हुआ दरवाजे की तरफ दौड़ा उसके पलंग से जोहरा के कमरे के दरवाजे तक फर्श पर खून के छींटे पड़े हुये थे। और जब वह जोहरा के कमरे में दाखिल हुआ तो उसके रोंगटे खड़े हो गये, जोहरा अपने पलंग से नीचे कुछ दूर फर्शी कालीन पर खून में लथपथ पड़ी हुई थी और खून उसके सीने से निकल कर कालीन पर दूर तक जम गया था। उसकी आंखें नीमवा रह गई थीं। शौकत ने अपनी जिन्दगी में कोई ऐसा भयानक दृश्य नहीं देखा था उसका रुआं रुआं कांपने लगा, इतनी भी जुरायत न हुई कि वह जोहरा की लाश के करीब जा सकता। वह किसी मरियल रोगी की तरह दरवाजे से टिकता दीवार के सहारे बाहर निकल आया और दरवाजे को झटके से बन्द कर दिया। कुछ देर के लिये इस दृश्य से ओझल होते ही उसका दिमाग तेजी से सोचने लगा, कल रात ही जोहरा से उसका दोबारा झगड़ा हुआ था, जब वह प्रिंस नरसिंहगढ़ के साथ खाने की मेज पर गई थी और जजबात की गम्भीरता से शौकत अपने आप पर काबू न रख सका था। इसलिये उसने सबके सामने उसे बुरा भला कह डाला था, उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि अभी जब होटल वालों को खबर हो गई तो वह बिल्कुल उसकी बेगुनाही पर विश्वास नहीं करेंगे। वह इसे पिछली शाम के झगड़े का परिणाम समझेंगे और फिर, अंजाम के ख्याल से ही वह सिर से पैर तक कांप गया, उसे ऐसे में यही अकल आई कि इस घटना की

खबर होटल में फैलाने से पहले वह किसी तरह सुपरिण्टेंडैण्ट खान को सब कुछ बता दे मगर इसने यह भी सोचा कि अगर खान ने भी इसकी बेगुनाही पर विश्वास नहीं किया तो...? और उसका जवाब उसकी कल्पना में फांसी के फन्दे की तरह सिर से ऊपर झूलने लगा।

अभी वह इसी सोच में ग्रस्त था कि दरवाजे पर बैरे ने दस्तक दी और उसकी रुह फना हो गई।

'कक, कौन है।' उसने कांपती हुई आवाज में पूछा।

लेकिन जवाब देने की बजाये बैरा दरवाजे की घंटी बजाने लगा। मजबूरन शौकत ने कांपते हुए हाथों से दरवाजा खोल दिया और इसे अध खुला रखकर बाहर झांका, सामने बैरा खड़ा था।

'कक, कोछ नईं।' शौकत ने यह कह दरवाजा बन्द करना ही चाहा था कि बैरे की नजर उसके शबख्वाबी के कपड़ों पर पड़े हुए खून के धब्बों पर पड़ गई, उसकी आंख हैरत व खौफ से फैल गईं और वह बेतहाशा खून खून कहता हुआ नीचे की तरफ भागता चला गया।

शौकत के हाथ पैर फूल गये और वह चकरा कर दरवाजे के पास ही गिर पड़ा।

●●

शौकत हवालात में बन्द था और खान सुपरिण्टेण्डेण्ट वहाब के साथ शौकत के संगम वाले रूम का निरीक्षण कर रहा था, प्रिंस नरसिंह गढ़ भी जबरदस्ती रूम में घुस आये थे और इस घटना से बहुत प्रभावित मालूम हो रहे थे, इससे पहले स्थानीय पुलिस शौकत को पूरी तरह हत्यारा सिद्ध करने वाले तमाम

सबूत और गवाहियां यहाँ से प्राप्त कर चुकी थी और इन गवाहियों में एक महत्वपूर्ण गवाह मिस नैना थाल्जर लड़की भी थी, उसने यह बताया था कि शौकत ने पिछली शाम क्रोध की अवस्था में यह कहा था कि वह अपनी स्टैनो जोहरा का फैसला कर देगा, इससे पहले वह कल सुबह यह भी कह चुका था कि प्रिंस नरसिंह गढ़ और जोहरा दोनों को गोली मार देगा। उसे जोहरा के चाल चलन और प्रिंस नरसिंहगढ़ से उसके बढ़ते सम्बन्ध पर शुबह था। और वह कल से जोहरा से ठीक से पेश नहीं आ रहा था। पिछली शाम जोहरा और शौकत में गर्म व तेज झड़प हुई थी इसकी गवाही कई दूसरे आदमियों ने भी दी लेकिन स्वयं प्रिंस नरसिंह गढ़ ने किसी किस्म की गवाही देने से इन्कार कर दिया। इस इलाके के पुलिस स्टेशन के इंचार्ज इन्सपेक्टर ने शौकत के कमरे का निरीक्षण करने के बाद साफ तौर पर ये बात नोट की थी कि चाकू जिससे मृतक को कत्ल किया था शौकत के रूम में उसके बैंड से कुछ दूर खून में लिथड़ा पाया गया था और मृतक के कमरे का दरवाजा भी खुला हुआ था जिसके साथ मृतक के बैंड के नीचे बिछे हुए कालीन से शौकत के बैंड के नजदीक तक खून के छींटे पड़े हुये थे। यही नहीं बल्कि इस चाकू के दस्ते पर शौकत की उंगलियों तक के निशान तक मौजूद थे, पुलिस के पास बहरहाल ऐसे तमाम सबूत मौजूद थे जिनसे शौकत कातिल होना सिद्ध हो सके।

इसलिए पुलिस शौकत को बेहोशी की अवस्था से होश में लाकर हथकड़ी डालकर ले गई। खान को इसकी खबर स्वयं सुपरिण्टेंडेंट वहाब ने फोन के द्वारा उसके अस्थाई निवास स्थान पर की और खान के इसरार पर स्वयं सुपरिण्टैण्डेंट वहाब भी उस स्थान का निरीक्षण करने के लिये आ गया था।

खान ने जोहरा के बिस्तर का निरीक्षण करने के बाद इस स्थान को देखा जहां उसकी लाश पड़ी पाई गई थी लाश का निरीक्षण वह पहले ही कर चुका था।

'इसे बिस्तर पर सोते ही समाप्त किया गया है।' खान ने सुपरिण्टेण्डेण्ट वहाब से कहा।

'और वह सीने में खन्जर के प्योस्त होने के बाद तड़प कर बिस्तर से गिरी होगी।' सुपरिण्टैण्डेण्ट वहाब ने खान के ख्याल की पुष्टि की। 'लेकिन कम से कम एक चीख तो सुनाई दी जानी चाहिए थी।' वह बोला।

'कोई मुंह बन्द कर दे तो कैसे सम्भव है।' खान ने कहा।

'और फिर वह खून आलूदा खन्जर उसके सीने से निकाल कर दरवाजे के रास्ते दूसरे कमरे के बैंड तक ले जाया गया। सुपरिण्टेण्डेण्ट वहाब ने फर्श पर नजर आने वाले खून के कतरों को देखते हुये तबसरा किया।

'नहीं सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब, शौकत जैसे गधे का काम नहीं, इसे जरूर किसी ने फांसने की कोशिश की है।'

'लेकिन आसार।'

'किसी को फांसने के लिए ऐसे ही आसार फराहम किये जाते हैं। वह अगर ऐसा करता तो खन्जर समेत अपने बैंड तक वापिस न जाता, कातिल को कत्ल के फौरन बाद अपने इकदाम के परिणाम का एहसास हो जाता है।'

'बाज लोग जनून अवस्था में ऐसी हरकतें कर बैठते हैं और उन्हें इसका एहसास देर बाद होता है।' सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब ने खान के साथ साथ शौकत के बैंड के नजदीक आकर कहा-यहां खान इस जगह झुक गया, जहां आम तौर सोते समय पैरों से स्लीपर उतारे जा सकते हैं और फर्श को गौर से देखने

पर उसे खून की हल्की सी सुर्खी में एक खन्जर के फल का निशान बना नजर आने लगा।

'नहीं भई वहाब साहब, यह बिल्कुल शौकत का काम नहीं है ?'

'आपको सिद्ध करना पड़ेगा।'

'हुम !' यह कह कर खान फिर लौटा, जोहरा के कमरे में आकर वह एक बार फिर इस कमरे का निरीक्षण लेने लगा, सिरहाने रखी हुई तिपाई पर मौजूद गुलदान लुढ़क कर नीचे गिर पड़ा था, और उसकी कोर टूट गई थी। कुछ यूं ही वह इसके आस पास का कालीन देखने लगा, और यहाँ भी उसे एक जगह खून के कुछ कतरे कालीन में जजब नजर आये, जिन्हें कालीन के ऊन ने पूरी तरह जजब नहीं होने दिया था, वह गाढ़े होकर जम गये, फिर उसकी नजर पलंग के सिरहाने की तरफ चमकते हुए एक शीशे पर पड़ गई। खान ने दौड़कर उसे चुटकी से थाम कर उठा लिया, ये गुलदान की टूटी हुई कोर का ही एक छोटा सा टुकड़ा था, जिसकी नोक चाकू की नोक की तरह तेज थी और उस पर खून लगा हुआ था। खान ने बड़ी सावधानी से उसे कागज के एक टुकड़े में लपेट कर जेब में रख लिया, फिर उसने जेब से मूंछे त्रासने वाली बारीक कैंची निकाली और जहां कालीन के ऊन पर उसे खून के कतरे जमा नजर आये थे, उन्हें ऊन के रेशों समेत काट कर एक दूसरे कागज में रखते हुए जेब में डाल लिया, सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब उसकी इस कार्यवाई को हैरत से देख रहे थे, मगर खामोश थे।

खान उनसे कुछ कहे बगैर अब कमरे के दायें बाजू वाली पिछाड़ी खिड़की के करीब आ गया, यह खिड़की खुली हुई थी, लेकिन पट भेड़ दिये गये थे। उसने झटके से दोनों पट खोल

दिये, ताजा हवा का एक झोंका अपने साथ होटल के पिछले पार्क में खिले हुए मोगरे के फूलों की खुशबू बखेरता हुआ अन्दर दाखिल हुआ और खान एक लम्बी सांस खींच कर बाहर झांकने लगा, आपसे आप इसकी नजर ऊपर उठती चली गई, वह इस बन्द खिड़की को तकने लगा, जो दूसरी मंजल पर ठीक उस खिड़कीके ऊपर थी। सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब भी उसके पास आ खड़ा हुआ।

'आखिर क्या सोच रहे हैं आप ?' एस० पी० वहाब ने पूछा।

'यह स्टोरी फिर कभी सुनाऊंगा आपको।' खान ने उसकी तरफ पलटते हुए कहा।

'कैसी स्टोरी ?'

'यही कि ये वारदात किस तरह घटित हुई।'

'मैं पहले ही सुन चुका हूँ कि आपकी बातें चौंका देने वाली हुआ करती हैं।' एस० पी० वहाब मुस्करा दिया।

'खैर, आइये पहले मैं कुछ बातों का खुद विश्वास कर लेना चाहता हूँ वैसे आप बराह कर्म अपने निरीक्षण की रिपोर्ट में इस शीशे के टुकड़े का, खून के जमे हुए कतरों का जो मैंने कालीन पर से लिये हैं और इस गिरे हुए गुलदान के अतिरिक्त इस खुली खिड़की का वर्णन अवश्य करें।' खान ने उससे फरमाइश की।

'करूंगा।' एस० पी० ने सिर हिलाया।

इसके बाद खान और एस० पी० वहाब दोनों बाहर आ गए। एस० पी० वहाब को अपने आफिस में भी पहुँचना था, इसलिए उसने आज्ञा चाही और खान वहीं रह गया। एस० पी० वहाब के जाने के बाद वह सीढ़ियों के द्वारा टहलता हुआ ऊपरी मंजिल पर पहुँच गया, कारीडोर में होता हुआ वह ठीक उसी

कमरे के दरवाजे पर रुका जो जोहरा के कमरे के ठीक ऊपर हो सकता था। लेकिन दरवाजा बन्द था।

खान ने कमरे का नम्बर देखा। वह ३१ था, वह कमरे का नम्बर अपनी नोट बुक में नोट करने के बाद नीचे उतर आया नीचे काऊटर पर ईसाई लड़की बैठी थी।

'क्या आप बता सकेंगी कि दूसरी मंजिल पर रूम नं० ४० में कौन ठहरा हुआ है। मुझे अपने एक दोस्त की तलाश है।' खान ने उससे कहा।

'हां हाँ क्यों नहीं।' यह कहकर वह उसके सामने ही रजिस्टर खोल कर देखने लगी। उसकी निगाहें रूम नम्बर ४० पर जम गईं और खान की ३९ पर। रूम नं० ३९ के सामने 'मि० नैना वाल्टर रुफ' लिखा हुआ था और नं० ४० पर कोई व्यापारी फिजाई सर्विस का आदमी।' 'ए बी डिकशिट' ठहरा हुआ था।

'नहीं, ये नहीं है, खैर शायद किसी और होटल में ठहरा होगा, उसका रूम नं० बहर हाल ४० है, अच्छा शुक्रिया।' खान ने यह कहते हुए अपना हैट सम्भाला और बाहर निकल गया।

मूर्गे और मुर्गियाँ

फिलहाल इसके बगैर और कोई चाराकार न था कि जोहरा के कत्ल का अल्जाम शौकत पर ही रहे और स्थानीय पुलिस जो जाहिरी सबूत एकत्रित कर चुकी थी। उसकी रोशनी में शौकत के लिए फाँसी का फंदा यकीनी था। मगर खान के इसरार पर एस० पी० वहाब ने जरूरी कागजात की तैयारी के लिए कचहरी से एक माह कारिमान्ड हासिल कर लिया था। शौकत हवालात

में था और इस बीच में न खान उससे मिलने गया था न बाले, खुद कातिल न सही, लेकिन एक कत्ल के अल्जाम में इस तरह फंस जाने पर उसकी तमाम अकड़ हवा हो गई थी। वह अधमरा हुआ नजर आने लगा! सुपरिन्टेन्डेन्ट खान की शक्ल उसे रात को नौ बजे दिखाई दी। जब खुद इसे सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब के सामने बुलाया गया। खान भी वहां उपस्थित था। और खान को देखते ही इसकी आंखों में नमी आ गई।

'सलामालेकम।' उसने भर्राई हुई आवाज में कहा।

'बैठ जाइये।' एस० पी० वहाब ने अंगरक्षक सिपाही को वापस जाने का इशारा करते हुए शौकत से कहा और शौकत बिना कुछ कहे कुर्सी पर बैठ गया। फिर वह स्वयं ही खान की तरफ सम्बोधित हो गया।

'अल्ला कसम खान साहब मैंने कोई खून यून नईं किया है। मैंने तो मिस जोअरा को कभी उंगली भी नईं लगाई। आप तो जानते हैं क्या मैं किसी का खून कर सकता हूँ।' वह घिघियाई हुई आवाज में कहने लगा।

'लेकिन क्या तुमने जोहरा को धमकी नहीं दी थी जान से मार डालने की।'

'ऐ लो, अल्ला कसम बिल्कुल नईं, बिल्कुल झूठ।'

'लेकिन नैना वाल्टर नाम की लड़की ने तो पुलिस को बयान दिया है कि तुमने उसके सामने कहा था कि तुम उन दोनों को यानि प्रिंस और जोहरा को गोली मार दोगे।'

'आपको मालूम है मेरी साली आदत ही ऐसी है मुंह से उल्टा सीधा बक जाता हूँ। मगर मैंने कभी चूहे को भी नईं मारा। औरत तो भौत बड़ी चीज है।'

'क्या तुमने नैना के सामने यह भी कहा था कि तुम इनका झगड़ा ही समाप्त कर दोगे।'

'मेरी आंखें फूट जायें जो मैंने यह कहा हो।'

'ठीक से याद करो।'

'याद माद करने की बात नईं है, ऐसा मेरे मुंह से निकलेगा ही नईं।'

'खैर पुलिस के अनुसार तो अल्जाम कत्ल तुम पर साबित हो रहा है। वैसे मैं कोशिश करूंगा कि तुम्हारे लिये कुछ कर सकूं।'

'सुपरिन्टेन्डेन्ट साहब, मैं भौत शरीफ आदमी हूँ। मेरे बाप दादा सब शरीफ और असील लोग थे। मैंने कभी ऐसा नईं किया है।' शौकत अब एस० पी० वहाब से अपनी सफाई में कहने लगा।

'मैं अगर मान भी लूं, तब भी मामला हल नहीं हो जाता। कानून को सन्तुष्ट करना बहुत कठिन है।' एस० पी० वहाब ने नर्मी से कहा।

मैं बेगुनाह फांसी पर चढ़ गया तो पाप बस आप लोगों की गर्दन पर होगा। अल्ला आपको कभी माफ नईं करेगा।' शौकत ने गलोगीर अन्दाज में इन्हें अन्जाम से डराया।

'आप अगर बेगुनाह हैं तो इस तरह परेशान होने की जरूरत नहीं। हकीकत खुद किसी तरह बेनकाब हो जायेगी।' एस० पी० वहाब ने कहा।

'मगर मैं जो जेल में सड़ रया हूँ।'

'इसके अतिरिक्त कोई चारा नहीं।' एस. पी. वहाब ने सहानुभूति प्रकट की और शौकत इस उत्तर से और नरवस हो गया।

'तुम घबराओ नहीं, मुझे मालूम है कि खून तुमने नहीं किया है।' खान इसके कन्धे पर हाथ रख कर नर्मी से बोला।

'आपका भौत बड़ा अहसान होगा मुझ पर। आप कातिल

को पकड़ दीजिये, नईं तो मैं बे मौत मारा जाऊंगा।' शौकत खान का हाथ पकड़ कर विनती पूर्वक स्वर में बोला।

'कानून का फर्ज है कि वह सच और झूठ की जांच करे। तुम नाराज क्यों हो रहे हो।'

'मेरी तो जान आधी हो गई है।'

'खैर जाओ, हवालात के कुछ दिन गुजार लो। खुदा ने चाहा तो मैं शीघ्र ही वास्तविक अपराधी को ढूंढ़ निकालूंगा।' खान ने उसे दिलासा दिया।

'आपके भरोसे पर जा रया हूँ।' शौकत कुर्सी से उठते हुए बुझे लहजे में बोला—'दुर्घटनाओं का मुकाबला करना सीखो। यूं हिम्मत छोड़ने से क्या होता है।' खान ने उसे जाते-जाते हौंसला दिलाया।

'मैं तो हालात के बाप का भी मुकाबला कर लूं मगर यह खून का इल्जाम।'

'फिर वही।' खान झुंझला गया और शौकत एस. पी. वहाब के इशारे पर अन्दर आने वाले सिपाही के साथ खामोशी से बाहर निकल गया।

●●

'नैना वाल्टर ने पुलिस को बयान देते हुए स्वयं अपने बारे में क्या लिखाया है।' खान ने एस. पी. वहाब से अकेले में प्रश्न किया।

'क्या आप उस पर भी शक कर रहे हैं, नहीं साहिब वह तो बहुत शरीफ लड़की मालूम होती है।' एस० पी० वहाब ने नैना की वकालत की।

'शक तो नहीं कर रहा हूँ, मगर मैं इसके बारे में जानना चाहता हूँ।' खान मुस्कराकर बोला।

'वह जात की हिन्दुस्तानी क्रिश्चियन है। उसका भाई उसे संगम होटल में छोड़ कर दिल्ली गया हुआ है।' एस० पी० ने बताया।

'भाई कौन है उसका ?'

'यह मालूम करने की जरूरत नहीं समझी गई, क्योंकि संगम में सबसे बड़े लोग ही ठहरते हैं।' एस० पी० ने बताया !

'खैर छोड़िये इसे, अच्छा मैं चलता हूँ, लेकिन जरा ख्याल रखियेगा। शौकत बहुत नरबिस टाईप आदमी है।' खान ने उसे उठते हुए ताकीद की।

'पुलिस उसके साथ सख्त बर्ताव नहीं कर रही है। मुझे आपके अन्तिम शब्द की प्रतीक्षा हैं।' एस० पी० वहाब ने कहा।

'मैं बहुत शीघ्र आपको परिणाम से अवगत करूंगा।' खान दरवाजे तक आते हुये बोला–फिर वह उससे हाथ मिलाकर निकल आया और एस० पी० वहाब किसी सोच में गर्क वहीं खड़ा रह गया।

● ●

'यूअर हाईनेस, यूअर हाईनेस' प्रिंस नरसिंह गढ़ का सेक्रेट्री हांफता हुआ उसे आवाज देता आ रहा था। प्रिंस इस समय संगम के रिटायरिंग रूम में कुछ मेहमानों के साथ सोफे पर बैठा हुआ था और नैना वाल्टर भी यहां मौजूद थी। वह इस समय धानी रंग के स्कर्ट में बहुत दिल फरेब नजर आ रही थी। प्रिंस कभी कभी उसे कनखियों से देखने लगता और जब वह मुस्कराती तो उसे झुरझुरी सी आ जाती। सेक्रेटरी की बेजा मदाखलत से वह झुंझला गया।

'क्या बकरे की तरह चिल्ला रहे हो, क्या बात है ?'

'वह, वह लड़की कत्ल कर दी गई। लोग कह रहे हैं।' सेक्रेटरी ने हांफते हुए कहा।

'कौन, वह उस गधे की सेक्रेटरी, क्या नाम था उसका, मिस जोहरा।'

'यस यूअर हाईनेस।'

'लगाम को जबान दो, उसे कौन कत्ल कर सकता है। हम उसकी आने वाली सात पीढ़ी को कत्ल कर देंगे।'

'ताज्जुब है।' नैना वाल्टर बोल पड़ी।' कल यहां इतना बड़ा हंगामा हो गया और आपको खबर नहीं।'

'कैसा हंगामा और हमें क्यों खबर होती। क्या हम अखबार के रिपोर्टर हैं ?'

'यूअर हाईनेस मेरा मतलब है मिस जोहरा के कत्ल की वारदात से और उसका कातिल खुद उसका बास शौकत ही है जो इस समय पुलिस के कब्जे में है।' उसने बताया।

'ओह गोड' प्रिंस सिर थाम कर सोफे की पीठ से टिक गया। 'सेक्रेटरी अब हमारा क्या होगा।'

'हजूर कुदरत ने हर मुर्गे के लिए कई मुर्गियां पैदा की हैं।'

'शटअप, यहां मुर्गों का क्या जिकर।'

'मिशाल के तौर पर अर्ज कर रहा था गुलाम।'

'बन्दूक लाओ हमारी' प्रिंस ने गरज कर सेक्रेटरी को हुक्म दिया।

'क्यों, क्या करेंगे आप।' एक साहब मेहमान ने चौंककर पूछा।

'हम उस भैंसे को कत्ल कर देंगे।'

'छोड़िये उससे स्वयं पुलिस निपट लेगी और फिर ऐसी बातों पर अफसोस करना आपके शान के विरुद्ध है।' नैना ने उसके कन्धे पर हाथ रख कर कहा।

'तुम कहती हो तो हम छोड़ देते हैं वरना हमारे इरादे अक्सर संगीम ऊंह, संजील । संगीन हुआ करते हैं । 'सेक्रेटरी बोल पड़ा ।

'हां संगीन हुआ करते हैं मगर तुमको क्या ?'

'याद दिलाया था हजूर ।'

'खैर शर्बत की बोतलें मंगाओ। हम अपना गुस्सा ठंडा करना चाहते हैं ।' प्रिन्स ने आर्डर दिया और सेक्रेटरी उसे घूरता हुआ बाहर निकल गया ।

'आप प्रिंस हैं प्रिंस, ऐसी छोटी-छोटी बातों का असर आपको नहीं लेना चाहिए ।' नैना उसे समझाने लगी ।

'बादशाहों की पसन्द बदला भी करती है ।'

'ऐसा ? तो क्यों न हम भी बदल डालें ।' प्रिंस यह कह कर उसे अजीब सी नजरों से देखने लगा ।

'शौक से ।' वह हंस पड़ी ।

'अरे, मगर इससे पहले तो हमने खुद भी नहीं किया था कि···।' वह कहते कहते रुक गया, फिर साथियों की तरफ पलट कर बोला ।

'आओ हम एकांत चाहते हैं ।'

दूसरे लोग मुस्कराते हुए उठ बैठे लेकिन वह वहीं बैठी रही।

'वन्डरफुल ।' प्रिंस उसे घूरते घूरते चौंका ।

'व्हाट ?'

'यानि कि बगल में तुम और शहर में ढिंढोरा ।' यह कहते हुए प्रिंस ने उसका हाथ थाम लिया ।

'बादशाहों की पसन्द बदला भी करती है ।' इसने मुस्करा कर दोहराया ।

'आजमा कर देख लो ।' प्रिंस भी मुस्करा दिया ।

'देख लूंगी ।' वह यह कहती हुई उसकी बांहों में झूलगई ।

'सेक्रेटरी २ ।' प्रिंस चीखने लगा । नैना वाल्टर घबरा गई और वह अभी उससे अलग होकर खड़ी हुई थी कि सेक्रेटरी घबराया हुआ आ पहुँचा ।

'जी हजूर ।'

'तुम्हारी दाहिनी मूंछ में चावल अटका है ।' प्रिंस की नजर उसकी मूंछों पर पड़ गई ।

'लाहौल विला कूवत ।' यह कह कर उसने मूंछ साफ कर ली ।' अब फरमाइये ।'

'जब कोई खूबसूरत जवान लड़की बांहों में झूल जाये तो क्या करना चाहिए ?' प्रिंस ने पूछा ।

'अपनी बदकिस्मती का मातम ।' सेक्रेटरी ने जले हुए लहजे में कहा ।

'नानसेंस ।' नैना के होंठों से बेअख्तियार निकला ।

'मेरा मतलब है किसी के जजबात को न समझना बद किस्मती ही है ।' सेक्रेटरी ने जल्दी से बात पलट दी ।

'हमारा अगला प्रोग्राम क्या है ?'

'इस समय से ठीक दो मिनट बाद आप स्नान के लिये पुल पर जाने वाले थे ।' सेक्रेटरी ने याद दिलाया ।

'ओह हो···तो हमारे साथ मिस नैना वाल्टर भी चलेंगी आज ।' प्रिन्स ने बच्चों की तरह ठुमक कर कहा ।

'ओह नहीं·· आज मुझे क्षमा कीजिए ।' नैना घबरा गई ।

'असम्भव है । हमारा फैसला अटल हुआ करता है, तुम्हें चलना ही पड़ेगा ।'

और इसकी जिद के आगे नैना वाल्टर की एक न चली वैसे उसने कई तरीकों से ऐसा इसे समझाया कि वह आज न जा सकेगी । मगर प्रिंस ने उसे जान छुड़ाने की मोहलत ही न दी । ठीक दो मिनट बाद वह उसे अपनी कार में लेकर पुल की तरफ रवाना हो गया ।

स्वीमिंग पुल

स्वीमिंग पुल पर आधुनिक विचारों के हिन्दुस्तानियों की काफी भीड़ थी। जवान अर्धनग्न लड़कियों से लेकर अधेड़ उम्र की औरतें और बूढ़े पुरुष तक मौजूद थे। सौ बर्ष शरीफ मुंह से भी लार टपका देने वाले हुस्न व शबाब के कई नमूने यहां स्वीमिंग सूट में अपनी सुडौल गोरी नंगी टांगों और उभरे हुए सीनों का प्रदर्शन कर रहे थे। ये पूर्व का वह कार्टून थे जिन्होंने अपनी शर्म व हैया को पुल के पानी में डुबो दिया था। अगर कपड़ों की वे धज्जियां जो उनके शरीरों पर नाम मात्र वस्त्रों के फरायज अन्जाम दे रही थीं, अलग कर दी जातीं तो वे डारवन की थ्योरी के इश्तहार नजर आने लगते। अन्तर सिर्फ शकलों व शरीरों का होता।

लेकिन यहाँ सब ही इस वातावरण में रंगे हुए थे और जब इन्हें पुल प्रबन्धकों ने नये मेहमान प्रिंस नरसिंहगढ़ से परिचित कराया तो कई सुरीली आवाजों ने इसे घेर लिया।

'हैलो प्रिंस'''हैलो यूअर हाईनैस'''हाऊ हैन्डसम-हाऊ मैनलाइक।' ये वे जनाना वाक्य थे जो प्रिंस को देखकर कहे गये थे। इनके साथ ही सीटियाँ भी थीं और ऐसी सिसकियां भी जो भूखी आत्माओं को झुरझरी आने से उत्पन्न होती हैं।

प्रिंस की जबरदस्ती से विवश होकर नैना को स्वीमिंग सूट पहनना पड़ा लेकिन जब उसने अपने जूते उतारे तो प्रिंस उसके एक पैर में पट्टी बंधी देखकर चौंक पड़ा।

'ये तुम्हारे नाजुक पैर को क्या हो गया।' इसने उसके पैर

की तरफ इशारा करके पूछा और इस सवाल से वह चौंक सी पड़ी।

'ओह'''कुछ नहीं'''कुछ नहीं, कल एक पार्क में सैर करते हुए तलवे में कांटा चुभ गया था।'

'च-च-च'' बड़ा बेरहम था कम्बख्त।'

'काँटे फूलों को ही चुभा करते हैं।' सेक्रेटरी पीछे से बोल पड़ा।

'तुम रहने दो अपनी शायरी, एक सेक्रेटरी को सालस बनने की कोशिश नहीं करनी चाहिये।' प्रिंस ने उसे डांट दिया।

'मैं तो हजूर का अदना नमक खार हूँ।'

'ज्यादा नमक खाने से भी दर्द-ए-जिगर की शिकायत हो जाती है। नहीं क्या कहा हमने हमारा मतलब था बरमे जिगर की।'

'देखिये मुझे क्षमा ही कीजिए न''मैं इसीलिए पहले से इन्कार कर रही थी।' नैना ने दोबारा क्षमा चाही।

'तो फिर हम भी आज स्नान नहीं करेंगे, गोली मारो''' चलो सेक्रेटरी।' प्रिन्स ने भी इन्कार कर दिया।

पुल के प्रबन्धक ने इस तबदीली मिजाज का कारण जानना चाहा लेकिन सेक्रेरी ने उसे समझा दिया कि–'शहजादों की खोपड़ियां ऐसी ही हुआ करती हैं।

नये परिचय के बाद बेतकल्लुफी की इच्छुक लड़कियां प्रिन्स को वापस जाते तकती रह गईं और फिर एक दूसरे को देखकर कहकहा मार कर हंस पड़ीं। ऐसे कितने ही यहां आकर चले जाया करते थे।

सेक्रेटरी कार ड्राईव कर रहा था और प्रिन्स और नैना

वाल्टर पिछली सीट पर थे। प्रिन्स इसके पैर के घाव के लिए इस कदर दुख प्रकट कर चुका था जिस कदर शायद अपने किसी अजीज की मरन तुल्य बीमारी पर भी न करता। नैना हर बार कहती कि मामूली सा घाव है, मुझे कोई तकलीफ नहीं है। लेकिन प्रिन्स का कहना था कि वह कांटा जो उसके पैर में चुभा होगा अब उसके दिल में चुभ रहा है। रास्ते में यह निश्चय कर लिया गया कि पुल को छोड़ कर किसी पार्क की सैर की जाय और सेक्रेटरी ने प्रिन्स की हिदायत पर कार का रुख शहर के गैर आबाद इलाके में बने हुए नेहरू पार्क की तरफ मोड़ दिया।

यहां पहुँच कर प्रिन्स को शायद ठंडी हवा के असर से छींके आने लगीं और वह अपनी जेब में रूमाल टटोलने लगा जो कुछ सेकिन्ड बाद उसे मिला। उसने एक झटके से रुमाल बाहर निकाला तो एक अजीब सी तेज खुशबू कार में फैल गई।

'ऊफ फो...सेक्रेटरी तुमसे कितनी बार कहा कि मेरे रुमाल पर इतना सेन्ट न डाला करो कि खोपड़ी को काफ की सैर करनी पड़े।' वह बड़बड़ाया।

'हजूर शीशी उलट गई थी गलती से।' सेक्रेटरी ने कहा।

प्रिन्स रुमाल को सामने की तरफ झटके देने लगा। हवा का रुख खिड़की से नैना की तरफ था।

'सचमुच बहुत तेज खशबू है।' वह बड़बड़ाई।

'मुझे तो इसकी अधिकता से नींद आयी जा रही है। यह सेक्रेटरी है या फेयरी इन्डसटरीज। भला इतना सैंट।'

'मुझे भी नींद आ...।' कहते-कहते उसकी जबान लड़खड़ा गई और सिर प्रिन्स के कन्धे पर टिक गया। प्रिन्स ने अपना रुमाल उसकी नाक से लगाकर दो सेकिन्ड बाद जेब में डाल दिया। इसके बाद उसने कालर में लगा हुआ पिन निकाला

और उसकी नोक नैना के हाथ की एक उंगली के सिरे में दाखिल कर दी। नैना को हल्का सा झटका लगा लेकिन वह होश में नहीं आयी। फिर प्रिन्स ने जेब से एक छोटा टयूब निकाला और नैना की उंगली से पिन निकालने के बाद जो खून के कतरे निकल पड़े, उन्हें टयूब पर ले लिया। टयूब को एक शीशे की डिबिया में रखने के बाद इसने एक छोटी सी स्प्रिट की शीशी निकाली और रुमाल के कोने को स्प्रिट में तर करके नैना के उंगली के घाव पर मलने के बाद उसे भी रुमाल सहित जेब में डाल लिया। इस कार्य के बाद इसने असैन्स की शीशी निकाल कर उसकी नाक से लगा दी और इसे भी जेब में डाल कर स्वयं सोफे पर इस तरह लुढ़क गया जैसे बेहोश हो गया हो।

'युअर हाईनैस...आप भी चल बसे...च-च-च-च।' सेक्रेटरी ने ड्राईविंग सीट से कहा।

'बा अदब...बा मुलाहसा...शट अप।' प्रिन्स ने उसे डांट दिया।

'बहुत हो गया...ज्यादा नखरे किये तो भांडा फोड़ दूंगा।'

'आधे से ज्यादा तुम्हें पड़ेंगे।'

मगर फिर वह चुप हो गए। नैना होश में आ रही थी। उसने कसमसा कर आंख खोली तो प्रिन्स सोफे पर बेहोश पड़ा था। उसका सिर एक तरफ ढुलक गया था। वह हैरत से उसे और उसके सेक्रेटरी को देखने लगी।

'मैंने वह रुमाल फेंक दिया है। उसकी खशबू से मुझे भी चक्कर आने लगे थे।'

'कसूर मेरा नहीं प्रिन्स स्वयं बहुत तेज खुशबूयें इस्तेमाल करते हैं।'

'ओह...तो क्या यह बेहोश हो गए हैं।'

'मालूम तो ऐसा ही हो रहा है।'

'तो फिर गाड़ी रोककर इन्हें होश में लाइये।'

'मैंने पार्क की बजाय कार का रुख होटल की तरफ कर दिया है। वैसे मैं डाक्टर होता तो जरूर कोशिश करता।' सेक्रेटरी ने कहा।

'मगर मुझे तो होश आ गया।' नैना ने कहा।

'आप तक हल्की महक पहुँची होगी।'

'तो फिर और तेज चलिये न या कोई डिस्पेन्सरी रास्ते में मिल जाये तो वहीं रोक लीजिये।'

'मैं भी यही सोच रहा हूँ।' सेक्रेटरी यह कह कर खामोश हो गया।

नैना वाल्टर हवालात में

'यह खून कहां से लाये थे।' एस० पी० वहाब ने सुपरिटेण्डेन्ट खान से पूछा।

'यह बाद में बताऊँगा, पहले आप ब्लड टैस्ट की रिपोर्ट बताइये।' खान ने जेब से एक फोटो निकाल कर उसे घूरते हुए कहा।

'इसीलिये तो मैं पूछ रहा हूँ। क्योंकि टेस्ट रिपोर्ट के अनुसार वह खून जो उस शीशे के टुकड़े के नोक पर पाया गया था और वह खून जो आप कालीन के ऊन को काट कर लाये थे और कल शाम को जो खून आपने रबड़ की टयूब में दिया है, तीनों एक ही क्वालिटी के हैं।'

'यानि एक हा शरीर के।'

'ज्यादा ठीक यही समझना चाहिए। वैसे कभी कभी दो बिभिन्न आदमियों के खून भी समान पाये गए हैं।' एस० पी० वहाब ने बताया।

'तो बस मुझे जो कुछ मालूम करना था वह मालूम हो गया।'

'कुछ बताइये भी तो।'

'ठहरिये, पहले यह बताइये, क्या आप इस आदमी को पहचानते हैं।' खान ने वह फोटो एस० पी० वहाब के सामने करते हुए कहा और वह इसे देखते ही चौंक पड़े।

'हाँ-हां...यह विक्टर है, मगर आपको यह तस्वीर कहां मिली।'

'काफी कठिनाई से प्राप्त हुई है। यह पता चलाने के बाद कि एक बार इसने अपनी प्रेमिका के साथ एक स्थानीय स्टूडियो में अपनी तस्वीर खिचवाई थी और इत्तफाक से नैगेटिव वहीं छोड़ गया था।' खान ने बताया।

'खूब...तो आप बहुत कुछ कर चुके हैं।'

'यूं ही समझ लीजिए, लेकिन मामलात अब भी अधूरे हैं।'

'आपने यह नहीं बताया कि यह फोन किसका था।'

'वह भी प्रकट हो जायेगा। पहले आप नैना वाल्टर को संगम होटल से अचानक गिरफ्तार करा लीजिये।' खान के इन शब्दों ने एस० पी० को बुरी तरह चौंका दिया।

'नैना वाल्टर को?' वह हैरत से बोले।

'सन्तोष रखिए मैं कोई गलत कार्य नहीं कर रहा हूँ।'

'अच्छा, अच्छा!' यह कहकर एस० पी० ने घंटी बजायी और अर्दली फौरन आ पहुँचा।

'इन्सपेक्टर मित्रा को बुलाओ।' एस० पी० ने आदेश दिया।

दो मिनट बाद ही इन्सपेक्टर मित्रा दफ्तर में मौजूद थे।

'आप संगम होटल के रूम नम्बर ३९ से मिस नैना वाल्टर को फौरन गिरफ्तार कर लीजिए।'

'मगर, सर—उसका वारण्ट ?'

'ओह, मर्डर सस्पैक्ट की गिरफ्तारी वारण्ट पर निर्भर नहीं।' एस० पी० ने कहा।

'ओ० के० सर !' इन्सपेक्टर मित्रा सैलूट करके चला गया और खान एस० पी० वहाब की तरफ देख कर मुस्कराने लगा।

इन्सपेक्टर मित्रा बीस मिनट बाद वापिस लौटा। नैना वाल्टर उसके साथ थी। लेकिन सहानुभूति में प्रिंस नरसिंह गढ़ भी पीछे पीछे चले आये थे, इन्सपेक्टर मित्रा ने इनकी पोजीशन का ख्याल करते हुए इनके साथ कोई कठोर रवैया नहीं अपनाया और वे आफिस में भी घुस आए। नैना के चेहरे पर किसी प्रकार के भय या बेचैनी के चिन्ह न थे। वह लापरवाही से इंसपेक्टर मित्रा के साथ एस० पी० के आफिस में दाखिल हुई। क्योंकि आर्डरस् ऐसे न थे इसलिए उसे हथकड़ी वगैरह नहीं लगाई गई थी।

'जनाब,ए-आली यह कौन सा इन्साफ है कि आपका कानून सब जानवरों को एक ही लकड़ी से हांकने लगता है।' प्रिंस ने अन्दर दाखिल होते ही एस० पी० से जिरह शुरू कर दी।

'आपकी तारीफ।' एस० पी० ने इन्सपेक्टर मित्रा से इनके बारे में पूछा।

'तारीफ के लायक हमारे दादा जान मरहूम थे जिन्होंने नरसिंह गढ़ की सल्तनत में चार चांद लगा दिये थे। वे स्याह फाम होते हुए भी विलायत से एक साथ पांच बीबियां कर लाये थे।'

प्रिंस ने एस० पी० को जवाब दिया।

'सर आप हिज हाइनेस प्रिंस नरसिंहगढ़ हैं। संगम में ठहरे हुए हैं।' इन्सपेक्टर ने बताया।

'फरमाइये कैसे कष्ट किया।' एस० पी० ने हिज हाइनेस से पूछा।

'मैं इस जुल्म व सितम के खिलाफ विद्रोह करने आया हूं।'

'कैसा जुल्म व सितम।'

'आपने मिस नैना वाल्टर को उठवा मंगवाया जैसे वह हकूमत की ही सम्पत्ति हो। यह सरासर अन्याय है।'

'और क्या यह न्याय है कि आप दूसरे राज्य की कानूनी मिशनरी के काम में रुकावट पैदा करें।'

'रुकावट, मैं आपकी शिकायत वजीर-ए-मदाखलत से कर सकता हूं।'

'नहीं वह क्या, हां'''वजीर-ए-दाखला। (गृह मन्त्री)।'

'कर देखिये, लेकिन, अगर आपको मिस नैना से कोई सहानुभूति भी है तो अभी इसे अपने पास ही रखिए।' एस० पी० वहाब ने उत्तर दिया।

'असम्भव।' प्रिंस ने सिर झटक कर कहा।

'तो कानूनी तौर पर इनके लिये वकील निश्चित करके केस लड़िये।'

'ओह, क्या बकवास लगा रखी है यह ?' खान झुंझला गया।

'आप मत बोलिए।' यह एक प्रिंस के वकार।'

ओह प्रिंस के बच्चे नीचे बैठो अब।' खान ने प्रिंस नरसिंह गढ़ को डांट सुनायी और एस० पी० वहाब हैरत से खान को देखने लगा।

'यह प्रिंस ब्रिंस नहीं मेरे सार्जण्ट वाले हैं।' खान ने एस० पी० की हैरत दूर कर दी।

'बाले।' एस० पी० ने चौंक कर दोहराया और नैना भी आंखें फाड़कर उसे देखने लगी।

'आखिर भाँड़ा फोड़ ही दिया न आपने।' प्रिंस ने मुंह बनाकर कहा।

'सेक्रेटरी।' उसने आवाज दी और सेक्रेटरी भी अन्दर आ पहुँचा। वह उसके साथ अन्दर नहीं आया था।

'तुम भी अपनी मूंछे उतार फेंको।' प्रिंस ने कहा।

'मेरी मूछें नकली नहीं हैं।' उसने मुंह बनाकर उत्तर दिया।

'हमें मालूम है तुम कितने असील हो। पुराने चनह में से एक।'

'खान साहब न होते तो बताता।' सेक्रेटरी ने दबी आवाज से कहा।

'यह भी आपके स्टाफ के कोई…।' एस० पी० ने सेक्रेटरी की तरफ इशारा करके खान से पूछा।

'जी हां, इनका नाम अब्दुल राऊफ है।'

'और 'गम' तखल्लस फरमाते है १६५७ में अपनी मूंछों समेत शेर कहते हुए बरेली से पैदा हुए थे।' बाले ने भी राऊफ का परिचय करा दिया और सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब अपना कहकहा न रोक सका।

'भई बहुत दिलचस्प आदमी हैं ये भी।'

'मुझे क्यों बुलाया है आपने?' नैना खामोशी से उकता कर बोल उठी।

'ओह हां इन्हें तो हम भूल ही गये थे, खैर।' खान यह कहकर नैना की तरफ घूम पड़ा।

'मिस नैना, हमें मिस जोहरा के कातिल की तलाश है।' एस० पी० वहाब ने उससे कहा।

'तो मम, मैं क्या कर सकती हूँ।' वह घबरा कर बोली।

'आप सब कुछ कर सकती हैं।' एस० पी० वहाब ने उसे घूरती हुई नजरों से देखकर कहा।

'मैं आपका मतलब नहीं समझी।'

'आप वारदात कत्ल की रात कहां थीं?'

'यह पिण्डू राम महापूजा की कथा सुनने गई थीं।' बाले बीच में बोल पड़ा।

'तुम चुप रहो।' खान ने उसे डांट दिया।

'हाय यह कैसा हुक्म तालाबन्दी!' बाले ने ठंडी सांस लेकर धीमे से कहा।

'जबान बन्दी।' राऊफ ने उसकी तरफ झुककर उसे समझाया।

'मुझे सलाह नहीं चाहिए। शहर में बहुत से बारबर हैं।'

'लानत है इस बदमिजाकी पर।' राऊफ यह कहकर चुप हो गया। खान और एस० पी० वहाब नैना वाल्टर से सम्बोधित थे।

'मैं अपने रूम में सो रही थी।'

'किस समय सोयी थीं?'

'शायद दस होंगे।'

'लेकिन रोज तो आप ग्यारह बजे तक प्रिंस और शौकत के साथ रहा करती थीं।'

'जी, लेकिन उस दिन मेरे सिर में दर्द था।' नैना ने अपने चेहरे पर फैलती हुई जर्दी को छुपाने की कोशिश करते हुए कहा।

'विशेशतौर पर उसी दिन क्यों?'

'यह—यह मैं क्या जानूं?' वह घबरा गई लेकिन फिर खुद ही उसने अपने आप पर काबू पा लिया।

'मेरा ख्याल है आप लोग जबरदस्ती मुझे परेशान कर रहे हैं। मैं इस सिलसिले में कुछ नहीं जानती।'

'तो फिर मैं ही बताये देता हूँ।' खान ने उसकी आंखों में झांकते हुए सर्द शब्दों में कहा और वह यह महसूस किये बगैर न रहा कि नैना नरवस होती जा रही है। एस० पी० वहाब वाले, राऊफ सब चौकन्ने हो गए। इन्सपेक्टर मित्रा बाहर जा चुका था और इस समय यही पाचों आफिस में मौजूद थे।

'हुम तो सुनिये परसों रात को बारह और एक बजे के बीच आपके कमरे की पिछली खिड़की से, जो मिस जोहरा की खिड़की के ठीक ऊपर मौजूद है, एक रस्सी लटकाई गई।' खान ने कहना शुरू किया।

'यह–यह झूठ है।' नैना चीख उठी।

'खामोश बैठो लड़की।' एस० पी० वहाब ने उसे डांटा।

'फिर उसी रस्सी के द्वारा आपकी खिड़की से एक इन्सानी साया नीचे उतरा। वह नंगे पैर था क्योंकि रस्सी के द्वारा जूते पहन कर उतरना चढ़ना कठिन काम है।' खान ने यह कहते हुए फिर नैना की तरफ देखा। नैना ने कोई उत्तर नहीं दिया।

बिल्ली के से अन्दाज में वह साया नीचे जोहरा के रूम वाली खिड़की पर उतर कर दुबक गया। फिर एक और साया धीरे धीरे इस खिड़की से उतर कर उस खिड़की तक आया। जोहरा क्योंकि सोते समय पिछली खिड़की खुली ही रखती थी। इसलिए इन दोनों को खिड़की के रास्ते अन्दर दाखिल होने में कोई कठिनाई पेश नहीं आई। लेकिन जब वे आगे पीछे दबे पैर जोहरा के सिरहाने पहुँचे तो इत्तफाक से वहां रखी हुई तिपाई को ठोकर लग गई और उस पर रखा हुआ फूलदान गिरकर टूट गया।'

'क्यों मिस नैना?' खान ने यह कह कर तसदीक तलब निगाहों से नैना की तरफ देखा। नैना के होंठ कांप रहे थे। लेकिन वह कुछ नहीं बोली।

'गुलदान के टूटने की आवाज से।' खान ने यह कहना चाहा।

'लेकिन कालीन पर गुलदान कैसे टूट सकता है?' एस० पी० वहाब ने अपनी समझ में अक्लमन्दाना एतराज किया।

'गुलदान पलंग के पाये पर लुढ़क कर गिरा था।' खान ने मुस्कराकर उत्तर दिया।

'हूम! तो गुलदान के टूटने से अचानक जोहरा की आंख खुल गई और पहले इसके कि वह चीख मारे उस आदमी ने जो पीछे था दौड़ कर एक हाथ से उसका मुंह बन्द कर लिया और दूसरे ने चाकू उसके सीने में उतार दिया।' यह कह कर खान एक क्षण के लिए रुक कर नैना को घूरने लगा। वह इससे आंखें न मिला सकी। उसने रुख दूसरी तरफ फेर लिया। खान मुस्करा दिया। एस० पी० वहाब खान के चेहरे को ध्यान पूर्वक देख रहा था। उसके चेहरे के चिन्ह बता रहे थे कि वह खान के अजीब और महान व्यक्तित्व को समझने की कोशिश कर रहा है।

'हां तो बेचारी जोहरा तड़प कर नीचे गिर पड़ी मगर दोबारा उसकी चीख न निकल सकी। उसके गिरते समय खून के छींटों से बचने के लिए दूसरा साया जब घबरा कर पीछे हटा तो उसका पैर शीशे के उस टुकड़े पर पड़ गया जो गुलदान की कोर टूटने से छटक कर अलग गिरा था। वह शीशे की नोक इसके पैर में घुस गई। जिसके कारण से इन्हें बिजली का स्विच आन करके रोशनी करनी पड़ी। ये रोशनी होटल के

चौकीदार ने लगभग डेढ़ बजे रात को देखी थी। बहरहाल शीशे का टुकड़ा खींच कर निकाल लिया गया और इसके साथ ही कुछ खून भी घाव से टपक कर नीचे कालीन पर आ गिरा। फौरी तौर पर इस घाव पर पट्टी भी बेचारी जोहरा के सरहाने पड़ा हुआ दुपट्टा फाड़ कर बांधी गई थी। वह चुन्नी अब तक इस डुपट्टे से गायब है। क्यों ठीक है न मिस नैना ?' खान ने यह कह कर फिर मिस नैना की तरफ देखा।

'मुझे नहीं मालूम।' वह लगभग चीख उठी।

'अभी क्या है अभी तो तुम पागलों की तरह चीखोगी। जोहरा का खून व्यर्थ नहीं जाएगा—बेवकूफ लड़की।' खान ने तलख लहजे में इसे झिड़का।

'आप तो इस तरह सारी घटना बयान कर रहे हैं जैसे अपनी आँखों से देखी हो।' एस० पी० ने गम्भीरता से तबसरा किया।

'सुरागसानी कुछ ऐसी ही टेढ़ी खीर है। वहाब साहब।'

'तो फिर वह लोग फरार हो गये क्या ?'

'जी नहीं वह सन्तोष से अपना काम करते रहे। उस चाकू को जोहरा के सर्द हो जाने के बाद उसके सीने से निकाल कर शौकत के पलंग के पास ला कर डाला गया। रास्ते में उससे खून के कतरे भी टपकाते गए। यह काम समाप्त करने के बाद वह उस खिड़की के रास्ते उसे भेड़ते हुए वापिस लौट गए। उसी रस्सी के द्वारा।'

'लेकिन इसका उद्देश्य।' एस० पी० वहाब ने पूछा।

'शौकत को जोहरा के इलजाम में फंसा देना, क्योंकि उसी शाम को वह जोहरा से लड़ चुका था और प्रिंस और जोहरा के सम्बन्धों के बारे में उसे बदगुमानी भी हो गई थी।'

'कौन थे वह लोग मिस नैना ?' एस० वहाब ने मिस नैना ही से प्रश्न किया।

'एक पुरुष और एक औरत ! औरत जिसके पैर में घाव आया था आपके सामने बैठी हुई है।' खान ने कहा जिस पर नैना अपनी कुर्सी से उछल पड़ी और एस० पी० वहाब उसे हैरत से देखने लगा।

'मम। मैं नहीं जानती यह झूठ है। मैं कुछ नहीं जानती।'

'लेकिन मैं जानता हूँ। प्रिन्स के मेकअप में सार्जेन्ट बाले स्वीमिंग पुल पर तुम्हारे पैर का घाव देख चुके हैं और कार में तुम्हें बेहोश करके तुम्हारा खून भी टैस्ट के लिए प्राप्त कर लिया गया था।'

'ओ गाड ! आपने सारी खिचड़ी पका डाली।' एस० पी० वहाब ने बोसाख्ता कहा।

'लेकिन खायेंगे आप ही। मैं तो बाले और शौकत की गिरफ्तारी के कारण से यहां आया था। और शौकत की गर्दन इस मुसीबत से बचा कर चला जाऊंगा।' खान ने कहा।

नैना का चेहरा जर्द हो रहा था, ऐसा मालूम होता था जैसे बहुत समय से बीमार हो। उसने कुछ कहने के लिए होंठ खोले लेकिन कह न सकी।

'तो यही लड़की कातिल है उसकी।' एस० पी० ने घृणा-पूर्ण अन्दाज में नैना को देख कर खान से पूछा।

'नहीं ! कातिल की सहायक है। वास्तविक कातिल विक्टर है।'

'विक्टर ?' एस० पी० हैरत से उछल पड़ा। और नैना की आंखें भी हैरत व भय से फैल गईं।

'हां वह रात के ग्यारह बजे नैना से मिलने आया था और

वारदात के बाद होटल के पिछाड़ी भाग से निकल गया। अगर सामने से आ जाता तो गैरे या चौकीदार जरूर देखते।'

'लेकिन होटल में किसी अजनबी के रात के समय दाखिले की रिपोर्ट नहीं मिली।' एस० पी० ने कहा।

'कैसे मिलेगी ? वह तो इसका भाई था देहली गया हुआ है। उसी ने इस लड़की को संगम में कमरा दिलाया था। और उसके जाने के बाद इस लड़की ने मशहूर कर दिया था कि वह इसका भाई है और एक जरूरी काम से इसे यहां छोड़ कर देहली गया हुआ है।'

'उफ फो भई वाकई मान गया आपको. आप आदमी नहीं जिन्न हैं।' एस० पी० वहाब ने खान की प्रशंसा की।

'कोई खास बात नहीं। सही अनुमान लगाने से सुराग की सम्भावनाएं खुद बखुद स्पष्ट हो जाया करती हैं। खान ने मुस्करा कर कहा। लेकिन नैना बेहोश हो चुकी थी। वह शायद इस इन्साफ को बर्दास्त न कर सकी। उसका सिर कुर्सी के तकिए पर दायें तरफ लुढ़क गया था।

हिरासत में खून

बड़ी दिक्कत तो यह हुई कि सफे नाजुक पर कोई कानून थर्ड डिगरी के प्रयोग की आज्ञा नहीं देता और नैना वाल्टर ने ऐसी चुप साध ली कि एक शब्द तक उसके मुंह से न निकला। बहरहाल सबूत काफी थे, इसलिए इस पर चार्ज लगा कर बंद कर दिया गया। शौकत की बे गुनाही प्रकट होने के बावजूद उसकी रिहाई के लिए मजिस्ट्रेट से इजाजत जरूरी थी। इस लिए शौकत को वह रात भी हवालात में गुजारनी पड़ी। जो

बहरसूरत दूसरी रातों की तुलना इसके लिए कुछ कम कष्ट दायक थी।

बाले प्रिंस नरसिंह गढ़ की हैसियत से संगम होटल में वापिस आ चुका था और नैना वाल्टर की गिरफ्तारी पर अफसोस प्रकट करके पुलिस वालों को गंदी किस्म की गालियां दे रहा था। मैनेजर को इस घटना का सब से ज्यादा अफसोस था और जब वह प्रिंस के सामने पड़ा तो प्रिंस टोक ही बैठा।

'मैनेजर साहिब आप तो इस तरह उदास हैं, जैसे आपकी नानी मर गई हो।'

'मुझे किसी के मरने जीने का इस कदर गम नहीं है, जिस कदर अपने होटल की बदनामी का।'

'सचमुच एक शरीफ आदमी के डूब मरने का मोकाम है।'

'लेकिन आप यकीन जानिये कि इससे पहले इस होटल में कभी ऐसे गैर शरीफआना घटनायें नहीं हुई।'

'मुझे तो एक ही समय दोनों का गम खाए जा रहा है। हाय बेचारी मिस जोहरा और बेचारी मिस नैना वाल्टर।' यह कहते-कहते प्रिंस ने झुक कर मैनेजर के कान में कहा।

'सच पूछिये तो मुझे नैना वाल्टर ही ज्यादा पसन्द थी।'

'लेकिन अब किया भी क्या जा सकता है।' मैनेजर ने अफसोस वाले अन्दाज में दोनों हाथ झटके।

'क्यों नहीं किया जा सकता। मैं इसे बचाने के लिए लाखों रुपये खर्च कर दूंगा। मैं एक दर्जन वकील करूंगा।'

'क्या सचमुच आप उसके लिए इतना कर सकते हैं।' मैनेजर ने धीरे से पूछा।

'क्यों नहीं...मगर...मगर मैनेजर...क्या वह सचमुच मेरी हो सकती है ?' दूसरा वाक्य इसने भेद भरे स्वर में कहा।

'अच्छे बर्ताव से कुत्ते भी दुम हिलाने लगते हैं।' मैनेजर ने उत्तर दिया।

'काश वह भी दुम हिलाने लगे।' प्रिंस ने लम्बी सी सर्द आह खींच कर कहा।

'सेक्रेट्री।' प्रिंस ने सेक्रेट्री को पास बुलाया। वह तुरन्त ही आ गया।

'हम चाहते हैं कि किसी कीमत भी नैना को बचाया जाए।'

'जरूर बचाया जाएगा यूअर हाईनैस।'

'ठहरिये, आप अगर वास्तविक यही चाहते हैं तो शायद मैं आपको कुछ ऐसे आदमी दे सकूँ।' मैनेजर ने धीरे से कहा।

'वाह-वाह नेकी और पूछ-पूछ। जल्दी प्रबन्ध कीजिए।'

'मैं एक घंटे बाद आप को सूचना दूंगा।' मैनेजर यह कर वहां से खिसक गया और प्रिंस अपने सेक्रेट्री सहित सीढ़ियां चढ़ता हुआ अपने रूम में चला गया। लेकिन जैसे ही उसने दरवाजा अन्दर से बन्द करना चाहा, वह दरवाजे के एक पट पर अन्दर की तरफ नजर आने वाले एक चमकदार खंजर को देख कर चौंक पड़ा। उसके साथ कागज का एक पुर्जा लगा था 'नना अगर आजाद न हुई तो मेरा बदला बहुत खौफनाक होगा।' उस पर सिर्फ इसी कदर लेख लिखा था। इसके अति-रिक्त न लिखने वाले का नाम था न पता।

'यह लीजिए अब हम बहराम डाकू की नीली छत्तरी में दाखिल हो चुके हैं।' प्रिंस ने पलट कर अपने सेक्रेट्री से कहा।

'आगे-आगे देखिए होता है क्या ?'

'शायरी मत करो। मुझे पहले ही शक था कि उनका कोई न कोई आदमी इस होटल में उपस्थित है।'

'मैनेजर।'

'कैसे कहा जा सकता है, हो सकता है मेरी चापलूसी की खातिर इस तरह की बातें कर रहा हो।'

'तो और कौन हो सकता है ?'

'यही तो समझना बाकी रह गया है, खैर इसमें भी ज्यादा देर नहीं लगेगी।'

'हमें अब सावधान रहना चाहिए।' राऊफ ने चिन्ता जनक लहजे में कहा।

'हम असावधान कब रहते हैं।'

'मैं नीचे हाल में जा कर मैनेजर पर नजर रखूंगा।'

'सिर्फ मैनेजर पर ही नहीं बल्कि यहां रहने वाले दूसरे लोगों पर भी।'

'खैर, जाता हूँ।' यह कहता हुआ राऊफ बाहर लौट गया और बाले ने वस्त्र बदलने के लिए अन्दर से दरवाजा बन्द कर लिया।

● ●

लगभग साढ़े बारह बजे दिन को खान खुद हवालात में नैना वाल्टर से मिलने पहुँच गया। सिपाही दरवाजा खोल कर एटैन्शन खड़ा रहा। लेकिन नैना ने खान की शक्ल देखते ही मुंह दूसरी ओर फेर लिया। खान ने जेब से हाथ निकाला तो उसमें एक कार्ड साईज की तस्वीर थी।

'मैं तुमसे यहां अपराध स्वीकार कराने नहीं आया हूँ। लेकिन कुछ मालूम करना जरूर चाहता हूँ।' खान उससे सम्बोधित हुआ लेकिन उसने कोई उत्तर नहीं दिया।

'मुझे सिर्फ यह औरत चाहिए जो इस तस्वीर में विक्टर के साथ है। यह उसकी पत्नी है।' खान ने यह कहते हुए वह तस्वीर नैना के सामने फैंक दी। न जाने क्यों इन शब्दों पर वह चौंक पड़ी। उसकी नजर आप से आप इस फोटो पर जा पड़ी और उसने झुक कर इसे उठा लिया।

तस्वीर में विक्टर के साथ एक खूबसूरत सी जवान लड़की खड़ी मुस्करा रही थी। वह विक्टर के पहलू से लगी खड़ी थी। वह तस्वीर को गौर से देखने लगी और खान उसके चेहरे की बदलती हुई अवस्था का निरीक्षण करता रहा।

'यह झूठ है, उसकी कोई पत्नी नहीं है।' वह क्रोध में तस्वीर फेंक कर चीखी।

'मैं झूठ नहीं बोला करता। इसका अनुमान तुम्हें रात की बातों से ही हो गया होगा। बहरहाल तुम मानो या न मानो। कानूनन वह उसकी पत्नी है और मुझे उसका पता चाहिए।' खान ने लापरवाही से कहा। इसके इन शब्दों ने नैना के चेहरे पर तरदत की बजाय जोश के चिन्ह पैदा कर दिए।

'वह मुझसे झूठ नहीं बोलेगा, उसकी कोई पत्नी नहीं थी।'

'यह प्रमाणित करने के लिए मेरे पास गवाह के रूप में एक चर्च का इनकी शादी का सर्टीफिकेट भी मौजूद है और विक्टर के दो बच्चे भी हैं। सम्भव है उसने तुम से यह भेद छिपाया है लेकिन मुझे इन तमाम बातों से वास्ता नहीं। मैं सिर्फ उस स्त्री का पता मालूम करना चाहता हूँ।' खान ने कहा।

'विक्टर, क्या वह इतना कमीना हो सकता है, मैं नहीं मानती।' वह सर झटक कर बड़बड़ाई।

'मैं कह चुका हूँ कि मुझे तुम्हारी फिजूल बातों से मतलब नहीं। सिर्फ यह बताओ कि क्या तुम इस लड़की को जानती हो ?'

'मैं नहीं जानती और न मैं इस सूअर को जानती हूँ।'

'कम से कम इस सूअर को तो जरूर जानती हो और इस का पता भी और अगर कानून का साथ देना चाहो तो तुम्हें सरकारी गवाह बनाया जा सकता है।'

'इससे क्या मिलेगा, मैं तो इससे अपना बदला लूंगी।'

'बेशक, लेकिन सरकारी गवाह बने बगैर असम्भव है। क्योंकि दूसरी सूरत में अगर तुम्हें फांसी नहीं तो लम्बी कैद जरूर होगी।'

'मम....मैं कुछ नहीं जानती।' नैना फिर अकड़ गई।

'तुम विक्टर को बचाना चाहती हो तो बचाओ। लेकिन मुझे उसकी पत्नी चाहिए।'

'उसकी पत्नी नहीं है, कोई पत्नी नहीं है।' नैना दोनों कानों पर हाथ रख कर चीख पड़ी।

'क्या इस तस्वीर को देख कर तुम मुझे झुठला सकती हो। मुझे मिलने वाली सूचनायें बच्चों का खेल नहीं हुआ करती हैं।'

'ओह ..।' वह दांतों से अपना निचला होंठ काटने लगी और इसका सिर झुक गया। खान इसके बिफरे हुए चेहरे को देख रहा था। उसका तीर निशाने पर बैठा था। हालांकि उसने जो कुछ भी कहा था, महज अन्दाजन ..।

'मैं बताऊंगी, मैं बताऊंगी, वह कमीना डयोली के इंग।' और अचानक रोशनदान से होने वाले फायर के साथ नैना की चीख सुन सका। गोली उसके सिर पर पड़ी थी और उसके चिथड़े उड़ गए थे। वह संतरी को पुकारता हुआ बाहर की तरफ दौड़ा। पुलिस स्टेशन में फौरन भगदड़ मच गई। खान को दूसरी तरफ से वहाब आता नजर आया। वह खान को देख कर रुक गया।

'यह फायरिंग की आवाज कैसी थी ?' उसने पूछा।

'किसी ने नैना वाल्टर को हवालात के पिछाड़ी रोशनदान से गोली मार दी है।' खान ने सिर्फ इतना बताया और आगे बढ़ गया।

अभी वह दरवाजे तक भी नहीं पहुँच पाया था कि फायरिंग की एक और आवाज ने उसे चौंका दिया। वह एक सेकिन्ड के लिये रुका और फिर बाहर निकल गया।

पिछाड़ी भाग में एक गैर आबाद सी सड़क थी। जिस पर आवाजाही बहुत कम रहती थी। पुलिस के सामने के भाग में अलबत्ता दुकानें और होटल थे। खान ने दूर ही से देखा, इन्सपेक्टर मित्रा एक आदमी की लाश पर झुका हुआ था। खान के करीब पहुँचते ही वह सीधा खड़ा होकर अटैन्शन खड़ा हो गया। इसके हाथ में रिवाल्वर था जिससे अभी तक धुंआ निकल रहा था।

'सर, यह आदमी हवालात की पिछली दीवार कूद कर भाग रहा था।' मित्रा ने बताया।

'ओह, तो यह था।' खान यह कहता हुआ उस पर झुक गया। इसने देखा गोली उसके सीने में दाहिनी तरफ लगी थी। वह औसत कदोकामद का, एक अच्छे खद्दोखाल का आदमी था। लेकिन लिबास से मालूम होता था कि खराब सोसाईटी का आदमी है। खान ने इसकी नब्ज पर हाथ रखा तो चौंक पड़ा। इसमें अभी जिन्दगी बाकी थी।

'जल्दी से एम्बूलेन्स बुलवाईये।' खान ने इन्सपेक्टर मित्रा को हिदायत दी।

'एम्बूलैन्स ? पुलिस की या हास्पिटल की।'

'ओह, तो यह भी बताना पड़ेगा।'

'मेरा मतलब है सर पुलिस एम्बूलैन्स को एम० टी० से यहां पहुँचने में ज्यादा समय लगेगा।'

'क्या आप इतना भी नहीं जानते कि फायरब्रिगेड का स्टेशन यहां से एक फर्लांग से भी कम फासले पर है।' खान ने झुंझला कर कहा।

'यस सर, मैं तो भूल ही गया था।'

यह कह कर वह तेज कदम उठाता हुआ चला गया। उसके जाने के बाद खान इस आदमी की जेबें टटोलने लगा लेकिन इनमें कुछ भी न था, सिवाय चन्द कागजात के। जिनमें से एक पुर्जा एस० टी० रूट की बस का टिकट था जो तीन आने के मूल्य का था। अलबत्ता एक निचली जेब में उसे एक पिस्तौल मिल गया। खान ने उसे बाहर निकाल कर देखा। देसी बनावट का एक ईशारिया पांच का पिस्तौल था जिसमें आधी इंच से भी छोटी गोली चलती थी। खान ने उसकी नाली को टटोल कर देखा वह बर्फ के सामान सर्द थी। फिर उसने केस खोल कर देखा इसमें चार गोलियां लोड की हुई थीं लेकिन सूंघने पर वह सोच में पड़ गया। बारूद की बू जरा भी नहीं आ रही थी। किसी ख्याल के दिमाग में आते ही उसने वह पिस्तौल अपनी जेब में डाल लिया। इतनी देर में कई कान्सटेबल करीब आ गए थे और इत्तफाक से सड़क से गुजरने वाली एक टैक्सी भी शायद यह दृश्य देखने के लिए ड्राईवर ने रोक दी थी।

'इसे इस टैक्सी में डाल दो।' खान ने दो कान्सटेबलों को हिदायत की और फौरन ही उस दम तोड़ते आदमी को टैक्सी में पिछली सीट पर डाल दिया गया। जिसके साथ ही कान्सटेबल भी बैठ गए। खान अगली सीट पर ड्राईवर के पास जा बैठा।

'सबसे करीब जो हस्पताल हो वहाँ चलो।' खान ने ड्राईवर को हिदायत की और टैक्सी रवाना हो गई।

खान अभी उस स्पेशल वार्ड से बाहर निकल ही रहा था जिसमें उस आदमी को लाया गया था कि इन्सपेक्टर मित्रा आ पहुँचा। वह घबराया हुआ सा था।

'सर, मैंने तो वहां दो-दो एम्बूलैन्स बुलायी थीं।' उसने खान को देखते ही कहा।

'और मैंने सोचा शायद वह ज्यादा देर न रह सके। इस-लिए टैक्सी पकड़ ली थी। लेकिन···।' कहते-कहते वह रुक गया।

'लेकिन क्या ?' मित्रा ने जल्दी से पूछा।

'वह यहाँ पहुँचने के बाद होश में आये बगैर ही समाप्त हो गया।' खान ने निराशा से उत्तर दिया।

'ओह ?' मित्रा ने एक लम्बी सी साँस लेकर सिर झुका लिया—'गलती मुझ ही से हुई जो मैंने उसके पैरों पर फायर नहीं किया।'

'खैर, जो हुआ सो हुआ लेकिन बना बनाया खेल बिगड़ गया। अब कोई सुराग है न सबूत।' खान बड़बड़ाता हुआ आगे चलने लगा और मित्रा उसके पीछे खामोशी से चलता रहा। वह पुलिस स्टेशन से अपनी जीप कार लाया था, खान भी उसमें बैठ गया।

लेकिन वापसी पर खान ने उसकी जीप कार एक पुल के किनारे रुकवा दी।

'मिस्टर मित्रा, आप जाईये, वहाब साहब को रिपोर्ट दे दीजिएगा। मेरी तबीयत परेशान है। मैं कुछ देर यहा शान्ति से बैठना चाहता हूँ।' खान ने कहा।

'जैसी आपकी मर्जी।' मित्रा ने आज्ञा कारी अन्दाज में यह कह कर दरवाजा खोल दिया और खान उतर गया। इसकी कार के नजर से ओझल हो जाने के बाद खान उतर गया। इसकी कार के नजर से ओझल हो जाने के बाद खान ने नजर के सामने से गुजरती हुई एक टैक्सी रोक ली। और उसमें सवार हो गया।

'किसी करीबी फोटो स्टूडियो तक ले चलो।' खान ने ड्राईवर को हिदायत की और अपनी जेबें टटोल कर कुछ निकालने लगा।

टैक्सी एक दूसरी आबाद सड़क पर घूमकर 'सनवे स्टूडियो' के सामने रुक गई और खान टैक्सी को ठहरने की हिदायत करके अन्दर चला गया। लगभग पांच मिनट बाद बाहर निकला। ड्राईवर आराम से सिगरेट पी रहा था।

'यहां कहीं टेलीफोन होगा आसपास।' खान ने ड्राईवर से पूछा।

'वह क्या सामने पेट्रोल पम्प है साहब। वहां फोन जरूर होगा।'

'अच्छा ठहरो, मैं आता हूँ।'

● ●

प्रिन्स जबरदस्ती मैनेजर का दिमाग चाट रहा था। बात सिर्फ इतनी हुई थी कि मैनेजर ने अपने होटल के खानों की प्रशंसा कर दी थी। वैसे भी इसका सेक्रेटरी क्योंकि वहुत देर से किसी काम से गया हुआ था इसलिए वह न सही मैनेजर ही सही।

'क्या घास पकवाते हैं। मेरे द्वीप में जो खाना खाया जाता है वह आप खा लें तो हातमतायी की तरह जिन्दगी भर एक बार खाया फिर खाने की हवस है के नारे लगाते फिरें।'

'हो सकता है···हो सकता है।' मैनेजर ने इस बात में सिर हिलाया।

'हो सकता हैं, क्या माने होता है, कई होते हैं। अच्छा आपके यहां कौन-सा खाना ज्यादा पसन्द किया जाता है।'

'बरयानी, मुर्ग पुलाव ?' मैनेजर बताने लगा।

'छी, छी, छी, यह भी कोई खाने हुए। हमारे यहां के कोद पुलाव और अडवानी खाने में इतने स्वादिष्ट होते हैं कि ······मगर आप क्या जाने आप हिन्दुस्तानी ठहरे।'

'किसी न किसी दिन तो जान ही लूंगा।' मैनेजर ने मुस्करा कर थोड़ा सा सिर को झटका देते हुए कहा।

'हमारे यहाँ बटेरों का मुर्ग मुसल्लम मशहूर हैं।'

'बटेरों का मुर्ग मुसल्लम ?' एक दूसरे मेहमान हैरत से गुर्राया।

'जी हां, वह एन्टीफलाजूस तो आपने पी ही न होगी।'

'यह क्या जीज होती है यूअर हाईनेंस।' तीसरा मेहमान बोल पड़ा।

'इसे हाईनेंस नहीं घोड़स् कहते हैं।' प्रिन्स ने बुरा सा मुंह बना कर उसे देखते हुए कहा—'आप इतना भी नहीं समझते कि यह एक खालस किस्म की नरसिंह गढ़ी शराब होती है।'

'अच्छा ?'

'आप लोगों ने फकर नीली फराक का नाम भी नहीं सुना होगा।'

'यह क्या चीज होती है प्रिंस।' मेहमान ने प्रश्न किया।

'बड़ा शानदार ऐतिहासिक स्थान है हमारे द्वीप का। कहा जाता है कि हमारे पूर्वज पहले जमाने में इस पर नीली फराकें पहन कर हमलावर हुए थे। बाद में लुंगियां बांधने लगे।'

'यूअर हाईनेंस, आपने भी हमारे शहर का बहार बाग नहीं देखा होगा।' मैनेजर ने सरगोशी के लहजे में कहा।

'बहार बाग...।' प्रिंस ने चौंक कर पूछा।

'जी हां, यह एक ऐसा स्थान है जहां जन्नत की हूरों से भी ज्यादा खूबसूरत चेहरे देखने को मिलते हैं।' मैनेजर ने बताया।

'तब तो हम जरूर सैर करेंगे इसकी।'

'हुजूर का जी चाहे तो मैं सैर करा लाऊं साथ चल कर।'

'हां हां जरूर, क्यों नहीं।'

'तो आप तैयारी फरमा लें ताकि आपके सेक्रेटरी के आने के बाद रवाना हुआ जा सके।'

'हां हां, जरूर।'

इसके बाद मैनेजर आज्ञा लेकर चला गया।

एक चेहरा

खान वापिस आकर सेन्ट्रल पुलिस स्टेशन में एस० पी० वहाब के कमरे में बैठा ही था कि इसका फोन आ गया। उसने रिसीवर उठा लिया। दूसरी तरफ राऊफ बोल रहा था।

'साहब मैंने उस घर का पता चला लिया है।'

'बहुत अच्छा।' खान ने कहा।

'सी० जे० रूट की बस का किराया सेन्ट्रल पुलिस स्टेशन की सीमा से चन्द्रशेखर रोड़ तक बीस पैसे है। मैंने इस क्षेत्र में उस फोटो के द्वारा इन्कवाइरी की थी जो सन वे स्टूडियो से मुझे मिला है।'

'मुझे उस आदमी के बारे में बताओ।'

'उसका नाम भूषण है। वह एक मामूली से मकान में रहता है। यहां उसके साथ उसकी बूढ़ी मां और जवान बहन भी है। उनसे मुझे मालूम हुआ है, कि वह कई महीनों से बेकार था और रोज नौकरी की तलाश में भटका करता था। वैसे मुहल्ले के लफंगे लोगों में भी उसकी बैठक थी, लेकिन खुद बदमाश आदमी न था।'

'हूं...और...।'

'वह सुबह सात बजे घर से निकला था, तब से वापिस नहीं आया।'

'यह क्या खास बात हुई। कोई काम की बात करो।'

'सिर्फ एक। वह भी मेरे कुरेदने पर मालूम हो सकी है।

उसके एक पड़ोसी मित्र से मालूम हुआ है कि एक दिन भूषण ने सिर्फ इतना बताया था कि संगम होटल के मैनेजर ने उसे काम देने का वायदा किया था।'

'बस।'

'जी हां, अलबत्ता कल रात कोई आदमी उसे बुलाने भी आया था और वह उसके साथ कहीं जाकर एक घंटे बाद ही लौट आया था।'

'किस के साथ गया था? यह नहीं मालूम किया।'

'यह नहीं मालूम हो सका, क्योंकि अन्धेरा क्षेत्र होने के कारण से स्पष्ट तौर पर उस आदमी ने भूषण को साथ ले जाने वाले की शक्ल नहीं देखी थी। लेकिन साथ ही वह यह भी कहता है कि अन्दाजे से वह कोई पुलिस का आदमी मालूम होता था।'

'पुलिस का?' खान चौंक पड़ा। तुम उस आदमी को फौरन मेरे पास ले आओ।'

'बेहतर है।' राऊफ ने कहा और खान ने किसी के कदमों की आहट पाकर फोन का सिलसिला बन्द कर दिया। आने वाला सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब था वह बहुत परेशान नजर आ रहा था।

'खान साहब इन घटनाओं ने तो मेरा दिमाग खराब कर दिया है। कुछ समझ में नहीं आ रहा।' वह सिर पकड़ कर कुर्सी पर बैठ गया।

'घबराइये नहीं, अब ज्यादा देर नहीं लगेगी। लेकिन इन्स्पेक्टर मित्रा आपके साथ गए थे वे कहां रह गये।'

'उनकी वाइफ की तबियत खराब है, वह मुझ से कुछ मिनट की मोहलत लेकर उसे देखने गए हैं।' एस० पी० वहाब ने बताया।

'उनके घर पर फोन तो होगा।'

'जी हां।'

'जरा नम्बर बताइये।'

यह कह कर खान फोन सम्भाल कर बैठ गया। एस० पी० वहाब ने नम्बर बताया और वह डायल करने लगा। लेकिन काफी देर घंटी बजने के बावजूद दूसरी तरफ से किसी ने रिसीवर नहीं उठाया।

'वह शायद घर पर नहीं है।' खान ने यह कह कर एस० पी० वहाब की तरफ देखा।

'तो हास्पिटल ले गए होंगे।'

'ओह।' यह कह कर खान चुप हो गया। लेकिन एस० पी० वहाब को कुछ याद आ गया।

'मैं यह बताना भूल ही गया कि वह आपके मिस्टर शौकत को रिहा कर दिया गया है।'

'कब?'

'जब आप हास्पिटल गये थे।'

'किस ने? आपने रिहा किया?'

'मैंने इस्पेक्टर मित्रा को हुक्म दिया था।'

'आपको मेरी वापसी तक प्रतीक्षा करनी चाहिये थी।'

'क्यों, क्या ठीक नहीं किया मैंने?'

'अभी मालूम हुआ जाता है।'

खान ने यह कह कर फोन पर संगम के नम्बर डायल करने शुरू किए। दूसरी तरफ इन्कवाइरी गर्ल ने रिसीवर उठाया।

'जरा प्रिंस नरसिंह गढ़ को बुला दीजिये।' खान ने कहा। एक मिनट बाद ही बाले फोन पर बोल रहा था।

'क्या शौकत वहां पहुँचा?'

'बिल्कुल नहीं, उसके फरिश्ते भी यहां तक नहीं पहुँचे।'

'ओह ! तब तो जरूर कुछ गड़बड़ हैं ।' खान बड़बड़ाया ।

'यहां भी गड़बड़ मालूम होती है । मैनेजर मुझे किसी परिस्तान की सैर कराने ले जा रहा है ।'

'सिर्फ भाई हराम मूंछ की वापसी का इन्तजार है ।'

'और शौकत को भी गायब कर दिया होगा रास्ते से ।'

'तो क्या मैनेजर का सम्बन्ध ?'

'कोई ठोस बुनियाद तो नहीं इस संदेह की । फिर भी गर्द व पेश से होशियार रहो ।'

'किसका गर्द व पेश ?'

'शट अप ।'

'आई एम शटअप ।'

'राऊफ थोड़ी देर बाद वापिस आ जायेगा ।' खान ने यह कह कर सिलसिला बन्द कर दिया ।

'आप क्या कह रहे थे, मिस्टर शौकत के बारे में ?' वहाब ने पूछा ।

'यही कि उसके साथ फिर कोई घटना पेश आई है ।'

'खुदा जाने किस किस्म की मुसीबतें घट रही हैं इस शहर पर ।'

अभी वह बात कर ही रहे थे कि राऊफ आ पहुँचा । उसके साथ एक साधारण कद, अधेड़ उम्र आदमी और था । खान ने उसे सिर से पैर तक देखा और फिर कुर्सी पर बैठने का इशारा किया ।

'वहाब साहब, मेरा ख्याल है आपके आफिस में टंगे हुए इस ग्रुप फोटो में आप का सारा स्टाफ ही होगा ।' खान ने एस० पी० से एक असम्बन्धित सा प्रश्न किया ।

'जी हाँ ।'

'आप इस फोटो में उस आदमी को तलाश करने की कोशिश कीजिए ।' खान ने अजनबी से सम्बोधित होकर कहा ।

वह उठ खड़ा हुआ और ग्रुप फोटो को गौर से देखने लगा ।

'क्या फिर कोई पहेली हल कर रहे हैं आप ?' एस० पी० वहाब ने खान से पूछा ।

'अब तो आखिरी हल का समय आ गया है ।' खान मुस्कराया ।

वह आदमी कई मिनट तक इस फोटो को घूरता रहा फिर उसकी उंगली एक तस्वीर पर पड़ गई । यह एक लम्बे कद का सांवला आदमी था ।

'यह कौन है ?' खान ने इसके बारे में एस० पी० वहाब से पूछा ।

'यह एक हवलदार है । राम मूर्ति ।'

'किसके स्टाफ में है ?'

'इन्सपेक्टर मित्रा के ।'

'इन्सपेक्टर मित्रा, इन्सपेक्टर मित्रा ।' खान शब्दों को दबाते हुये बड़बड़ाया ।

'क्यों क्या बात है ?' एस० पी० चौंक पड़ा ।

'कुछ नहीं, कुछ नहीं ।'

लेकिन हवलदार की शिनाख्त क्यों करायी आप ने ?'

'जरा सब्र कीजिये । सब मालूम हो जायेगा । राऊफ इन्हें विदा कर दो ।' खान ने जेब से दस दस के दो नोट निकाल कर उस आदमी को देते हुये कहा ।

'नहीं जनाब, मैं गरीब आदमी सही लेकिन यह न स्वीकार करूंगा । एक शहरी की हैसियत से मेरा जो फर्ज था मैंने पूरा किया है ।'

'बहुत बहुत शुक्रिया आपका । आप की तरह अगर सब लोग यह ही सोचने लगेंगे तो समाज में बुराई का तत्व बाकी न रहे ।' खान ने उससे हाथ मिलाते हुए खुश होकर कहा ।

उसके जाने के बाद खान ने राऊफ को बाले के पास पहुँचने की हिदायत की और स्वयं एस० पी० से सम्बोधित हो गया।

'मैं राम मूर्ति हवलदार को देखना चाहता हूँ।' इसने कहा।

एस० पी० ने तुरन्त अर्दली को राममूर्ति को बुलाने के लिये भेज दिया लेकिन जब उसने आकर बताया कि वह ड्यूटी पर नहीं है तो खान उठ खड़ा हुआ।

'आखिर मामला क्या है आप तो कुछ बताइये।'

'इस खतरनाक साजिश में मुझे कानून के हाथ भी नजर आ रहे है।'

'क्या, यानि कि आप ?' एस० पी वहाब ने कहना चाहा।

'नहीं वहाब साहब, किसी गलतफहमी में न पड़िये। मैं जो कर रहा हूँ वह आप ही के लिये।'

'लेकिन आपकी बातें मेरी दिल की धड़कनें तेज होने का कारण हो रही हैं।'

'सब मुझ पर छोड़ दीजिये।' खान यह कहता हुआ बाहर निकल गया और एस० पी० वहाब सिर पकड़ कर बैठ गये।

तीन कैदी

प्रिंस नरसिंह गढ़, उनका सेक्रेटरी और मैनेजर तीनों कार में पिछली सीट पर बैठे थे और ड्राईवर शायद मैनेजर का ही था, इनकी कार अभी शहर के बाहर आबाद इलाके से बाहर निकली ही थी कि अचानक एक स्याह रंग की लम्बी कार ने इनका रास्ता रोक लिया, उसमें से तीन आदमी जो सादा लिबास में थे नीचे उतर आये।

'आप लोग तीनों उतरिये।' उनमें से एक ने जिसके हाथ में पिस्तौल थी हुक्म दिया।

'क्यों भई, तुम्हारा क्या बिगाड़ा है हमने!' बाले ने खिड़की से सिर बाहर निकाल कर उससे पूछा।

'आप लोगों को सी० आई० डी० आफिस में चलना पड़ेगा।'

'क्यों ?' मैनेजर ने हैरत से पूछा।

'यह वहीं मालूम हो जायेगा।'

'लो भई सेक्रेटरी और सैर करो चम्बल गढ़ की।' प्रिंस अपने सेक्रेटरी से बोला।

'ड्राईवर घुमाओ गाड़ी।'

'नहीं हमारी गाड़ी में, हम इतने बेवकूफ नहीं हैं।'

'ये कौन कहता है।' प्रिंस बड़बड़ाया, फिर कार से बाहर आ गया।

इन तीनों को इस काले रंग की कार में बैठा लिया गया, दूसरे दो आदमियों ने भी अपने पिस्तौल निकाल लिये थे।

'मैनेजर साहब, ये क्या घपला हैं ?'

'मम, मैं नहीं जानता हुजूर।' मैनेजर घिघियाया।

'चुप बैठो।' अजनबियों में से एक ने डांटा।

फिर उन्होंने कार के स्याह शीशे चढ़ा दिये और बाहर का दृश्य अन्दर बैठे हुये लोगों की नजर से ओझल हो गया, कार तेज रफ्तारी से दौड़ रही थी।

बहर हाल कुछ मिनट बाद वह झटके से एक जगह रुकी तो शीशे उतारे बगैर कार के दरवाजे खोल दिये गये और वह तीनों नीचे उतर कर पिस्तौल सम्भाले खड़े हो गये।

'तशरीफ लाइये, यूअर हाईनेस ?' उनमें से एक ने व्यंग्य भरे स्वर में बाले से कहा और दूसरे दो कहकहा मार कर हंस पड़े—

'हंस लो, बेटो, मेरे द्वीप में कभी आये तो गिन-गिन के बदले लूंगा।'

'खूब ?' दूसरा कहकहा मार कर बोला—'रस्सी तमाम जल गई, पर बल नहीं गया।'

'सेक्रेटरी !' बाले ने राऊफ से सम्बोधित हो कर कहा—'आप भी शायर मालूम होते हैं, दोस्ती कर लो, तुम्हारी ब्रादरी वाले हैं ।'

'यहां भी मजाक ?' वह झुंझला कर बड़बड़ाया ।

'चलो आगे ?' वह इन्हें हुक्म देने लगे ।

इन के सामने एक ढलवान मैदान था जिसके बाद कुछ चट्टानें और उनके पीछे टीन का एक पुराना सा बड़ा शैड बना हुआ था, इस शैड से कुछ दूर पर एक रहट थी, लेकिन कोई जीवधारी इन्हें नजर नहीं आया ।

वह इन्हें ढकेलते हुए इस शैड के पास ले आये—

'इस को बास के पास ले जाओ, और इन तीनों को अन्दर भेजो ?' इनमें से एक ने मैनेजर की तरफ इशारा करके कहा—

'उसे बांस पर और हमें सूली पर ।' बाले ने किसी बच्चे की तरह मचल कर कहा ।

'चलो अन्दर ?'

और वह तीनों को ढकेल कर अन्दर ले गये और दरवाजा बाहर से बन्द कर दिया ।

'ये अपाहिजों की तरह हम यहां क्यों बन्द हो गये ?' राऊफ झुंझला कर बाले से बोला ।

'सबर, बाबा हराम मूंद सबर, सबर का फल मीठा होता है ।'

'यहां घास मौजूद है और अगर इन कम्बख्तों ने आग लगा दी तो ?'

'तुम तो ऐसा कह रहे हो, जैसे तुम्हारी इज्जत लूट ली हो ?'

'लाहोल विला कूवत, मुझे ऐसा मजाक प...'

'कौन है भाई ?' इन्हें एक म... तरफ आकर्षित कर लिया ।

'अरे ?' ये तो बेटे जागीरदा... चौंककर आवाज की तरफ दौड़ा, ... रस्सियों से जकड़ा हुआ घास के ढेर...

'ऐ लो, तो तुम भी आ गये सा... घूर कर देखा ।

'सेक्रेटरी, हमारा रकीब रोसिया तो हमें यहीं मिल गया, गला घोंट कर मार डालो इसे ।'

'हां हां, मार डालो ? शौकत बड़बड़ाया—'वह जो कहा है किसी शायर ने कि···।'

'जो आपी मर रया हो उसको अगर मारा तो क्या मारा ?'

'सेक्रेटरी, हमें इस भैंसे पर रहम आ गया ।'

'तुम खुद मियां खां यूअर हाईनैस, मेरे हाथ पैर बंधे हैं इसलिए मिजाख उड़ा रये हो ।'

'ये साब तुम्हारी शरारत है ।'

'हां जाओ···है···तुम क्या कर लोगे मियां खां ?'

'मियां खान ?' शौकत चौंका ? 'तुम कौन हो मियां खां ?'

'मियां खां, हम मियां खां हैं ?'

'ए, तो तुम प्रिंस मरिस नईं हो, मैं तो पहले खटका था, कि चार सौ बीस हैं कोई ।'

'हमें समय नष्ट न करना चाहिए ।' इन फजूल बातों में ।' राऊफ उकता कर बाले से बोला—

'खान साहब गाफिल नहीं है, हमारी गिरफ्तारी वास्तव में खुद इन गधों को मौत का रास्ता दिखा रही है ।'

'यहां पर बन्द हो जाने से क्या हो जायेगा ?'

'खान साहब का ख्याल है, कि इस रहस्यमय गिरोह का लीडर अभी तक ना मालूम है । वैसे बाकी लोग तो सामने हैं और उन्हें पकड़ लेने से कोई फायदा न होगा ?'

'लेकिन हमें अगर यहीं समाप्त कर दिया गया तो ।'

'हम मोम के पुतले नहीं, मेरी जेब में ग्रेनेड मौजूद हैं, इस शैड का एक कोना उड़ा कर हम आराम से बाहर निकल सकते हैं ।' लेकिन फिलहाल आराम फरमाने का ही विचार है ।'

'अरे तो तुम क्या बाले भाई हो ?' शौकत ने हैरत से आंखें फाड़ कर बाले को घूरा ।

'और नहीं तो क्या अपनी वलदियत नजर आ रही थी तुम्हें ।'

'तुम्हारी खुद, यानी के वलदियत मलदियत, पहले मुझे खोल तो दो ?'

'नहीं तुम्हारा तो अचार डालेंगे हम ।'

'मिजाख मत करो मियां खां, आज जमानत नही भरी तो ठेका खलास ।'

'अच्छा तो यह बात है ।' बाले ने चौंक कर कहा ।

'क्या ?' राऊफ उसकी शक्ल देखने लगा ।

'हम लोगों को सिर्फ इस समय तक के लिए रोका गया है ।'

'किस समय तक के लिये ।'

'शौकत तुम्हारे ठेके के समाप्त हो जाने का आखिरी समय क्या है ?'

'आज शाम को साढ़े सात बजे तक, और इसके बाद ही दूसरे को दे दिया जायेगा ।' शौकत ने बताया–

'खैर, खोल दो, इस गधे को भी क्या याद करेगा ।' बाले ने शौकत की तरफ इशारा करके राऊफ से कहा–

'गधा-मधा मत बताओ मियां खाँ, मैं पहले ही बहुत गमगीन हूँ ।' राऊफ ने शौकत को खोल दिया ।

'हमें शाम तक आजाद कर दिया जायेगा रफू भाई ।'

'लेकिन मैनेजर को कहाँ ले जाया गया ?'

'सूली देने, तुम्हें क्या ?'

'सुब्हान अल्ला, क्या सुराग रसानी है, बयाइयों के लल्ला की तरह जहां रख दिया पड़े हुए हैं जहां बिठा दिया, बैठे हैं ?'

'रफू भाई, खान साहब की आरजू यही है, कि भाई सुखट का बेड़ा गर्क हो जाने दो ।' बाले ने कहा ।

'कायें को ।'

'आर्डर, ओ, आर्डर, खान साहब चाहते हैं कि तुम्हारा ठेका कैंसल होकर दूसरे को मिल जाये ।'

'ठोंको मत मियाँ खां, खान साहब मेरा बुरा कभी नई चायंगे ?' शौकत बोल पड़ा ।

'खुद देख लेना ?' बाले ने लापरवाही से कहा–

'लेकिन हम यहां फजूल क्यों बन्द रहें ।'

'ताकी इन लोगों को विश्वास हो जाये कि उन के प्रबन्ध इच्छानुसार पूर्ण हैं ।'

'क्या वैसे नहीं मालूम हो सकता कि ठेके का दूसरा उमीदवार कौन है ?'

'रफू भाई, ऐसी अकलमन्दी की बातें भाई शौकत जैसे आदमियों के सामने न किया करो ।'

'मिजाख मत उड़ाओ ?'

'इस मामले में हकूमत के कानून बहुत सख्त हैं और पुलिस क्या, स्वयं मिनिस्ट्री के किसी अधिकारी को यह पूछने का हक नहीं है ।' बाले ने बताया ।

'तो इसका मतलब साढ़े पांच बजे तक यहां आराम फर-माना जरूरी है।

'यकीनन ?'

'और इसके बाद ?'

'इसके बाद सुखट भाई की अर्थी उठा कर राम नाम सत-राम नाम सत।'

'इंशा अल्ला अर्थी तुम्हारी खुद उठेगी देख लेना, साले काली जुबान।' शौकत ने बुरा मान कर कहा।

फोन पर आवाजें

खान चार बजे शाम को सैन्ट्रल पुलिस स्टेशन वापिस आया एस० पी० वहाब आफिस में मौजूद था।

'मुझे पुलिस एक्सचेन्ज से एक डिकशन लाईन चाहिए।' खान ने एस० पी० वहाब से फरमायश की।

'मैं समझा नहीं।'

'एक इन्ट्रकनैकशन ताकि मैं सैन्ट्रल पुलिस स्टेशन के तमाम टैलीफूनों के द्वारा होने वाली बात चीत सुन सकूं।'

'ये तो पांच मिनट का काम है।' एस० पी० वहाब ने कहा, और तुरन्त ही इस कार्य के इन्चार्ज को बुला कर इसके लिये हिदायत कर दी।

'लेकिन बेहतर होगा, कि खुद एक्सचेन्ज वाले को भी इसका ज्ञान न हो।' खान ने उससे कहा।

'बेहतर है।' वह यह कह कर चला गया।

दस मिनट के अन्दर पुलिस एक्सचेन्ज से एक इन्ट्रक-नैकशन कायम कर दिया गया और खान एस० पी० के आफिस के पिछले कमरे में कानों पर कलैम्प चढ़ा कर बैठ गया।

उसे इस हालत में पांच बजे तक बैठना पड़ा। इस समय सैन्ट्रल पुलिस स्टेशन में जितने फोन प्राप्त हुए या यहां से किये गये वह सब ही उसके लिए व्यर्थ थे। लेकिन पांच बज कर दस मिनट पर सैन्ट्रल पुलिस स्टेशन से एक काल किया गया, कोई दूसरी तरफ वाले आदमी को पुकार रहा था। खान ने इधर से जुड़ा टेप रिकार्ड आन कर दिया।

'हैलो मूर्ती-मूर्ती।'

'यस सर।' दूसरी तरफ से उत्तर मिला।

'क्या हुआ।'

'सब ठीक है कोई नहीं आया।'

'सिर्फ दस मिनट बाकी हैं।'

'सब प्रबन्ध है ?'

फोन का सिलसिला बन्द हो गया, खान ने टेप को रिवर्स करके सुना, आवाज भी साफ भरी जा चुकी थी।

ठीक पांच बज कर पच्चीस मिनट पर दोबारा काल हुआ और अब की बार दूसरी तरफ से फिर उत्साह भरे स्वर में कहा गया।

'सिर्फ पांच मिनट बाकी हैं।' कोई नहीं आया।

ये आवाजें भी रिकार्ड कर ली गईं और अभी पांच बज कर ३५ मिनट ही हुए थे कि अब की बार दूसरी तरफ से एक काल प्राप्त हुआ।

'साहब मूर्ती बोलता है।'

'यस, क्या हुआ ?'

'साहब, काम हो गया।'

'शाबाश, अब तुम वापिस जाओ, मैं जा रहा हूँ।' खान इस वार्तालाप की रिकार्ड हुई टेप रील को जेब में डालता

हुआ कमरे से बाहर निकल आया। लेकिन उसी समय एस० पी० वहाब भी वहां आ पहुँचे।

'कहां चले आप ?'

'बस यही मौका है जल्दी चलिए।'

'कहां।'

'मैं चल तो रहा हूँ, लेकिन प्रबन्ध पूर्ण हैं न ?'

'जी हां, डैवी शराब खाना पर खुफिया पहरा कायम किया जा चुका है।'

'तो फिर आ जाइये।'

बाहर आते ही खान ने एक सिपाही से इन्सपैक्टर मित्रा को बुलाने को कहा, लेकिन उसने बताया कि वह अभी-अभी कहीं गए हैं।

आगे आगे एस० पी० वहाब की कार और उसके पीछे मोटर साईकलों पर चार सब इन्सपैक्टर और एक ट्रक में दस सिपाही पुलिस के चौंका देने वाले सायरनों से रास्ता साफ करते हुए अपनी मंजिल की तरफ रवाना हो गये।

● ●

डैवी का शराब खाना शहर के बदनाम इलाके में स्थित था। इसके दो भाग थे। सामने के भाग में शराब खाना था और पिछाड़ी भाग में खुफिया जुआ खाना। लेकिन शराब इस सूबे में मना न थी और जूए का सुराग पुलिस कभी लगा न सकी थी।

शराब खाने के पिछाड़ी भाग तक वीरान गली थी। जिसमें हर समय सन्नाटा रहता था। सिर्फ डैवी के आदमी ही उस रास्ते से निकल सकते थे।

ठीक छः बजे वही काले रंग की कार जिसकी खिड़कियों पर काले शीशे चढ़े हुए थे। उसके पिछाड़ी दरवाजे पर आ कर रुकी।

शराब खाने का पिछला दरवाजा आप से आप खुल गया। कार से उतरने वाले वही तीन आदमी थे जो बाले, राऊफ और शौकत को साथ लेकर आए थे। पिस्तौलों के निशाने पर इन तीनों को नीचे उतारा गया और कार फौरन आगे निकल गई।

'चलो अन्दर चलो।' उनमें से एक ने पिस्तौल का रुख बाले के सीने की तरफ करके घुड़कने वाले अन्दाज में कहा।

'चलो भाई! बकरे की मां कब तक खैर मनाएगी।' बाले यह कहता हुआ अन्दर दाखिल हो गया और राऊफ और शौकत को भी उसकी पैरवी करनी पड़ी।

अन्दर इन्हें बदबू दार तंग गली से गुजरना पड़ा। इसके बाद वह एक ऐसे कमरे में दाखिल हुए जहां शराब के बैरल रखे हुए थे।

'लाहौर वला कुवत! क्या जहन्नुम है साला।' शौकत नाक बंद करके बड़बड़ाया।

'सीधे चलो।' एक आदमी ने शौकत को आगे धकेलते हुए कहा।

'अबे तो चल तो रये है, धक्का काय को देते हो।'

विभिन्न कमरों से गुजरते हुए वह एक भूमिगत कमरे में आ पहुँचे। यहां इन्हें अन्दर धकेल दिया गया। अन्दर जिस आदमी पर बाले की सबसे पहली नजर पड़ी वह विक्टर था। इस समय उसका चेहरा बड़ा क्रूर नजर आ रहा था। वह शराब के नशे में बदमस्त नजर आ रहा था। यहां उसके सामने

तीन खूंखार किस्म के लम्बे तगड़े बिगड़ी हुई शक्लों वाले आदमी उपस्थित थे। पास ही एक तिपाई पर फोन पड़ा हुआ था।

'इन कुत्तों को सामने खड़ा करो।' उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया। फालिन तुरन्त किया गया और वह सामने एक कतार में खड़े कर दिये गए।

'बाले भाई ! तुमारी वह क्या हुई। यानि के जवान मर्दी।' शौकत ने बाले को ताना दिया।

'मैंने अभी नकसोल की गोलियां नहीं खाईं हैं।' बाले ने उत्तर दिया।

'क्यों बेटा सार्जेन्ट ! विक्टर को बेवकूफ बनाने चले थे।' विक्टर उठकर बाले के करीब आया।

'बने बनाए को कौन बनाएगा।' बाले ने उत्तर दिया।

'चुप रहो बे।' विक्टर के आदमियों में से एक दहाड़ा।

'बक लेने दो सालों को।' विक्टर झूमकर बोला। 'थोड़ी देर के तो मेहमान हैं।' विक्टर ने उसे आगे बढ़ने से रोक दिया।

हां तो बेटा बाला बख्ता मैं तुमसे नैना का बदला लूंगा। तुम्हारी बोटियां नोचूंगा।' विक्टर बाले का आंखों के सामने उंगली नचाकर बोला—'क्या तुम्हें मालूम नहीं कि विक्टर के इशारे पर तुम जैसे छत्तीस के सिर कट सकते हैं।'

'मालूम था जब ही तो तुम्हारी हजामत का शौक चढ़ आया।'

'चुप राओ।' विक्टर बिगड़ गया।

'लेकिन फोन की बजती हुई घंटी ने उसका ध्यान अपनी तरफ फेर लिया। रसीवर उठाकर बोला।

'कौन हाय।' मगर फिर स्वयं ही उसका लहजा नर्म पड़ गया। 'यस बास' उसने कहा—'क्या अभी, हाँ हां क्यों नहीं। मैं अभी सालों को खत्म कराये देता हूँ। बस दो मिनट में। लाशें ? ओह इनकी परवाह नहीं। अपना तहखाना ही काफी है।' फिर उसने फोन रख दिया और घूमकर बाले और शौकत और राऊफ को खूंखार नजरों से घूरने लगा।

'ले जाओ, इन्हें खत्म करके इनकी लाशें तहखाने में डाल दो।' उसने अपने आदमियों को हुक्म दिया।

'चलो बे।' उनमें से एक बाले की तरफ बढ़ा।

'तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ जलाद साहिब, मुझे क्षमा कर दो। मैं फिर कभी चम्बल गढ़ नहीं आऊंगा।' बाले उसके सामने घिघियाने लगा।

'चलो बे। आई मौत टला नहीं करती।' उसने यह कहकर बाले की गर्दन पर हाथ डाला। मगर···दूसरे क्षण ही वह 'ओ' की आवाज निकालता हुआ पेट पकड़ कर वहीं बैठ गया। बाले की लात उसकी ठोड़ी पर लगी थी और वह वहीं ढेर हो गया। लेकिन बाले और राऊफ ने ऐसे कईं मार्के देखे हुए थे। उन्होंने विक्टर के आदमियों के छक्के छुड़ा दिये और ठीक उसी समय जब बाले जेब से पिस्तौल निकालने जा रहा था, एक सनसनाती हुई गोली उसके हाथ पर पड़ी और विक्टर का कहकहा गूंज उठा।

'खबरदार···सीधे खड़े हो जाओ।' वह गरज कर बोला।

बाले को विश्वास था कि खान यहीं कहीं आसपास मौजूद होगा, लेकिन इतनी देर की जद्दोजहद के बाद भी जब कोई न आया तो हालात की नजाकत का अहसास किये बगैर न रह सका। उसने हाथ ऊपर उठा दिये।

'सबसे पहले तुम लो बेटा सार्जेन्ट।' यह कह कर विक्टर ट्राइगर पर उंगली दबाना ही चाहता था कि अचानक दरवाजे की तरफ से एक फायर हुआ और विक्टर का हाथ झूल गया।

'खबरदार, भागने की कोशिश न करना।' एक कड़कती आवाज सुनाई दी। बाले ने घूमकर देखा। दरवाजे में सब इन्स-पेक्टर मित्रा खड़ा था।

'ओह तुम!' विक्टर दांत पीसने लगा।

'आखिर आ गये न छुरी के नीचे बेटे।' मित्रा यह कहता हुआ आगे बढ़ ही रहा था कि विक्टर के एक आदमी ने अपना पिस्तौल उसकी तरफ उछाल दिया। विक्टर बायें हाथ का भी निशानेबाज था। उसने रिवाल्वर लेते ही इन्सपेक्टर मित्रा पर गोली चला दी। लेकिन वह उससे बच गया और ठीक उसी समय दरवाजे की तरफ से एक सनसनाती हुई गोली विक्टर के सीने पर पड़ी। और फिर दूसरी। विक्टर ने दरवाजे की तरफ देखा। उसके मुंह से सिर्फ दो ही मद्धिम से शब्द निकल सके।

'ओह...वा...आ...आ...अ...अ...।' और वह गिरते ही ठण्डा हो गया।

'थैंक्यू सर! बड़े समय पर आये आप।' इन्सपेक्टर मित्रा ने सीनियर इन्सपेक्टर जसवन्त को अन्दर दाखिल होते देखकर करीब आते हुए कहा।

'वैल डन...वैल डन।' तीसरी आवाज भी सुनाई दी और इस बार सुपरिंटेंडेंट खान और एस० पी० वहाब दोनों साथ-साथ अन्दर दाखिल हुए। सीनियर इन्सपेक्टर एस० पी० को सैलूट देने लगा।

'बहुत शानदार। सीनियर इन्सपेक्टर जसवन्त।' खान ने

उसे मुबारकबाद देते हुए हाथ आगे बढ़ाया। इन्सपेक्टर जसवन्त भी मुस्कराता हुआ हाथ मिलाने के लिए आगे बढ़ा ही था कि खान का दूसरा हाथ भी जेब से निकल आया और सीनियर इन्सपेक्टर इस समय चौंका जब उसे हथकड़ी के खटकने की आवाज आई।

तकरीबन सब ही आश्चर्य से उछल पड़े जब उन्होंने अभी-अभी मोरचे खत्म करने वाले सीनियर इन्सक्पेटर जसवन्त के हाथों में हथकड़ियाँ देखीं। बाले तो खान को घूर घूर कर देखने लगा कि कहीं वह नकली तो नहीं है।

'नहीं, मैं असली हूँ बेटे।' खान हंस पड़ा। एस० पी० वहाब इस तरह आश्चर्य में डूबे कि कुछ देर तक तो आवाज ही न निकली।

'क्या मतलब है इस हरकत का?' इन्सपेक्टर जसवन्त खान पर गुर्राया।

'मतलब भी साफ हो जायेगा। विक्टर के बास तुम मुझे अपनी तरह अनाड़ी समझते थे क्या?' खान ने उसे धकेलते हुए कहा।

'सर! यह हमारे पुलिस विभाग की इन्सल्ट कर रहे हैं।' सीनियर इन्सपेक्टर जसवन्त ने एस० पी० वहाब को क्रोध दिलाना चाहा।

'खान साहब पर मुझको तुमसे ज्यादा भरोसा है।' एस० पी० वहाब ने उसे डांटते हुए उत्तर दिया।

'लेकिन मेरी गिरफ्तारी किसके आदेश से की गई है।'

'इन्सपेक्टर जनरल के आदेश से।' खान ने जेब से एक कागज निकाल कर उसे दिखाते हुए कहा।

'बाकी लोग गिरफ्तार हुए ?' खान ने बाहर आकर एस० पी० से पूछा ।

'किसी बदमाश को भागने का मौका नहीं मिला । यह तो बहुत बड़ा जुआखाना भी था ।' एस० पी० ने बताया ।

'मुझे उसी दिन मालूम हो गया था जब नैना बाल्टर का खून हुआ था ।' यह कहता हुआ खान इन्सपेक्टर मित्रा की तरफ घूम पड़ा ।

'मिस्टर मित्रा ! आपने सचमुच काफी मेहनत की है । आपको शाबाशी मिलनी चाहिए ।' इसने मित्रा की पीठ ठोंकी । मित्रा ने मुस्कराते हुए गर्दन झुका ली ।

'आश्चर्य है, मैं तो समझ रहा था आप मिस्टर मित्रा पर ही शक कर रहे हैं ।' एस० पी० ने कहा ।

'वह नैना के कत्ल का आरोप जिस बिचारे पर लगा था उस पर गोली मिस्टर मित्रा ने ही चलायी थी । सिर्फ इसी कारण से शक मुझे भी हुआ था । लेकिन जब नैना के पोस्ट मार्टम से यह मालूम हुआ कि उसे हलाक करने वाली गोली उस पिस्तौल की न थी जो भूषण की जेब से प्राप्त हुआ था तो मुझे सोचना पड़ा कि इन्सपेक्टर मित्रा एक समय दो काम नहीं कर सकते । वह दो जगह उपस्थित नहीं हो सकते । सम्भव है मैं उस समय अपराधी कोई बाहर का आदमी समझता लेकिन जो गोली नैना के शरीर से निकली वह यहां की पुलिस को दिये जाने वाले रिवाल्वर में आमतौर पर प्रयोग होती है और दूसरी विशेष बात यह थी कि नैना और भूषण पर किये जाने वाले फायरों की आवाज मेरे कानों ने एक साथ सुनी थीं । जिनसे प्रकट होता था कि या तो दोनों फायर एक ही पिस्तौल से किये गए हैं ता एक जैसे पिस्तौलों से । और फिर सेन्ट्रल पुलिस स्टेशन में इस तरह किसी का खून कर देना बाहर के आदमी का काम नहीं हो सकता वहाब साहब ।' खान ने बताया ।

बातचीत में ही सारा रास्ता कट गया । पुलिस स्टेशन पहुँच कर सीनियर इन्सपेक्टर जसवन्त को लाक अप में डाल दिया गया । सारा स्टाफ इस इक्दाम पर हैरान था और सब यह जानना चाहते थे कि मामला क्या है । इन्सपेक्टर जसवन्त बेतहाशा गालियां बक रहा था ।

जब एस० पी० वहाब और खान आफिस में प्रविष्ट हुए तो खान को चपरासी ने खबर दी कि दो आदमी जिन्हें आपने गिरफ्तार कराया है बास वाले रूम में एक साहब और प्रतीक्षा कर रहे थे आपकी । खान ने उन तीनों को अन्दर बुला लिया । गिरफ्तार शुदा आदमियों के सामने सीनियर इन्सपेक्टर को फिर हवालात से आफिस में तलब किया । लेकिन अन्दर कदम रखते हुए जैसे ही उसकी नजर उन गिरफ्तार शुदा आदमियों पर पड़ी । उसका रंग जर्द हो गया और यही हाल उन दोनों का हुआ ।

'खान साहब अब मुझसे सबर नहीं होता । आपको सब कुछ बताना ही होगा ।

'कोई खास बात नहीं आप रिपोर्ट लिखिये ।' खान ने कहना शुरू किया ।

'वास्तव में तीन शरीफ गुण्डों पर संगठित एक गिरोह शौकत के हाथ से पैंतीस लाख का ठेका छीनना चाहता था जो खुशकिस्मती से शौकत को मिल गया था । कमबख्तों ने अनाड़ियों की तरह अपनी तमाम साजिशों का शिकार सीधे शौकत ही को बनाया वरना शायद मेरा ध्यान भी इस तरफ न जाता । बहरहाल ट्रेन में जो एक्साईज इन्सपेक्टर और दो सिपाही शौकत की तलाशी लेने आये थे । वह आपका हवलदार राममूर्ति और

विक्टर के दो आदमी थे। फिर स्टेशन पर शौकत के हाथ से सूटकेस बदल डालने वाला विक्टर का खतरनाक गिरोह था। उद्देश्य यह था कि तीन लाख की रकम भी हाथ आयेगी और शौकत के अग्रिम राशि न भर सकने पर उसका टैन्डर अस्वीकार हो जायेगा। मगर ऐसा नहीं हुआ। शौकत के पास काफी धन है और वह जिद्दी आदमी भी है। उसने तुरन्त ही और धन बैंक से यहां ट्रांस्फर करा लिया। तब उसे नैना वाल्टर के द्वारा जो वास्तव में विक्टर की महबूबा या रखेल थी, फांसने की कोशिश की गई और नैना वाल्टर खुद भी शौकत और प्रिन्स के बीच लटक गई। वह लालची स्त्री थी। यह फैसला न कर सकी कि किसके पास अधिक धन होगा। काम न बनते देख कर यह निश्चय किया गया कि एक तीर से दो शिकार किये जायें। एक तो यह कि जोहरा को समाप्त करके शौकत को पुलिस के हाथों पहुँचा दिया जाय, दूसरे इस तरह प्रिन्स का ध्यान भी जोहरा से हट जायेगा और नैना वाल्टर उस पर हाथ साफ कर सकेगी। जोहरा के कत्ल का काम विक्टर ने खुद अन्जाम किया। उसमें होटल का मैनेजर भी उसका बिश्वासपात्र था। क्योंकि उसने मुझे यही रिपोर्ट दी थी कि कोई होटल में रात को आया न गया। हालांकि होटल का एक बैरा जो विक्टर को रात के ग्यारह बजे नैना के पास आते देख चुका था। मुझसे न छिपा सका। बहरहाल मेरी मदाखलत से प्लान उलटा हो गया और खुद नैना वाल्टर फंस गई। ठीक उसी समय जब मैं एक फोटो स्टूडियो से विक्टर की तस्वीर के साथ एक मामूली फिल्म एक्ट्रेस की तस्वीर ट्रिक फोटो के द्वारा बनवा कर नैना को विक्टर के खिलाफ बदगुमान करने के बाद उससे विक्टर का पता और साजिश का भेद पूछ रहा था, किसी ने उस पर हवालात में गोली चला दी। मेरा मतलब है मिस्टर

जसवन्त ने। यह उस घटना के समय पेशाब खाने गए हुए थे और देर बाद वहां से निकले।' खान ने बताया।

'और पेशाब खाना हवालात की पिछाड़ी पर है।' एस० पी० वहाब बोल पड़े।

'जी, लेकिन मैंने प्रकट में कोई महत्व ही न दिया। इन्सपेक्टर मित्रा को शुबह की नजरों से देखने लगा जिससे यह बिल्कुल बे फिकर हो गए। लेकिन उस रात आपके आफिस में यह बाले और राऊफ की बातचीत शायद बाहर से छिप कर सुन चुके थे। इसलिए दूसरे दिन उन्होंने मैनेजर को इनके असली व्यक्तित्व से परिचित कराके हिदायत की कि वह उन्हें सैर के बहाने शहर से बाहर ले जाए जहाँ विक्टर के आदमी कार लिए पहले से तैयार थे।'

बहरहाल बाले और राऊफ को वहीं कैद किया गया जहां शौकत को हवालात से आजाद हो जाने के बाद पहुँचा दिया गया था। आपके दिए हुये मेरे आदमी मुझे जरा-जरा सी रिपोर्ट दे रहे थे। मगर मैं समझ रहा था कि कोई उनका भी बास है जो उस समय प्रकट होगा जब शौकत को मिला हुआ ठेका अस्वीकार होगा। टेन्डर लिस्ट पर दूसरे आदमी को ट्रांसफर होगा। मैं उस समय प्रतीक्षा करने लगा। फिर मैंने यहां के एक्सचेंज से इन्टरलाक लेकर तमाम बातचीत रिकार्ड कर ली है जो चार बजे से साढ़े पांच बजे के दर्मयान मूर्ति और मिस्टर जसवन्त के बीच फोन पर हुई है। मूर्ति को खुद उसने ही इन्सपेक्टर मित्रा के स्टाफ में रखा था। लेकिन मैंने यह भी देख लिया था कि मिस्टर मित्रा का आधीन होते हुए भी वह मिस्टर जसवन्त के बहुत निकट है। बहरहाल मेरी आशा के अनुसार ठीक पांच बज कर चालीस मिनट पर इन्सपेक्टर मित्रा पुलिस स्टेशन से निकले। मुझे मालूम है कि मित्रा को भी सीनियर इन्सपेक्टर जसवन्त पर कुछ शक हो गया था। लेकिन आधीन होने के कारण वह बहुत डर-डर कर काम कर रहे थे।

उन्होंने बहरहाल मूर्ति का पीछा करके बहुत सी सूचनायें प्राप्त कर ली थीं और उस दिन उन्होंने अपने तौर पर एक्सचेंज के मेन लाईन से इन्टरकनैक्शन अपने आफिस में ले लिया होगा।

'जी हां, यह ठीक है।' इन्सपेक्टर मित्रा जल्दी से बोल उठा। इसकी आवाज खुशी से काँप रही थी। उसने यकीनन एक बहुत महत्वपूर्ण केस हल करने में महत्वपूर्ण रोल अदा किया था।

'बहरहाल।' खान ने उसकी तरफ मुस्करा कर देखते हुए बयान जारी रखा—'यह भी अच्छा ही हुआ कि पहले मिस्टर मित्रा चले और इस तरह हमें मिस्टर जसवन्त को डाज देने का एक और अवसर मिल गया। हम मित्रा का पीछा करते रहे और यह हमारा और एक जगह शार्टकट से हम से आगे निकल गए और आगे जो कुछ हुआ वह आपको मालूम ही है।'

'वास्तव में संगम का मालिक यह बैठा है।' खान ने गिरफ्तार शुदा लोगों में से एक अधेड़ मोटे आदमी की तरफ इशारा किया। मैनेजर बेचारा इस खतरनाक गिरोह का आलाकार बन गया था। लेकिन तमाम काम इच्छानुसार होने के बाद जब ठेका शौकत के हाथ से निकाल लेने में जसवन्त सफल हो गया तो उसने बड़ी चालाकी से अपने तमाम विश्वास-पात्रों को समाप्त करने के प्रोग्राम को तुरन्त व्यवहारिक रूप देना चाहा। ताकि किसी की नियत बदल न जाए। यह बात मुझे मैनेजर के कत्ल से मालूम होती है। उस बेचारे की लाश कल तक उस फिजाकाती गढ़े में मिलेगी जो इस स्थान से करीब है जहां बाले और राऊफ को कैद किया गया था। इनके पीछे लगा हुआ मेरा आदमी अकेला था इसलिए उसे बचा लेने की कोई फोरी सूरत न कर सका और मुझे सूचना बाद में मिली।

बहरहाल यह घटना साढ़े तीन बजे दिन को हुई और खबर

मिलते ही मैं यहां चला आया। यहां मैंने इसलिए फोन की रिकार्डिंग का प्रबन्ध किया कि आखिरी तौर पर सबूत भी एकत्र कर लूं। और यह तो मैं समझ ही चुका था कि ठेका मिलने की सूचना मिलते ही यह दूसरे भेदियों को समाप्त कर देने की कोशिश करेगा। जिसका बेहतरीन तरीका उसने सोच रखा था। यानि विक्टर से बाले, राऊफ और शौकत को समाप्त करा दे और खुद पुलिस अफसर की हैसियत से पहुँच कर विक्टर को गोली मार दे। शोहरत भी, नेमनामी भी और धन भी। लेकिन अव्वल तो मेरे असिस्टैंट कोई मोम के पुतले नहीं। दूसरे इन्सपेक्टर मित्रा के पहुँच जाने से काम बिगड़ गया। विक्टर इनको समाप्त न सका। और विक्टर के गिरफ्तार होने के डर से जसवन्त ने उसे उसी समय पिस्तौल की गोली से खतम कर दिया। यह है खतरनाक दिमाग की फ्रेम की हुई साजिश।'

खान के इस बयान पर सब दम रोके बैठे रहे। इसने पूरे केस का बखिया उधेड़ कर रख दिया था। और उनमें से हर एक अपने-अपने दिल में इस मशहूर और मुमताज सुरागसां की बेमिसाल काबलियत की प्रशंसा कर रहा था।

'मगर एक सरकारी अफसर की हैसियत से ठेका इसे मिल कैसे सकता था।' एस० पी० ने जसवन्त की तरफ देख कर कहा।

'इतना चालाक आदमी ऐसी हिमाकत नहीं कर सकता। इसमें वास्तव में संगम के मालिक मायादास और जसवन्त का साला दत्ताराम है। लेकिन मायादास इसमें सिर्फ एक चौथाई का भागीदार है। वैसे फर्म इसी के नाम पर है।'

'बाद में इसका भी यकीनन विक्टर जैसा हाल होता।' एस० पी० ने मायादास को दयनीय नजरों से देखते हुए कहा।

'यह तीसरे साहब जो बैठे हैं ये वकील साहब हैं। जिन्होंने

इस समझौते का विषय तैयार किया था। बहरहाल यह रहा केस। ब्लड टैस्ट वगैरह के प्रूफ, नैना वाल्टर का बयान भूषण के घर के लोगों और पड़ोसियों का बयान और इन सब के अतिरिक्त मिस्टर जसवन्त और मूर्ति की फोन पर रिकार्ड की हुई बातचीत। ये सारे सबूत भी मौजूद हैं। अपना केस बना लीजिए, बन्दा तो चला। चलो भाई बाले, राऊफ, शौकत।' खान ने उठते हुए कहा।

'इतनी जल्दी तो न जाने दूंगा आप को।' एस० पी० ने उसका हाथ थाम लिया।

'मेरे सिर पर इतनी जिम्मेदारियां हैं कि यह एक सप्ताह मैंने बड़ी कठिनाई से गुजारा हैं। वैसे जिन्दा रहे तो फिर कभी न कभी मुलाकात होगी ही।' खान ने गर्म जोशी से उससे हाथ मिलाते हुए कहा।

'यह सब बकवास है। मेरे विरुद्ध कोई सबूत नहीं।' खान को जाता हुआ देख कर जसवन्त आंखें फाड़ कर चीखा।

'और हां।' खान ने इसकी तरफ ध्यान न देते हुए एस० पी० से कहा 'भूषण भी सिविल हास्पिटल के तेरह नम्बर प्राइवेट वार्ड में नसीर के नाम से मौजूद है। डाक्टरों के परिश्रम ने उसे मरने से बचा लिया था। लेकिन मैंने इन्हें धोखा देने के लिए उसकी मौत प्रसिद्ध करा दी थी। विक्टर ने मिस्टर जसवन्त के सामने ही उसे सिर्फ इतना काम सौंपा था कि वह सेन्ट्रल पुलिस स्टेशन के हवालात की पिछली दीवार पर चढ़ जाये और जैसे ही फायरिंग की आवाज सुने सड़क पर कूद कर भाग जाए। इस काम के लिए उसे ५०० रुपए दिए गए थे। और मिस्टर जसवंत ने उसे विश्वास दिलाया था कि पुलिस उसे कुछ भी न कहेगी। मतलब आप समझ ही गए होंगे। यानि उसे नैना वाल्टर के कातिल की हैसियत से भागते हुए गोली मार दी जाये।'

खान यह कह कर पलटा। और जब वह इंसपेक्टर जसवन्त के पास से गुजरने लगा तो उसने जसवंत के मुंह पर एक जोरदार तमांचा मार दिया।

'कमीने, कानून के रक्षक होकर भी तुम्हें शर्म न आई।'

यह कह कर वह बाहर निकल गया और उसके पीछे शौकत, राऊफ और बाले भी।

लेकिन जब एक बार खान ने मुड़ कर देखा तो सुपरिन्टेन्डेन्ट वहाब बेतहाशा जसवन्त के मुंह पर तमांचे मार-मार कर चीख रहा था।

'सूअर, कमीने, तूने मेरे पूरे विभाग को बदनाम कर दिया। हरामजादे पुलिस में आने की बजाय कहीं डूब मरा होता।'

बाहर पुलिस स्टेशन के दरवाजे पर इन्सपेक्टर मित्रा खड़ा था। खान को देख कर वह और स्टाफ के सब लोग अटैंशन हो गये।

'मुबारक हो मिस्टर मित्रा। यह केस एस० पी० वहाब की जेरे निगरानी आपका ही केस है।' खान ने उसकी पीठ थपक कर कहा।

'थैंक्यू वैरी मच सर।' यह कहते हुए मित्रा की आंखों में खुशी के आँसू छलक आये।

'खां साहब। मेरे ठेके का क्या हुआ?'

'तुम्हारा ही है वह। सिर्फ दो ठेकेदार थे मुकाबले में। एक का किस्सा खतम हो गया। और दूसरे हैं।' खान वाक्य पूरा न कर सका कि बाले बोल पड़ा-

'शौकत खियां खां खागीर खार।'

॥ समाप्त ॥

मुद्रक :-यादव प्रिंटिंग प्रेस, बाजार सीताराम, दिल्ली-६